BR>**Title:**Discussion on the motion of Confidence in the Council of Ministers, moved by Shri Atal Bihari Vajpayee, (Not concluded).

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी): अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं: 'कि यह सभा मंत्रिपरिषद में अपना विश्वास व्यक्त करती है।'

मैं प्रस्ताव के पक्ष में कुछ बोलना चाहूंगा लेकिन बोलने से पहले मैं सुनना चाहूंगा। प्रतिपक्ष क्या चाहता है, प्रतिपक्ष मेरी सरकार को हटाना चाहता है, यह तो स्पष्ट है लेकिन इसके बाद की तस्वीर स्पष्ट नहीं है और मैं चाहूंगा कि इस विवाद में यह तस्वीर स्पष्ट हो जिससे सदन फैसला कर सके, देश फैसला कर सके। वैसे अगर चाहे तो प्रतिपक्ष इस पर चुप भी रह सकता है क्योंकि अंत में तो दिग्विजय हमारी होने वाली है और उसका नक्शा प्रकट भी होने वाला है लेकिन लोक तंत्र का तकाजा है कि जो सरकार को हटाना चाहते हैं, वे यह बताएं कि वे किस तरह की सरकार लाना चाहते हैं। उसका नेतृत्व कौन करेगा, उसका कार्यक्रम क्या होगा और मैं इसीलिए प्रतिपक्ष को मौका दे रहा हूं कि वह बोले और फिर मैं अंत में विस्तार से जवाब दूंगा।

(इति)

MR. SPEAKER: Motion moved:
"That this House expresses its confidence in the Council of Ministers."

११०५ बजे

श्री शरद पवार (बारामती) : अध्यक्ष जी, सदन के सामने जो प्रस्ताव सदन के नेता जी ने प्रस्तुत किया है

... (व्यवधान)

श्री चमन लाल गुप्त (ऊधमपुर): विपक्ष के नेता खड़े हुए और किसी ने ताली नहीं बजाई।

... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल): हम किराए के बजन्तरी नहीं हैं, चापलूस नहीं है।

... (व्यवधान)

श्री शरद पवार (बारामती) : मैं उसका विरोध करने के लिए खड़ा हुआ हूं। विरोध के साथ-साथ मैं देशवासियों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि जब हम इस प्र स्ताव का विरोध करते हैं, तो विरोध के साथ किस तरह से विकल्प दे सकते हैं, इस बारे में हमारे मन में बिल्कुल साफ राय है। जो हमारे साथी इस काम के लिए हमें सहयोग देने वाले हैं, सभी ने मिलकर इस पर बात की है और जैसा कि लालू प्रसाद यादव जी ने कहा

... (व्यवधान)

देश के ऊपर जो सरकार का बोझ हुआ है, वह सम्प्रदायिक सरकार जाने के बाद हम पांच मिनट में बैठकर इसका रास्ता निकालेंगे और देश के सामने एक विकल प देंगे।

... (व्यवधान)

यह विश्वास प्रस्ताव की नौबत आई कैसे?

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Please do not disturb him.
... (Interruptions)

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : हम लोगों ने जो कहा है, पांच मिनट तो पांच मिनट, एक मिनट में हम लोग चित करते हैं।

... (व्यवधान)

श्री शरद पवार (बारामती) : महोदय, सदन में श्रीकृष्ण जी की वाणी यहां हुई है, इसलिए मुझे ज्यादा कहने की आवश्यकता नहीं है। एक बात हम सभी साथियों को माननी चाहिए कि सभी साथियों को, तेरह महीने पहले चुनाव का निर्णय भारत की जनता ने देशवासियों के सामने रखा था, किसी भी पोलिटिकल पार्टी को स्पष्ट बहुमत इस देश की जनता ने नहीं दिया। वोटिंग पैट्रन किसी को नहीं दिया था। प्रधान मंत्री जिस पोलिटिकल पार्टी से हैं, उनको २५-२५.५ परसेंट से ज्यादा वोट नहीं मिले। उनके समर्थन देने वाले जो बाकी साथी हैं, उन सभी के वोट देखने के बाद भी कोई स्पष्ट मैनडेट इस देश की जनता ने नहीं दिया था। मगर इसके साथ-साथ मैं यह भी मानने के लिए तैयार हूं कि हम लोगों को भी मैनडेट नहीं दिया था। इसलिए जब सरकार बनाने की बात आई, तो एक साझा सरकार हो सकती थी और सरकार बनाने के लिए सहयोगी पार्टियां आगे आयेंगी, उनकी मदद से सरकार बन सकती थी। यह महत्वपूर्ण मुद्दा इस सरकार के बीच में था। आदरअणीय महामहिम राष्ट्रपति जी ने भी उस समय प्रधान मंत्री जी को प्रधान मंत्र पद की शपथ देने की तैयारी रखी, तब उनका पूरा ध्यान नम्बर पर था। जयललिता जी का समर्थन का लैटर दो दिन डिले मिल गया

... (व्यवधान)

इसलिए प्रधान मंत्री को शपथ देने के लिए राष्ट्रपति जी ने तैयारी नहीं रखी। चेन्नई से खत कब आता है, इसकी राहत देखनी पड़ और चेन्नई से खत आने के बाद ही उन्होंने प्रधान मंत्री जी के शपथ देने की तैयारी रखी।

इस सरकार को सुब्रहमण्यम स्वामी जी, सरदार बूटा सिंह, चौटाला जी और एआईएडीएमके, सभी का समर्थन प्राप्त था। जिस दिन इन सभी पोलिटिकल पार्टियों के नेताओं ने अपना समर्थन वापस ले लिया, उसी क्षण इन्हें सरकार चलाने का अधिकार इस देश में नहीं रहा, वह अधिकार इन्होंने खो दिया। अटल जी की राजकीय जिन्दगी पूरे देश के सामने है, उनका सार्वजनिक जीवन पूरे देशवासी जानते हैं। इन्होंने हमेशा एक मौरल बेस्ड पोलिटिक्स करने की तैयारी दिखाई। जब समर्थन वापस लेने का काम कुछ साथियों ने किया तब हमें लगता था कि वह शायद खुद राष्ट्रपति भवन जाएंगे और सदन के सामने यह नौबत नहीं लाएंगे। ठीक है, इन्होंने दूसरा रास्ता स्वीकार किया, इसकी भी परिस्थिति दो दिन में पूरे देशवासियों के सामने आने वाली है, जो काम यह कल कर सकते थे लेकिन इन्होंने नहीं किया। वह परिस्थिति शायद शनिवार को इस सदन में बहुमत देखने के बाद इनके ऊपर आएगी। देशवासी देख रहे हैं कि ऐसी परिस्थिति का सामना दूसरी बार अटल जी को करना पड़ रहा है। हम लोगों ने १३ दिन की सरकार भी देखी और अब १३ महीने में भी देख लिया है। मैं सोच रहा था,

What exactly is the achievement of this Government? What exactly has this Government done in the last twelve or thirteen months? The sole achievement of this Government is, in spite of so many contradictions, this Government has survived. I have to accept it. Apart from that, I do not find any other single contribution of this Government in the last twelve or thirteen months.

यह सरकार १३ महीने बच गई। आज पूरी दुनिया की एक अलग परिस्थिति हो गई है। आज जगह-जगह २१वीं सदी में जाने की बात हो रही है। सभी सोच रहे हैं कि इस समस्या को कैसे हल कर सकते हैं, हमारे देश में जो गरीबी एवं बेरोजगारी है, उसे दूर करने के लिए क्या उपाय कर सकते हैं, हमारी आर्थिक परिस्थिति कैसे मजबूत हो सकती है, आधुनिक विज्ञान और तंत्र को स्वीकार करके हम कैसे २१वीं सदी में जा सकते हैं, आज यह विचारधारा दुनिया में प्रस्तुत हो रही है। संपूर्ण देश को एक रख कर, इसमें शायद हम भी कुछ कर सकते थे, मगर १३ महीने के अटल जी के कारोबार को देखने के बाद देश के हर व्यक्ति के मन में यह आ रहा है कि यह कमाई देशवासियों ने की।

क्या आर्थिक परिस्थितियों के सुधार के लिए कोई खास कदम उठाए गये, मंदी के संकट से उबरने के लिए कोई मजबूत कदम उठाए गये। आर्थिक उत्पादन जो घट गया है वह और भी घट रहा है इसको दुरूस्त करने के लिए क्या कोई कदम उठाये गये, बेरोजगारी को दूर करने के लिए कोई कदम उठाए गये, पड़ोसी देशों के साथ व्यापार को सुधारने के लिए कोई कदम उठाए गये या देश के राजस्व को बढ़ाने के लिए कोई कदम उठाए गये? यह देश के अहम सवाल हैं। चाहे यूनि वर्सलाइजेशन ऑफ प्राइमरी एजूकेशन का सवाल हो या महिलाओं को समानता देने का सवाल हो, ऐसे महत्वपूर्ण सवालों पर क्या कोई कदम उठाए गये। मुझे दुख होता है कि इन सभी सवालों का जवाब 'न' है। इन १३ महीनों में इस बारे में कोई सख्त कदम उठाया गया हो, ऐसी परिस्थिति देशवासी देख नहीं रहे हैं।

भारत जैसे देश में जब हम समस्याओं पर बात करके आगे जाने की बात करते हैं, विकास की बात करते हैं, उद्योग बढ़ाने की बात करते हैं, बेरोजगारी दूर करने की बात करते हैं, देश को शक्तिशाली बनाने की बात करते हैं तो सबसे पहले हमारा फर्ज होता है कि हम अपने समाज को एक कैसे रख सकते हैं, समाज में एकता कैसे रख सकते हैं। पिछले १२-१३ महीनों में जो परिस्थतियां देशवासियों ने देखीं, खासकर छोटे वर्गों और अल्पसंख्यकों ने देखीं, वह पिछले ५० सालों में कभी नहीं देखीं थीं। इसकी एक मिसाल मैं देना चाहता हूं। ईसाइयों पर जितने हमले पिछले ५० सालों में हुए

... (व्यवधान)

उनके ५० प्रतिशत से ज्यादा हमले इन १३ महीनों में हो गये। ... (व्यवधान) यह क्या शर्मनाक बात नहीं है।

... (व्यवधान)

जो परिस्थिति हमने उड़ीसा में देखी, क्या यह प्रशंसा करने वाली परिस्थिति है। आस्ट्रेलियन मिशनरी और उनके मासूम बच्चों को वहां पर जिस तरह से जलाया गया, इससे क्या दुनिया में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ जाती है और सबसे ज्यादा गंभीर बात यह है कि जब ऐसी परिस्थिति होती हैं और उनके लिए जो शक्तियां और

संगठन जिम्मेदार होते हैं उनको समर्थन देने का काम हमारे गृह मंत्री जी करते हैं। हमारे गृह मंत्री जी ने कहा कि मैं उन संगठनों को जानता हूं और उनके द्वारा वहां कोई गुंडागर्दी या कोई क्रिमनल एक्टीविटी करने के बारे में कोई बात नहीं है। उन्होंने बिना कोई जांच कराये उनको सर्टिफिकेट दे दिया। रक्षा मंत्री जी ने इस बारे में क्या कहा। दो घंटे में उन्होंने उड़ीसा में जाकर सारी परिस्थितियां देखीं और देश को बताया कि वाजपेयी सरकार को डिस्टेबलाइज करने के लिए यह ि वदेशी साजिश है। अभी इन्वेस्टीगेशन पूरा भी नहीं हुआ था और दो घंटे में यह विदेशी साजिश हो गयी। पूरे देशवासियों को मालूम है कि इस साजिश में इस सरकार को मदद करने वाली कुछ साम्प्रदायिक शक्तियां-संगठन हैं, उन लोगों का हाथ है। इसलिए इस सरकार को रहने का कितना अधिकार है इस पर बोलने की हमें आवश्यकता है।

मैं समझता था कि ऐसी परिस्थिति में कम से कम प्रधान मंत्री जी देशवासियों को नया रास्ता दिखाएंगे। उन्होंने इस बारे में बात शुरु की और कहा कि कनवर्शन पर बहस हो जाए, धर्मान्तरण पर बहस हो जाए। इस देश में इतनी गम्भीर स्थिति पैदा हुई। पिछले ५० सालों से ईसाइयों की स्थिति हम सब देख रहे हैं। एक धर्म ऐसा है जिस की आबादी दिन-ब-दिन कम हो रही है जबकि बाकी सभी धर्मों के लोगों की आबादी बढ़ रही है और ईसाइयों की पापुलेशन कम हो रही है।

... (व्यवधान)

सब आंकड़े सरकारी हैं।

ऐसी परिस्थिति में प्रधान मंत्री ने देश के सामने कनवर्शन के इशू पर नेशनल डिबेट का विषय रखा। मैं उनकी यह बात समझ सकता था कि अगर वह कहते कि बेरोजगारी के इशू पर नेशनल डिबेट की बात हो, गांव वालों की स्थिति दुरुस्त करने के लिए कुछ सख्त कदम उठाने के लिए नेशनल डिबेट की बात हो, स्टेट और सैंट्रल फंड कैसे इस्तेमाल कर सकते हैं, सबसिडी के बारे में क्या हो सकता है। इन इशूज पर नेशनल डिबेट हो सकती थी मगर ये इशूज प्रधान मंत्री जी को महत्वपूर्ण नहीं लगे। उन्हें कनवर्शन का इशू महत्वपूर्ण लगा। उनकी देश के बारे में जो सोच है, वह सोच दिल्ली में बैठ कर पूरे देश का नक्शा मद्देनजर रखते हुए ध्यान में रखने की आवश्यकता थी लेकिन वह आवश्यकता प्रधान मंत्री जी ने नहीं दिखाई। शायद उनको नागपुर से संदेश आया था। उस संदेश का आधार लेकर उन्होंने कनवर्शन पर डिबेट करने की बात देशवासियों के सामने कही।

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज): इटली से नहीं आया था।

श्री शरद पवार (बारामती) : इसकी कोई जरूरत नहीं थी। जो परिस्थति पैदा हो रही थी और जिस तरह से सरकार चल रही थी, उनकी सरकार को समर्थन देने वाले साथियों के मन में उसको लेकर नाराजगी थी। वह नाराजगी समर्थन देने वाले साथियों तक सीमित नहीं थी बल्कि उनके मंत्रिमडल में काम करने वाले लोगों के मन में भी नाराजगी थी। मैं इसकी मिसाल मदन लाल खुराना जी का जो खत

... (व्यवधान)

अब सुषमा जी का चेहरा भी बदल गया है। उन्होंने लिखा

"I have earlier sent a letter to Shri Advaniji and stated that the Central leaders are surrounded by terrorists and power brokers which has resulted in decisions not being objective but according to the persons, place and wish."

खुरानी जी ने यह कहा। वह बेचारे तंग आ गए। उन्होंने सही कहा और इस्तीफा दे दिया। वह सदन में कुछ बोलना चाहते थे लेकिन उन्हें बोलने नहीं दिया। उनको आदेश हो गया कि इस पर नहीं बोलना है। मुझे विश्वास है कि वह आज या कल बोलेंगे और देशवासियों के सामने इस सरकार का अनुभव रखेंगे। मैं इतना कहना चाहता हूं कि समाज के छोटे वर्गों को विश्वास दिलाने में यह सरकार विफल रही। बात हमेशा हिन्दुत्व की होती है। हम लोगों ने हिन्दुत्व के बारे में बचपन से जो सीखा उसमें सहिष्णुता की बात हिन्दुत्व में ज्यादा सीखी। सहिष्णुता जो हिन्दू धर्म की एक मुख्य विचारधारा है, उस विचारधारा को

... (व्यवधान)

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : अध्यक्ष महोदय, मेरा नाम आया है, मैं स्पष्टीकरण देना चाहता हूं।

SHRI SHARAD PAWAR (BARAMATI): Sir, I have not yielded.
MR. SPEAKER: He is not yielding.

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : शरद जी, एक तो मैं यह कहना चाहता हूं कि आपने अंग्रेजी में कहा लेकिन मैं पत्र तो हिन्दी में लिखता हूं, अंग्रेजी में नहीं लिखता। जो कुछ आप कह रहे हैं, उसका वह मतलब नहीं है। इसके अलावा मैं कुछ कहने वाला नहीं।

श्री शरद पवारः मेरा आपसे सिर्फ यही अनुरोध है कि आपके मन में जो बात है, कभी तो इस सदन के सामने रखिये। जो कहना चाहते हैं, एक बार देशवासियो के सामने इस सदन के माध्यम से रखें। मुझे मालूम है आपकी पीड़ा क्या है?

श्री मदन लाल खुराना (दिल्ली सदर) : मैं अपनी बात अपने शब्दों में रखूंगा, आपके कहने से नहीं रखूंगा।

श्री शरद पवारः ठीक है, आप अपने शब्दो में रखिये लेकिन जो पीड़ा है, वह पीड़ा तो रहेगी ही, मुझे इस बारे में विश्वास है। सवाल यह है कि इस सरकार का कंट्रीब्यूशन साढे बारह या १३ महीने में छोटे वर्ग में गैर-विश्वास की भावना के साथ साम्प्रदायिकता देना है। इनका हिन्दुत्व या हिन्दूवाद- सब चुनाव के लिये नारे थे जिसके बारे में देशवासियों को पता चला है।

माननीय प्रधानमंत्री जी, मैं १० दिन पहले वाराणसी गया था। मैं सुबह उठकर गंगा घाट देखने के लिये गया। जो परिस्थिति मैंने वहां देखी, जो पानी देखा, जिस तरह से मरे हुये जानवर वहां देखे और वहां लोगों से जिस तरह से बात की, सब लोग कहते थे कि स्व. राजीव गांधी ने गंगा एक्शन प्लान शुरु किया था, उस प्लान की तरफ चाहे उत्तर प्रदेश की सरकार हो या दिल्ली की सरकार हो, किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया है। गंगा के नाम पर, अयोध्या के नाम पर, वाराणसी का नाम लेकर राजनैतिक फायदा लेने का काम जिस पार्टी ने किया, कम से कम इस देश की जनता की भावनाओं का ध्यान रखकर सरकार ने कदम उठाया होता, ऐसा वहां की जनता ने कहा है। उनका यह भी कहना है कि पिछले १३ महीने के कामो को देखने के बाद इस सरकार पर बिलकुल विश्वास नहीं रहा है, आप कोई दूसरा विकल्प जल्दी दीजिये, तब यहां की स्थति सुधरेगी।

जहां तक देश की एकता का सवाल है, सबसे महत्वपूर्ण बात देश की आर्थिक स्थिति की समस्या है। आज औद्योगिक उत्पादन कम हो रहा है। मैं इस सदन में जिस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता हूं, वहां पिम्परी, टैलको, बजाज ऑटो, किर्लोस्कर फैक्टरी और दूसरी मेजर इंडस्ट्रीज हमारे क्षेत्र में हैं। आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि ५० प्रतिशत से ज्यादा नये कारखाने बंद हो गये हैं और मेजर इंडस्ट्रीज को मदद करने वाले छोटे कारखाने थे, खासकर एंसिलरी इंडस्ट्रीज जिसमें समाज का छोटा कारीगर अपने घर पर कारोबार चलाता था, ७० परसेंट से ज्यादा इंडस्ट्री बंद हुई है। आज एक शहर में ५० हजार से ज्यादा मजदूर बेरोजगार हो गये हैं, उनको रोटी नहीं मिल रही है। यह परिस्थिति सबसे ज्यादा डेवलप्ड इंडस्ट्री वाले शहर की है। आप बता सकते हैं कि पूरे देश की परिस्थिति क्या होगी। पब्लिक सैक्टर की क्या परिस्थिति होगी? इस बेरोजगारी को कम करने के लिये, कारखाने चलाने के लिये और औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने के लिये इस सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया जिसकी पूरी कीमत देशवासियों को चुकानी पड़ रही है।

हम देख रहे हैं कि पिछले कई सालों से स्वदेशी का नारा दिया जा रहा है। इसकी परिस्थिति यह है कि आज पूरी दुनिया भारत को एक डम्पिंग ग्राउंड बना रही है। शक्कर के क्षेत्र में यही हुआ है। इस देश के किसान में देश के हर आदमी की जरूरत को पूरा करने की ताकत है। यहां गन्ना किसान का महत्व क्या है इस बात से साबित होता है कि हमारे देश में इतनी चीनी बनने के बाद भी बाहर से लाने के लिये इजाजत दे दी गई है। हमारे देश में चार करोड़ टन गन्ना पैदा करने वाले किसान की परिस्थिति खराब करने का काम इस सरकार की नीतियों ने किया है। ऐसा सभी क्षेत्रों में हो रहा है।

भारत आज डम्पिंग ग्राउंड हो रहा है और यह सरकार स्वदेशी का नारा दे रही है। आज यह परिस्थिति देखने के बाद देश की जनता को यह विश्वास नहीं कि इस सरकार को शासन चलाने का अधिकार रहे। मुझे याद है कि जब दिल्ली में चुनाव हुये तो उस समय प्याज की बात सारे देश में हुई थी। यहां दुनियाभर से प्याज १६-१७-१८ रुपये और यहां तक कि ३० रुपये किलो तक लाया गया था। आज प्याज की फसल ज्यादा हो गई है। नासिक तथा दूसरी जगहों के किसान यह मांग कर रहे हैं कि पहले हमारा प्याज दुनिया में बेचने के लिये इजाजत दें। इस सरकार ने २५-३० हजार टन पर मंथ की इजाजत दी है। इस सरकार ने इतना एक्सपोर्ट करने की इजाजत तब दी जब किसान द्वारा मंडी में प्याज बेचने के बाद और जब उसे कल्टीवेशन प्राइस तक नही मिली, व्यापारियों के पास माल जमा होने के बाद एक्सपोर्ट करने की इजाजत दी और इस प्रकार से व्यापारियों को मुनाफा देने का पूरा प्रबंध किया तथा किसानों को तंग करने का काम इस सरकार ने किया। यही परिस्थिति आलू की रही। आलू उगाने वाले किसानों की यही परिस्थिति रही जिसका बुरा असर सारे देश पर हो रहा है। गांव में रहने वाला किसान तरस रहा है। जब-जब हम लोग कहीं भी जाते हैं तो लोग पहला सवाल यह पूछते हैं कि ऐसी नौबत कब तक रहेगी और आप इसे कब तक दूर करेंगे। मुझे खुशी है कि सुश्री जयललिता ने कुछ समझदारी से ऐसा कदम उठाने की तैयारी की है और इस देश की जनता को इस सरकार से छुटकारा दिलाना चाहती है। इसकी प्रक्रिया आज शुरु हुई है।

अध्यक्ष जी, इन्फ्रास्ट्रक्चर के बारे में बहुत बातें कही गई हैं। इनमें बिजली का उत्पादन बढ़ाने की बात बहुत बार की गई है। प्रधानमंत्री जी ने इस को महत्व दिया है मगर पिछले १३ महीने में जो पुराने बिजली के प्रकल्प थे, उन्हें पूरा करके इस देश को समर्पित किये गये हैं लेकिन देशवासियों के सामने कोई नया प्रकल्प लाने के लिये सरकार ने कदम उठाया हो, ऐसा हमारे सामने नहीं आया। उत्तर प्रदेश मे तो कई जगह सुबह ९ बजे से सायं ४ बजे तक बिजली हर दिन नहीं मिलती है।

... (व्यवधान)

..आपने बहुत बड़ा स्लोगन दिया कि पूरे देश में महामार्ग बनायेंगे, बिजली के केन्द्र बनायेंगे, नये कोर्टस बनायेंगे मगर पिछले १३ महीने में सभी क्षेत्र में दुनिया से इन्वैस्टमेंट आया या इस देश में तैयारी हुई, ऐसी मिसाल इस सरकार ने नहीं दी। इस सरकार ने इन्फ्रास्ट्रक्चर के बारे में बिलकुल नजरअंदाज करने का काम किया है।

मैं सोचता था कि टेलीकॉम पालिसी के बारे में यह सरकार थोड़ा ध्यान रखेगी लेकिन दुनिया से इनवैस्टमेंट नहीं हुआ है। थोड़ा कुछ काम किया है मगर जो किया है, वह पूरा नहीं किया है। यहां से पूरी दुनिया को यह मैसेज भेजने की आवश्यकता थी कि हम टेलीकॉम क्षेत्र को महत्व देते हैं क्योंकि दुनिया में कम्युनिकेशन फील्ड की काफी कीमत है और इस क्षेत्र में भारत बिलकुल पिछड़ा नहीं रहना चाहिये। इस पर हमारा ध्यान है मगर वहां भी ब्यूरोक्रेटिक अप्रोच सरकार में बैठने वाले साथियों ने दिखाई, उससे पूरी दुनिया में यह मैसेज गया है कि इस देश में कुछ नहीं हो सकता। इससे पूरे देश का इनवैस्टमेंट क्लाइमेट खराब हो गया है और इस देश में नई पूंजी आने के सब रास्ते बंद हो गये हैं। इस सब की जिम्मेदारी किस पर है? इस सरकार के बारे में दुनिया के मन में गैर-विश्वास की भावना आज देश में हम लोगों को देखने को मिल रही है। मुझे खुशी है कि इस वर्ष वर्षा अच्छी हुई है। किसानों ने मेहनत की और फसल अच्छी निकली है।

मगर इससे पहले भी इस सदन में बात हुई कि हुकूमत में आने के बाद हम किसानों के लिए एक नयी कृषि नीति जल्दी से जल्दी लाएँगे। १२ महीने में कृषि नीति लाने के लिए कुछ ठोस कदम उठाए गए हों इसके दर्शन इस सदन को नहीं हुए और न देश के किसानों को हुए।

सरकार चलानी हो तो प्रशासन को भी विश्वास में लेकर काम करने की आवश्यकता होती है। कई साल हम लोग भी सरकार में रहे। राज्यों में रहे और केन्द्र में रहे मगर इतने छोटे स्पैन में, १२ महीने के स्पैन में सरकार से संबंधित लोगों ने यहां पर जो स्ट्राइक पर जाने का काम किया, इससे पहले कभी नहीं हुआ था। कौन लोग स्ट्राइक पर गए? ऐम्स के डॉक्टर्स, वहां के रिसर्च स्कॉलर्स के स्ट्राइक पर जाने की परिस्थिति पैदा हो गई। न्यायालय के कर्मचारी स्ट्राइक पर गए, बैंक में काम करने वाले कर्मचारियों के स्ट्राइक पर जाने की नौबत आ गई। कृषि क्षेत्र में जो वैज्ञानिक हैं जो कभी स्ट्राइक की बात नहीं करते थे, उनके स्ट्राइक पर जाने की परिस्थिति आ गई। एन.टी.पी.सी. के कर्मचारी स्ट्राइक पर गए। प्रसार भारती के कर्मचारी पिछले कुछ महीनों से सभी मेम्बर्स के पास, पोलिटिकल पार्टीज़ के लीडर्स के पास, अखबार वालों के दरवाजे पर जा रहे हैं, मगर यह सरकार उनके साथ बातचीत करने के लिए भी तैयार नहीं है। समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग जिसको विश्वास दिलाकर हम देश का प्रशासन ठीक तरह से चला सकते हैं, इस पर ध्यान देने की परिस्थिति आज इस सरकार की नहीं है।

श्री मोहन सिंह (देवरिया) : उल्टे उनकी पिटाई हो रही है। मारा जा रहा है लाठियों से।

श्री शरद पवार (बारामती) : जी हां, उनको मारा जा रहा है।

विदेश नीति के बारे में बहुत कुछ कहा गया। जो अच्छे कदम उठाए गए, उसका इस सदन ने स्वागत किया है। लाहौर यात्रा का स्वागत पूरे सदन ने किया। अच्छी बात है, पड़ोसियों के साथ अच्छे रिश्ते बनाने के लिए अच्छे कदम उठाने की आवश्यकता है और इस बारे में अटल जी ने जो किया उसका स्वागत इस सदन ने किया था।

आज अग्नि-२ की बात पूरे देश में हो रही है, पूरी दुनिया में हो रही है। इस देश के वैज्ञानिक और टैकनीशियन्स ने इस क्षेत्र में जो काम किया और कई सालों से जो प्रोग्राम हो रहे थे, वह आगे ले जाने के लिए जो कुछ कदम उठाए, इसका स्वागत सभी लोगों ने किया है। मगर हम पड़ोसी देशों के साथ रिश्ते सुधारने के लिए जब कदम उठाते हैं और साथ-साथ इसी समय पर ठअग्नि' जैसे कदम उठाते हैं तो क्या यह कॉनफिडेन्स बिल्डिंग मीज़र्स हैं? आप इंडियन सब-कॉन्टिनेन्ट में आर्मस रेस करना चाहते हैं? जिस दिन हम लोगों ने यह कदम उठाया, उसी शाम को पाकिस्तान ने कहा कि इस बारे में हम भी कुछ करेंगे और पूरी दुनिया ने देखा कि पाकिस्तान ने क्या किया। पड़ोसी देशों के साथ हम अच्छे रिश्ते सिन्सियरली रखना चाहते हैं, वह रिश्ते हमें चाहिए। भारत हो या पाकिस्तान हो या आस-पास के देश हों, सभी देशों की समस्या गरीबी की है, बेरोज़गारी की है। हमारा पूरा ध्यान इस पर रहने की आवश्यकता है। हमारा पूरा ध्यान हम आर्मस रेस पर लगाएंगे तो सब-कॉन्टिनेन्ट के जितने गरीब लोग हैं, इनकी परिस्थिति में सुधार नहीं होगा। आने वाले समय में यह सब दुनिया के पिछड़े भूभाग होंगे और इसलिए मुझे मालूम नहीं कि जो समय अटल जी ने इसके लिए चुना, वह समय ठीक था या नहीं। इस बारे में उनको विचार करना पड़ेगा।

पड़ोसी देशों के साथ जब रिश्ते सुधारने की बात आती है तो जैसे पाकिस्तान हमारे लिए महत्वपूर्ण देश है, वैसे ही चीन भी हमारे लिए महत्वपूर्ण देश है। कई सालों से कदम उठाए जा रहे थे कि हम उनसे रिश्ते कैसे सुधार सकते हैं। पहले हमारे राष्ट्रपति वहां गए, राजीव गांधी जी प्रधान मंत्री थे तो वे वहां गए। उनका डेलिगेशन आ गया और सबसे पहली शुरूआत अटल जी ने की थी जब वे फॉरेन मिनिस्टर थे। जब हमारे रिश्ते बिल्कुल खत्म हो गए थे, तब अटल जी ने शुरूआत की थी और उसका स्वागत हम लोगों ने किया था। नरसिम्हा राव जी के जमाने में कुछ ऐग्रीमेंट हो गए और चाइना और भारत में एक तरह के विश्वास का माहौल पैदा हो रहा था। मगर हमारे रक्षा मंत्री ने एक स्टेटमेंट दे दिया। वैसे स्टेटमेंट देने की बहुत सालों से उनकी आदत है। वे हमारे बड़े अच्छे दोस्त हैं। हम दोनों एक शहर से आते थे, इसलिए दोनों ही ठीक तरह से एक दूसरे को जानते हैं। किसी के ऊपर बरसना है, एक बार उनके मन में आ गया तो कभी छोड़ते नहीं, यह सभी देशवासियों को भी पता लगा। उनका रास्ता ठीक हो या न हो मगर बरसने की बात एक बार मन में आ गई तो बरसते हैं। उन्होंने चाइना के ऊपर कुछ कहा और अटल जी के जमाने से कल तक जो रिश्ते दुरुस्त करने के लिए कदम उठाए थे, वह सब जो मेहनत हुई थी, वह मेहनत एक बयान से खत्म करने का काम उन्होंने किया। इसलिए मुझे मालूम है कि विदेश नीति के बारे में भी इस सरकार का कंट्रीब्यूशन निश्चित रूप में क्या है। कौन सा ऐसा क्षेत्र है जहां १३ महीने में कुछ किया हो? बहुत सी बातें कीं। समाज प्रबोधन की बात की, सामाजिक परिस्थिति दुरुस्त करने की बात की, महिलाओं के उत्थान की बात की। मैं एक ही सवाल पूछना चाहता हूं कि समाज की ५० प्रतिशत आबादी महिलाओं की है। उनको अधिकार देने की बात इस सदन में कई बार की और उसकी तैयारियां हमारी हैं, यह बात आपने ५० बार यहां और बाहर कही होगी मगर इस बारे में आरक्षण देने की जो तैयारी करके सदन के सामने जिस बिल का प्रारूप लाने की आवश्यकता थी उस पर आज तक आपने कदम नहीं उठाया। सबसे ज्यादा गंभीर बात मेरे सामने यह है कि कि डिफेन्स पर्सोनल के साथ हम किस तरह से व्य वहार करते हैं, उनको किस तरह का ट्रीटमेंट देते हैं।

पूरी दुनिया में आज भारत की डिफेन्स के बारे में चर्चा हो रही है। भागवत इश्यू पर मैं किसी का समर्थन करने के लिए यहां खड़ा नहीं हुआ हूं मगर जिस तरह से ये बातें अखबारों में आ रही थीं जिस तरह से संघर्ष शुरू हुआ, वह देश की रक्षा के लिए ठीक नहीं है। यह सेन्सिटिव मिनिस्ट्री है। इस पर समझदारी से देखभाल करने की आवश्यकता थी। इससे पहले क्या ऐसा कभी नहीं हुआ था? इससे पहले भी हुआ था। जब जनरल कृष्णा मेनन थे और जनरल थिमय्या थे, तब भी संघर्ष हुआ और इस पर ध्यान दिया तब के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने। पंडित नेहरू जी ने थिमय्या को बुलाकर रास्ता निकाला। कृष्णा मेनन जी को जो बताने की आवश्यकता थी वह बताया और पार्लियामेंट के सामने उन्होंने कहा कि टैम्प्रामेन्ट प्रॉबलम्स हैं, दूसरी प्रॉबलम्स हैं। इससे पहले भी कई सवाल खड़े हुए थे मगर एक सीमा के बाहर प्रधान मंत्री या रक्षा मंत्री ने जाने की कोशिश नहीं की। मगर जिस तरह से ऐक्स नेवल चीफ का इश्यू हैण्डल किया गया, मुझे लगता है कि पिछले कई सालों से चीन की लड़ाई में हमारी डिफेन्स मिनिस्ट्री और आर्मड फोर्सेज़ का जितना नुकसान नहीं हुआ, उससे ज्यादा नुकसान इस विभाग का इस इश्यू को गलत तरीके से हैण्डल करने से हुआ होगा। यह बात कई महीनों तक अखबारों में आती रहेगी। हमारे कई साथी इस इश्यू पर बहस करना चाहते थे। हम लोगों ने उनको निमंत्रित किया और बताया कि रक्षा से जुड़ा हुआ यह सवाल है, सेन्सिटिव इश्यू है, इस पर सदन में बहस करना ठीक नहीं होगा। मैंने और मनमोहन सिंह जी ने प्रधान मंत्री से मुलाकात करके जो कुछ हमारी भावनाएं इस बारे में थी, वह उनके सामने रखीं। हमारी अपेक्षा यह थी कि इस पर वह ध्यान देकर कुछ न कुछ कदम उठाएंगे जिससे रक्षा दल में काम करने वाले सभी साथियों के मनोबल पर बुरा असर न हो। मगर एक दिन सुनना प्रड़ा कि

Naval Chief has been expelled.

इसके मेरिटस और डीमेरिटस के बारे में मैं ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहता हूं मगर एक बात ज़रूर कहना चाहता हूं कि जिस तरह से इस इश्यू के बारे में कॉनफिडेन्शियल रेकार्ड, सीक्रेट पेपर्स पूरे देशवासियों के सामने गए, इसकी शुरूआत हुई सेलेक्टिव लीकेज से। कुछ अखबारों को सेलेक्टिव लीकेज करने का काम ज़रूर किया गया।

कुछ लीकेजिज ऐसी हैं, जो डिफैंस मिनिस्टर ने फाइलों के पेपर्स वहां उद्धृत किये हैं। रक्षा मंत्री के दो-तीन इंटरव्यूज देशवासियों ने देखे, ठमैट्रो' में देखा, ठआपकी अदालत' में देखा और ठस्टार' तथा अन्य चैनलों पर देखा। वह वहां बैठे थे और बार-बार कागजात दिखाते थे

Such-and-such decision was taken. Such-and-such papers were there.

सीक्रेट पेपर्स और सैन्सिटिव पेपर्स का हम लोगों को किस तरह से इस्तेमाल करना चाहिए, इसकी कुछ मर्यादा होती है और उस मर्यादा का सम्मान करने का जो काम रक्षा मंत्री जी का था, वह उन्होंने नहीं किया। यह बात मुझे यहां कहनी है। जिस तरह की बातें आई, मुझे याद है इंडियन एक्सप्रैस के मुख्य संपादक श्री शेखर गुप्ता ने लिखा था कि इसमें दोनों ही जिम्मेदार हैं, उन्होंने लिखा था -

"Documents relating to every single aspect of the controversy are now floating freely all over the capital from media offices to the diplomatic circuit. There is not one thing about the supposedly Super-secret Operation leach that the cocktail circuit does not know. Copies of the letters allegedly written by Morarji Desai to Fernandes cautioning him on his activism on among certain aspects of India's nuclear `relations' with Libya are freely circulating. Similarly, the photocopiers in the Ministry of Defence have worked overtime over the past few months making copies of adverse entries on Bhagwat's old Annual Confidential Reports."
There are a number of other things.

जितने जिम्मेदार अखबार हैं, उन सभी ने इस बारे में कुछ न कुछ लिखा था। जिस तरह से कागजों का बंटवारा हुआ, जिस तरह से इंफॉर्मेशंस लीक हुईं और जिस तरह से उसका जवाब देने के लिए सरकार ने कदम उठाया, उससे गैर जिम्मेदारी साबित होती है। उनका जो पहला स्टेटमैंट आया था, मैं समझ सकता था। उन्होंने कहा -

"You can kill me. But I will not disclose certain things in the larger interests of the nation."

वहां तक उनकी भूमिका ठीक थी। मगर बाद में जिस तरह से उन्होंने बयान दिये, जिस तरह के स्टेटमैंटस और इंटरव्यूज दिये, उनके चेहरे से लगता था कि यह कोई डैस्पिरेट आदमी है, कोई एक्सट्रीम लाइन लेकर खत्म करने के लिए जा रहा है - उन्होंने इस तरह के कदम उठाये। यह बात फर्नांडीज साहब के लिए नई नहीं हैं। जब एक बात वह मन में ठान लेते हैं तो आखिर तक लड़ाई करने का उनका स्वभाव है। मुझे याद है -

I think, in 1977 or 1978, he was the Minister of Industry. `

फिक्की' में वह एक मीटिग में आये और वहां जाकर उन्होंने रॉबर्स, रैटस ऐसा कुछ कहा।

He was saying so as the Minister of Industry.

कोई भी इश्यू हो, उसे लोगों के सामने बड़ी अच्छी तरह से रखने की उनकी हैसियत है, खूबी है। मुझे याद है एक गैलरी में बैठकर मैंने प्रैस में उनका भाषण सुना था। श्री मोरार जी देसाई के खिलाफ जब नो कांफीडेन्स मोशन आया था, उन्होने क्या एग्रेसिवली भाषण किया था और ४८ घंटे में उन्होंने अपना रास्ता बदल लिया।

डा. सुब्रहमण्यम स्वामी (मदुरै): ४८ नहीं २४ घंटे।

SHRI SHARAD PAWAR (BARAMATI): I am sorry. I am ready to be corrected.
DR. SUBRAMANIAN SWAMY (MADURAI): I have been a witness.
SHRI SHARAD PAWAR (BARAMATI): Dr. Subramanian Swamy has been a witness.

२४ घंटे में उन्होंने अपना रास्ता बदल दिया। अगर किसी का समर्थन करने की बात वह सोच लेते हैं तो बड़ी अच्छी तरह से उसका समर्थन कर सकते हैं और किसी को डिमोलिश करना हो, जिसमें कोई तथ्य हो, चाहे उसमें कोई आधार हो या न हो, वह डिमॉलिश भी बड़ी एग्रेसिवली कर सकते हैं और यह आप आज या कल देखेंगे। मगर इस वक्त सबसे गंभीर समस्या यह है कि जो भागवत ने इश्यूज रेज किये हैं, उनमें कहां तक सच्चाई है, इस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता हूं। मैं इसका समर्थन भी नहीं करना चाहता हूं। जिस तरह से उन्होंने अखबार वालों को कुछ कागजात दे दिये, वह भी गलत है, मैं इसका भी कभी समर्थन नहीं

करूंगा। मगर जो इश्यूज उन्होंने बनाये और डिफेन्स मिनिस्टर ने मीडिया के माध्यम से गंभीर इश्यूज देश के सामने रखे, मुझे लगता है कि उनकी जांच होने की आवश्यकता है, किसी इंडिपेंडेन्ट एजेन्सी के माध्यम से उनकी जांच होने की आवश्यकता थी, इसलिए जे.पी.सी. की मांग हुई थी। मगर प्रधान मंत्री ने जे.पी.सी. हमें मंजूर नहीं, यह बात सदन के बाहर पहले ही कह दी।

अध्यक्ष महोदय, मुझे याद है जब इस सदन में छोटी-छोटी बातों को लेकर, सदन को दो-दो और तीन-तीन दिन तक ठप्प रखा गया, लेकिन जब देश की रक्षा के मामले में जे.पी.सी. बनाने और उसके माध्यम से जांच कराने का प्रश्न इस सरकार के सामने आया, तो स्पष्ट मना कर दिया गया। इससे इस करकार की रक्षा के बारे में नीति और नीयत क्या है, इसकी जानकारी मिलती है और वह सारे देशवासियों के सामने आ गई है।

महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि इस सरकार के पिछले १२ महीने के कार्यकलाप को देखकर ऐसा लगता है कि ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जिसमें सरकार ने मजबूती के साथ कदम उठाया हो। मैं कहना चाहता हूं कि आप किसी भी क्षेत्र को देख लें, चाहे वह आर्थिक क्षेत्र हो, औद्योगिक क्षेत्र हो या सामाजिक एकता को बनाए रखने का क्षेत्र हो, यह सरकार सभी क्षेत्रों में काम करने और लोगों को विश्वास में लेने में बिलकुल असफल रही है और इस असफलता का परिणाम दिल्ली में जनता ने दिखाया, राजस्थान में जनता ने दिखाया, मध्य प्रदेश में जनता ने दिखाया और आठ-नौ उपचुनावों में भारतीय जनता पार्टी के विरोध में वोट देकर दिखाया। इस सरकार ने देश में साम्प्रदायिक घृणा फैलाने का काम किया है। देशवासियों को विश्वास दिलाने और सभी क्षेत्रों में उन्नति करने की सरकार की जो जिम्मेदारी थी, उस जिम्मेदारी को इस सरकार ने नहीं निभाया और देश को पीछे ले जाने का काम किया। इसलिए इस सरकार को इस देश की बागडोर संभालने का एक मिनट भी अधिकार नहीं है। अतः मैं सभी विरोधी दल के भाइयों से उम्मीद रखता हूं कि वे इस विश्वासमत के विरोध में मत देंगे। मैं सभी विरोधी दल के लोगों से आशा करता हूं कि सैकुलरिज्म का समर्थन करने वाली इस सरकार के विरोध मत दें और इक्कीसवीं सदी में देश को ले जाने वाली मजबूत सरकार को विकल्प के रूप में बनाएं। यह विश्वास मैं इस सदन और इस सदन के माध्यम से पूरे देश को देता हूं।

(इति)

११५३ बजे

गृह मंत्री (श्री लाल कृष्ण आडवाणी): माननीय अध्यक्ष जी, सामान्यतः इस प्रकार के विश्वास प्रस्ताव पर प्रधान मंत्री जब प्रस्ताव रखते हैं, उसके साथ-साथ कुछ ि वस्तार से अपनी बात कहते हैं। आज वाजपेयी जी ने प्रस्ताव के साथ-साथ अपनी सरकार के पिछले साल के काम का कोई आकलन प्रस्तुत नहीं किया, लेकिन कुछ शब्दों में, दो-तीन वाक्यों में उन्होंने जो बात कह दी, वह वास्तव में आज की परिस्थिति की मूल समस्या है और मैं अपेक्षा करता था कि उन दो-तीन वाक्यों का कुछ विस्तार से उत्तर मुझे विपक्ष के नेता से मिलेगा और उन्होंने शुरू में कहा भी कि हमारी जवाबदारी है कि जिस समय किसी सरकार का विरोध करें, तो उस समय हम क्या विकल्प प्रस्तुत कर सकते हैं, इसका भी जिक्र करें। इसीलिए ४५-५० मिनट तक शरद पवार जी बोलते रहे और मैं उन्हें बड़े ध्यान से सुनता रहा कि कहीं मुझे उसकी कुछ झलक मिले।

अध्यक्ष जी, मुझे याद आता है कि आपके पूर्व अधिकारी श्री शिवराज जी पाटिल शायद सदन में होंगे, पीछे बैठे हैं, मैं उनका हमेशा आदर करता हूं। वे कभी-कभी बड़ी मौलिक बात सदन और देश के सामने विचार के लिए रखते हैं। उन्होंने एक बार बात कही थी जिसका अनुमोदन प्रधान मंत्री जी ने स्वयं किया था, शायद वे उस समय विपक्ष के नेता थे, जिस समय उन्होंने कहा कि दुनिया के संविधानों में अलग-अलग व्यवस्थाएं हैं और उनमें से एक व्यवस्था जर्मनी में है।

जर्मनी की व्यवस्था अच्छी है। वह इस कारण से बहुत अच्छी है कि वहां कभी भी अस्थिरता पैदा नहीं होगी। मैं जर्मन संविधान का उद्धरण लेकर आया हूं। यह है-

Basu's `Select Constitutions of the World.'

उसके अनुच्छेद ६७ में

... (व्यवधान)

यह महत्व की बात है और यह बात शिवराज पाटिल जी ने कही है इसलिए मैं इसका जिक्र करना चाहता हूं। इसका संबंध है कि सदन सरकार के प्रति अविश्वास प्र स्ताव किस प्रकार से कर सकता है। जर्मनी के संविधान में व्यवस्था है कि अगर किसी सरकार के खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव रखना हो, तो

Article 67 says:
"The Bundstag...", means the Parliament, "...can express its lack of confidence in the Federal Chancellor only by electing a successor with the majority of its Members and by requesting the Federal President to dismiss the Federal Chancellor."

नई सरकार चुनने से पहले वे किस सरकार को बनाना चाहते हैं, इसके लिए प्रस्ताव लाना पड़ता है और उसके आधार पर राष्ट्रपति से अनुरोध करना पड़ता है कि वर्तमान सरकार को हटा दो।

श्री मोहन सिंह (देवरिया): आपने इसी संविधान की कसम खाई है।

... (व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी: हमारे संविधान में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है इसलिए सामान्यतः व्यवस्था इतनी है कि यहां पर अगर आपको सरकार पसंद नहीं है, सरकार को आप हटाना चाहते हैं या हटाना तो छोड़िये, हम लोग विपक्ष में तब रहे हैं, श्री वाजपेयी जी, मैं, सी.पी.आई. और सी.पी.एम.के बहुत सारे लोग विपक्ष में थे, कहीं भी सरकार को हटाने की गुंजाइश नहीं थी फिर भी हम अविश्वास का प्रस्ताव लाते थे। अविश्वास के प्रस्ताव को लाने का उद्देश्य यह होता था कि हम सरकार के काम से सर्वथा असंतुष्ट हैं और इसलिए अपना क्षोभ व्यक्त करना चाहते हैं। यह जानते हुए भी कि हमारे पास मैजोरिटी नहीं है, नम्बर्स नहीं हैं और नम्बर्स के परिणाम के आधार पर हमारा अविश्वास का प्रस्ताव छूट जायेगा, हार जायेगा। सोमनाथ जी यहां बैठे हैं, इन्द्रजीत गुप्ता जी यहां बैठे हैं, हम सब जब अविश्वास का प्रस्ताव लाते थे तो उसका परिणाम भी जानते थे, फिर भी लाते थे। मैं इस चीज का उल्लेख इसलिए कर रहा हूं क्योंकि पिछले पांच-सात दिनों में इसकी काफी चर्चा चली है कि जब ए.आई.ए.डी.एम.के. अपना समर्थन वापिस ले लेगी तो अविश्वास का प्रस्ताव आयेगा या विश्वास प्रस्ताव पर बहस होगी। राष्ट्रपति जी ने हमारी सरकार को, प्रधान मंत्री जी को पत्र लिखकर भेजा, उसी के अनुसार प्रधान मंत्री जी ने विश्वास का प्रस्ताव रखा है लेकिन समझने की बात यह है कि विपक्ष जिसको पता है कि हमारे रूल्स ऑफ प्रोसीजर में, हमारे संविधान में अविश्वास प्रस्ताव की व्यवस्था तो है लेकिन विश्वास प्रस्ताव की व्यवस्था नहीं है। विश्वास प्रस्ताव तो ट्रेडीशन से डैवलप हुआ है और वह ट्रेडीशन उस समय डैवलप हुआ जब शुरू-शुरू में राष्ट्रपति किसी को आमंत्रित करता है और उसके पास स्पष्ट बहुमत नहीं है तो उसको कहता है कि इतने दिनों में तुम अपना स्पष्ट बहुमत परिमाणित करो। इस तरह वह शुरू हुआ और वह शुरू होते-होते बीच में ऐसा काल भी आया जब सदन में चलते हुए किसी ने अपना समर्थन वापिस ले लिया तो उस समय भी राष्ट्रपति जी ने कहा कि आप अपना बहुमत परिमाणित करिये। उसी के अनुसार आज भी किया है। मैं उसकी बहस में जाना नहीं चाहता हूं क्योंकि मुझे लगता है कि अविश्वास के प्रस्ताव या विश्वास के प्रस्ताव पर दो दिन बाद या तीन दिन बाद जब बहस समाप्त होगी तो परिणाम वही निकलेगा जो हर सदन में पिछले साल भर में निकलता रहा और जो अभी-अभी इस सदन में बिहार के मामले को लेकर निकला था और आप यहां से निराश होकर निकलेंगे।

... (व्यवधान)

लेकिन महत्व की बात यह है कि इतना आग्रह क्यों था कि अविश्वास का प्रस्ताव न हो, विश्वास का प्रस्ताव हो? मैं मानता हूं कि अविश्वास का प्रस्ताव लाने वाला व्यक्ति या लाने वाली पार्टी के ऊपर जवाबदारी है।

प्रमाणित करे, संख्या नहीं, प्रमाणित करे कि इस सरकार ने अच्छा काम नहीं किया, इतना खराब काम किया है कि इसे हटाना परम आवश्यक हो गया है। पूरी देर सारे विपक्ष को लगता था कि जिस सरकार ने पोखरण किया, जिस सरकार ने अग्नि किया, जिस सरकार ने अभी-अभी का बजट किया, जिस सरकार ने लाहौर की यात्रा की, जो सरकार कश्मीर में इतना परिवर्तन लाई, जो सरकार सारे एशिया में, जब बाकी अर्थव्यवस्थाएं हिल-डुल गई थीं तब भी यहां पर स्थिरता लाई, उस सरकार के खिलाफ वास्तव में कहने को क्या है। कुछ नहीं। इसीलिए एक ही बात है कि आपके एक सहयोगी दल, जिसने समर्थन दिया था, जिसके आधार पर राष्ट्रपति जी ने आपको बुलाया था, ने अब समर्थन वापिस ले लिया है। अब आप अल्पमत में रह गए हैं इसलिए आप त्याग पत्र दीजिए। अध्यक्ष जी, मैं स्मरण कराना चाहूंगा, जिस समय ए.आई.ए.डी.एम.के. ने हमको समर्थन दिया था, उस समय भी हमारी कुल संख्या २५२ थी, बहुमत नहीं था। मुझे इस बात की खुशी है कि श्री शरद पवार ने स्वीकार किया कि उनको जनादेश नहीं मिला। लेकिन वे कहने की कोशिश करने लगे कि किसी को जनादेश नहीं मिला। मैं इससे सहमत नहीं हूं। लोकतंत्र की इस व्यवस्था में बहुदलीय प्रणाली में जो सबसे बड़ा कौम्बीनेशन है, वह चाहे मैजोरिटी न भी हो, इसीलिए राष्ट्रपति जी ने जिस समय वाजपेयी जी को इस सारे ऐलायंस के नेता के नाते बुलाया, उन्होंने जनादेश का आदर किया। उन्होंने यह नहीं कहा कि आप मुझे पहले २७२ दिखाइए, फिर मैं बुलाऊंगा।

... (व्यवधान)

SHRI BASU DEB ACHARIA (BANKURA): There is no mandate. ...(Interruptions)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मुझे स्मरण है जब ए.आई.ए.डी.एम.के. की नेता ने, जैसे बाकी सबने पत्र भेजे, समता पार्टी ने भेजा, अकाली दल ने भेजा, बीजू जनता दल ने भेजा, शिव सेना ने भेजा, तब भी उन्होंने अपना पत्र नहीं भेजा था। उस समय हमने आपस में विचार किया कि अब तो हमारी संख्या शायद २३८ हो गई। हम राष्ट्रपति जी को कह दें कि आप किसी और को बुलाइए और वाजपेयी जी ने हिंट भी किया कि आप बुलाना चाहें तो किसी और को बुलाइए, जिनकी इससे बड़ी संख्या हो। उन्होंने कहा कि इससे बड़ी संख्या नहीं है। लेकिन इस बीच वह पत्र आ गया और हमारी २५२ की संख्या के आधार पर शपथ दिलाई गई। तब भी हम अल्पमत में थे। आज १८ कम हो गए, १८ नहीं मैं एक और भी गिनूंगा, १९ कम हो गए।

... (व्यवधान)

इसीलिए मैं पहले इस बात पर बल देना चाहूंगा कि १९९८ के लोक सभा के चुनाव में हिन्दुस्तान की जनता ने इस प्रणाली के अधीन एक मत व्यक्त किया और जो जनादेश है, वह स्पष्ट है कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में ऐलायंस की सरकार बने। यह देश का जनादेश है और १९९६ से भिन्न है। १९९६ में मुझे याद है कि वह जनादेश एक प्रकार से बी.जे.पी. के लिए था कि सबसे बड़ी पार्टी करके उभरे। इसलिए उस समय भी डा. शंकर दयाल शर्मा ने वाजपेयी जी को बुलाया। लेकिन यह बात सही है कि उन दिनों स्थिति ऐसी थी कि और कोई पार्टी हमारे साथ आने को तैयार नहीं थी सिवाए शिव सेना के, जो हमारे साथ चुनाव में भी थी और चुनाव के तुरंत बाद अकाली दल हमारे साथ आया था, चुनाव में वह भी नहीं था। ये परिवर्तन, हिन्दुस्तान की राजनीतिक गतिविधियों और राजनीतिक व्यवस्था में जो परिवर्तन होते रहे हैं, उनकी ओर संकेत करते हैं। जिस पार्टी के पास आज से दस साल पहले १९८९ में केवल दो सदस्य थे, आज उस पार्टी के साथ इतने सहयोगी दल जुड़े कि हम २५२ की संख्या में पहुंचे। शक्ति परीक्षण हुआ तो कांग्रेस पार्टी और इधर बैठे हुए लैफ्टिस्ट लोग, एस.पी. और आर.जे.डी. सबको मिलाकर २९ वोटों से इसी सदन में पराजित किया और यह जनादेश ज्यों का त्यों है।

आज मुझे बहुत खुशी हुई श्री शरद पवार ने इस बात का जिक्र किया कि

श्री वाजपेयी जी का पूरा जीवन राजनीति में सत्ता के लिए न होकर मूल्यों के लिए हुआ है।

नैतिकता के ऊपर आधारित रहा है और इसीलिए उन्होंने कहा कि मैं तो अपेक्षा करता था कि जिस समय ए.आई.ए.डी.एम.के. अपना समर्थन वापस ले लेगी तो वाजपेयी जी तुरन्त जाकर इस्तीफा दे देंगे-यह उन्होंने कहा। अगर वाजपेयी जी इस्तीफा देते तो वे जनता की इच्छाओं का आदर नहीं करते। आज प्रातःकाल ही मैं देख रहा था, मेरे पास ये आज की क्लिपिंग्स हैं, जिसमें एक ओपिनियन पोल लिया गया है, जिस ओपिनियन पोल में ... (व्यवधान) यह ओपिनियन पोल ए.आई.ए.डी.एम.के. के समर्थन वापस लेने के बाद लिया गया है। अध्यक्ष जी, इस ओपिनियन पोल के अनुसार अन्नाद्रमुक ...

... (Interruptions)
MR. SPEAKER: No interruption, please.

श्री लाल कृष्ण आडवाणी :

I am not yielding.

अन्नाद्रमुक के समर्थन वापस लेने के बाद ओपिनियन पोल लिया गया है कि क्या वाजपेयी जी की सरकार को तुरन्त त्याग-पत्र दे देना चाहिए या सत्ता में बने रहना चाहिए और द्रमुक व अन्य दलों का समर्थन जुटाना चाहिए, इस पर उन्होंने मत लिया। उसमें २२ प्रतिशत लोगों ने कहा कि उनको त्याग-पत्र देना चाहिए और ७१ प्रतिशत लोगों ने कहा किउनको त्याग-पत्र नहीं देना चाहिए और उनको डी.एम.के. और अन्य पार्टियों का समर्थन जुटाकर जिस प्रकार से साल भर से वे देश की सेवा करते आये हैं, वैसे उनको करते रहनी चाहिए। इसीलिए मैं मानता हूं कि इस समय एक डैमोक्रेटिक लीडर के नाते जनादेश का आदर करते हुए वाजपेयी जी ने यह कहा और राष्ट्रपति के निर्देश को मानते हुए कहा कि मैं सदन के सामने रखता हूं कि आप विश्वास के प्रस्ताव पर अपना मत दीजिए, जो भी आपका निर्णय होगा, उसे मैं शिरोधार्य करूंगा।

शरद जी ने एक बात कही। उन्होंने हमारे खुराना जी को कहा कि अपनी पीड़ा व्यक्त करिये। हमारी पार्टी में किसी को अगर पीड़ा है, किसी को कष्ट है तो वह किसी नेता के पास आकर अपनी पूरी बात कह सकता है, लिख सकता है। यह आप जैसी स्थिति नहीं है कि आप अपनी पीड़ा इधर-उधर व्यक्त करते रहे, लेकिन आप अपने नेता को अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए, व्यथा व्यक्त करते हुए चिट्ठी लिखने का साहस कभी नहीं कर सकते। यह पार्टी ऐसी है, जिस पार्टी में साधारण से साधारण कार्यकर्ता भी बड़े से बड़े नेता के पास जाकर अपने दिल की बात कह सकता है। आपके यहां का वातावरण हमारे यहां नहीं है कि जिस वातावरण में

... (व्यवधान)

PROF. P.J. KURIEN (MAVELIKARA): Shri Khurana was not allowed to make his statement. Why did you not allow that? Please allow him to make a statement.

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : खुराना जी, कभी भी कुछ कहना चाहें तो उनको कहीं कोई बंधन नहीं है। वे आपकी सारी की सारी पोल खोल देंगे।

... (व्यवधान)

श्री अनंत गंगाराम गीते (रत्नागिरि): आप कुछ ही दिनों में वापस बारामती भेजे जाने वाले हैं।

... (व्यवधान)

श्री शरद पवार (बारामती) : मैं वहां जरूर जाऊंगा।

... (व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : इस नाते तो बात सही है कि शरद जी ने और उनके कई साथियों ने या विपक्ष में बैठे हुए कुछ लोगों ने पहले दिन से यह कहना शुरू किया है कि यह सरकार चलेगी नहीं, यह सरकार तो अभी गिरी। हर सैशन शुरू होता है तो हम यही बात अखबारों में सुनते हैं कि इस बार तो सरकार गई। अभी पिछले बजट अधिवेशन में कहना शुरू किया था कि बजट अधिवेशन कैसे पार करेंगे, तब से कहना शुरू किया था और इसीलिए शायद बहुत लोगों के लिए यह भी उपलब्धि लगती है। पिछली पांच सरकारें, वैसे तो कुल मिलाकर १९८९ के बाद पांच गैर-कांग्रेसी प्रधान मंत्री हुए हैं। विश्वनाथ प्रताप सिंह जी हुए, चन्द्रशेखर जी हुए, फिर इन्द्रकुमार गुजराल जी हुए, देवेगौड़ा जी हुए और वाजपेयी जी हुए और इन पांच प्रधान मंत्रियों में से बाकी चारों प्रधान मंत्री एक साल नहीं बिता पाये। एक साल का कार्यकाल बिता पाये, वाजपेयी जी ने साल भर बिताया, इसी पर आपको आश्चर्य होता है, लेकिन मैं मानता हूं

... (व्यवधान)

I am talking of post 1989. After 1989, five Prime Ministers were from non-Congress parties. I am referring to that.

लेकिन मैं इस बात से पूरी तरह से सहमत हूं कि केवल साल भर सरकार चलाना कोई उपलब्धि नहीं है। इस साल भर में हमने भारत में एक दूसरे प्रकार का वातावरण खड़ा किया है। भारत को विश्व भर में एक स्थान प्राप्त करवाया है, यह जो उपलब्धि है, यह सबसे बड़ी उपलब्धि है। मैं तो इस कांग्रेस पार्टी पर ताज्जुब करता हूं कि जिसने पोकरण-

II

की आलोचना की और आज मैं सुनकार हैरान हुआ, जब अग्नि-

II

का जिक्र करते हुए कहते हैं कि हम एक और आर्मस रेस शुरू कर रहे हैं। हमको इस बारे में कोई संकोच नहीं, पोकरण-

II

से लेकर अग्नि-

II

तक भारत को इस सरकार ने और सबल किया है, और अधिक मजबूत किया है। इस पर आपकी पार्टी अपोलोजेटिक हो सकती है, आपकी पार्टी आर्मस रेस की बात कर सकती है

... (व्यवधान)

श्री भजनलाल (करनाल) : मेरा पाइंट ऑफ ऑर्डर है। क्या यह पोकरण वाला विस्फोट और अग्नि का परीक्षण आपकी देन है, इस देश को। यह कांग्रेस की नीतियों का फल है।

... (व्यवधान)

SHRI L.K. ADVANI: There is no point of order.
... (Interruptions)
MR. SPEAKER: No.

श्री सत्य पाल जैन (चंडीगढ़): ये आपको मंत्री नहीं बनाएंगे।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं नहीं जानता हूं कि हमारे विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह जी इस बार की बहस में बोलेंगे कि नहीं बोलेंगे, लेकिन अगर वे बोलेंगे तो निश्चित रूप से मई के महीने में कांग्रेस पार्टी की ओर से जो-जो बयान हुए थे, जो-जो वक्तव्य दिये गये थे कि इस सरकार ने भारत को अलग-थलग कर दिया है, इस सरकार ने गांधी को, बुद्ध को भुला दिया है, इस सरकार ने पोकरण-

II

करके देश के ऊपर एक बहुत बड़ा बोझ लाद दिया है। दुनिया भर की अलग-अलग बातें कहीं। यहां पर नटवर सिंह जी होंगे, उनका बयान उठाकर पढ़िये, वे क्या-क्या बोले थे और उसकेसाल भर बाद, साल भर भी अभी पूरा नहीं हुआ है, क्या स्थिति हुई है? आज कोई इस बात कीआलोचना नहीं करता।

Pokharan-II was regarded as an achievement not only by India and Indians but even the world over, it is treated with respect.

श्री भजनलाल (करनाल) : यह आज की सरकार ने बनाया है क्या?

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : हम उनमें से नहीं हैं, जो केवल विपक्ष में बैठकर आलोचना ही करें। जब इन्दिरा जी ने १९७४ में पोकरण का पहला-पहला विस्फोट किया था तो शायद वाजपेयी जी सबसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने उनकी तारीफ की थी और सरकार की तारीफ की थी। हम आपकी तरह नहीं करते और इसीलिए मुझे बड़ा दुख हुआ, जब आज खासकर पूर्व रक्षा मंत्री अग्नि-

II

के बारे में यह वाक्य बोलते हैं कि अग्नि-

II

का परीक्षण इस समय करने की क्या जरूरत थी, जब हमने एक हिस्टोरिक इनीशिएटिव लिया है,बस राइड करके पाकिस्तान से दोस्ती करने का तो पाकिस्तान को इस प्रकार से चिढ़ाने काक्या औचित्य था? मैं मानता हूं कि हिन्दुस्तान अपने को मजबूत करे, हिन्दुस्तान देश के अन्दर आतंकवाद को समाप्त करे और पाकिस्तान के साथ दोस्ती करे, यह परस्पर विरोधी एप्रोचिज़ नहीं हैं, ये परस्पर पूरक एप्रोचेज़ हैं।

मुझे याद आता है, आज से कई साल पहले, चार साल हों या पांच साल हों, मैं उस समय भारतीय जनता पार्टी का अध्यक्ष था और पाकिस्तान में जो ब्रिटिश हाई कमिश्नर सर बैरिंग्टन नाम के थे, वे यहां पर आये थे। वे जब मुझसे मिले तो उन्होंने कहा कि मैं मुख्य रूप से आपसे हिन्दुस्तान पाकिस्तान सम्बन्धों के बारे में, कश्मीर समस्या के बारे में चर्चा करने आया हूं और आपका दृष्टिकोण, आपकी पार्टी का दृष्टिकोण मैं समझना चाहूंगा। उस चर्चा में उन्होंने एक बड़ी महत्वपूर्ण बात कही, उन्होंने कहा कि मेरा यह विश्वास है, मेरा यह कन्विक्शन है और पाकिस्तान में जो एलीट है, उसका भी कन्विक्शन है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के सम्बन्ध सबसे अच्छे तब बनेंगे, जब नई दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी की सरकार होगी। उन्होंने जब यह कहा तो फिर उन्होंने दुनिया भर की एनोलोजीज़ देते हुए कहा कि अमेरिका और चाइना के सम्बन्ध तब अच्छे हुए,

जब प्रेजीडेंट निक्सन हुए, जिनके बारे में चीन में माना जाता था कि वे फार्मूसा समर्थक हैं, वे चीन के खिलाफ हैं, वे कट्टर एंटीकम्युनिस्ट हैं, वैसी ही धारणा बी.जे.पी. के बारे में, वाजपेयी जी के बारे में और आपके बारे में बनी हुई है। मुझे यकीन है जिस दिन आपकी सरकार आएगी, उस दिन निश्चितरूप से भारत-पाकिस्तान के बीच सम्बन्ध सुधारने की दिशा में कदम उठाए जाएंगे। मैं तारीफ करता हूं, वाजपेयी जी को बधाई देता हूं कि सालभर भी नहीं बीतने दिया, पोखरण के बावजूद, अग्नि की तैयारी करने के बावजूद उन्होंने लाहौर की यात्रा की, जिसकी पाकिस्तान में तारीफ हुई, दुनिया भर में तारीफ हुई कि इतनी शानदार और ऐतिहासिक पहल और किसी देश की सरकार ने नहीं की। आप कर सकते थे, क्यों नहीं की, आप पोखरण में विस्फोट कर सकते थे, क्यों नहीं किया?

आज मैं देखकर हैरान होता हूं कि कम्युनिस्ट किस उत्साह से कांग्रेस की सरकार बनाने को तत्पर हैं। अजीब हैं सचमुच! आज से ढाई साल पहले आपका एक डाक्युमेंट मेरे पास आया था, क्योंकि मैं इस विषय पर कि आप सरकार के आलोचक हैं, ऐसा नहीं जानता था। इन दिनों जब मैं देखने लगा तो मुझे लगा कि आप कांग्रेस पार्टी के आलोचक केवल इस कारण नहीं हैं कि कांग्रेस पार्टी करप्ट है, कांग्रेस पार्टी साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन देती है, लेकिन कांग्रेस पार्टी सिक्योरिटी के बारे में उदासीन है, सुरक्षा के बारे में उनको कोई चिंता नहीं है। १९९६ का सी.पी.आई. (एम) का एक पब्लिकेशन है।

This is a l966 publication of CPI(M), entitled:
"RECORD OF COMPROMISING INDIA'S SECURITY":

इसमें हमारे सी.पी.आई. (एम) के मित्र क्या कहते हैं-

"Betraying India's security interests and compromising with its sovereignty should find an important place in the charge-sheet against the Congress. The last five years, l99l to l996, have seen a systematic building up of relentlesss pressure on the Indian Government by the U.S and its allies.
Time and again, the Congress Government has surrendered India's vital interests. The Americans were determined to prevent India developing missile technology, curbing our nuclear technology and while taking a position hostile to India's interests by their agenda for an independent Kashmir, have succeeded in becoming collaborators with India's military establishment, thanks to the Congress (I) Government's pro-imperialist policy."

कोलैबोरेटर अमेरिकन हैं इनके या आप हैं कोलैबोरेटर इनके?

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): You are a greater danger!
DR. SUBRAMANIAN SWAMY (MADURAI): They may be collaborators but you have surrendered.

श्री लाल कृष्ण आडवाणीः कोलैबोरेटर कौन हैं, इसीलिए मैं हैरान होता हूं। मुझे विश्वास है कि कांग्रेस पार्टी भी जानती है कि इस सदन में

... (व्यवधान)

श्री बलराम जाखड़ (बीकानेर): आडवाणी जी, मैं एक मिनट लेना चाहता हूं।

श्री लाल कृष्ण आडवाणीः मैं हमेशा आपका आदर करता हूं।

श्री बलराम जाखड़(बीकानेर): मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि क्या आप बंगला देश को भूल गए, ९५,००० को भूल गए,

श्री लाल कृष्ण आडवाणीः मैं नहीं भूला हूं।

श्री बलराम जाखड़ (बीकानेर): सातवां बेड़ा भी चला गया, क्या वह भी भूल गए, थोड़ा सा इन चीजों पर ध्यान करें। अगर यह नहीं होता तो बात दूसरी होती

श्री लाल कृष्ण आडवाणीः मैं नहीं भूला हूं। जाखड़ जी, जब बंगला देश स्वतंत्र हुआ था, आप शायद भूल गए कि तब वाजपेयी जी ने इंदिरा जी के बारे में क्या कहा था, लेकिन मैं नहीं भूला हूं। मैं तो आपको याद दिला रहा हूं कि आप इनके भरोसे चल रहे हैं, इनके भरोसे सरकार बनाने की कल्पना करते हैं, इनको पहचानिए और सारी दुनिया इनको पहचाने। मैं यह बताना चाहता हूं।

कम्युनिस्ट पार्टी पर मुझे गुस्सा कम आता है, मुझे इन पर दया आती है। ... (व्यवधान)कल तक जो पार्टी यह सोचती थी कि

... (व्यवधान)

आधी दुनिया पर हमारा अधिकार है और थोड़े सालों बाद सारी दुनिया पर हमारा अधिकार हो जाएगा जिसमें भारत भी एक हिस्सा होगा, वहां की स्थिति यह है कि सारी दुनिया से साफ होकर केवल भारतवर्ष के दो कोनों में आकर सीमित हो गई है।

... (व्यवधान)

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): Not with your help, not at your mercy. Shri Advani, you have taken the help of motley crowd, not us. (Interruptions) We shall reply to you. (Interruptions).

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : यह मैंने १९९६ का आपको पढ़कर सुनाया है। यह १९९६ का डॉक्यूमेंट था लेकिन १९९८ का चुनाव जब हमारे लेफ्टिस्ट मित्रों ने लड़ा था तो उन्होंने एक मैनिफेस्टो इश्यू किया था।

The 1998 Manifesto of the Left Parties, it applies to all of them, says:
"The Congress Party has degenerated both politically and organisationally. It is the Party in decline as it has pursued, when in power, economic policies which militate against the people. It betrayed the secular heritage by compromising with communal forces and it is the Party riddled with corruption."

यह पार्टी कहती है कि सरकार बना लो, हम आपको बाहर से समर्थन करेंगे। आपको हम अनकंडीशनली समर्थन करेंगे।

... (व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा) : आप अपने बारे में बोलिए।

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : हमारे बारे में हम बोलेंगे, आप अपने बारे में बोलिए।

... (व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं फिर से उसी पर आता हूं। इस बहस में सार्थकता आएगी अगर आप कह दें कि हम इस सरकार को हटाकर क्या विकल्प प्रस्तुत करना चाहते हैं, आप ईमानदारी से कह दीजिए। सोनिया जी ने एक बार कहा कि अब यह कोएलिशन का जमाना नहीं है। पचमढ़ी में उन्होंने कहा कि हम अपनी पार्टी की सरकार बनाएंगे और इसीलिए पिछले दिनों, पांच-सात दिन पहले उन्होंने कहा कि अगर कांग्रेस पार्टी सरकार बनाएगी तो तब बनाएगी जब बाकी सब पार्टीज हमें बाहर से समर्थन देंगी। कोई कहे कि मैं डिप्टी प्राइम मिनिस्टर बनूंगा, मैं वित्त मंत्री बनूंगा, मैं वह बनूंगा, हम यह बर्दाश्त नहीं करेंगे। हम यहां बैठे हैं और मैं इन सब लोगों को बताना चाहता हूं कि कांग्रेस पार्टी का दृष्टिकोण आपसे ज्यादा साफ है। कम से कम उनकी नीयत साफ है। दृष्टिकोण भले ही साफ न हो लेकिन नीयत साफ है। आज से छः महीने पहले तक, सितम्बर के महीने तक, जब तक पचमढ़ी का आपका सम्मेलन हुआ था, तब तक उन्होंने क्या देखा था कि यह वाजपेयी जी की सरकार बनी और सरकार बनने के तुरंत बाद एक बड़ी पार्टी ने कहा कि हम चिट्ठी राष्ट्रपति जी को नहीं भेजते, इस प्रकार के एलायंस से यह सरकार कैसे चलेगी? शुरु-शुरु में कह दिया कि जिसने चुनाव में साथ-साथ भाग लिया और वह चिट्ठी भेजने में आनाकानी करती है और फिर यहां से किसी दूत को भेजना पड़ता है। जसवंत सिंह जी को कष्ट करना पड़ता है कि वह जाकर उनको मनाए। यह सब चलाऊ रुख देखा। फिर उन्होंने यह भी देखा कि इस पार्टी में कई सारे लोग हैं, उनकी भी प्रधान मंत्री बनने की महत्वाकांक्षा हो सकती है। एक ही थोड़े ही है तो और कुछ नहीं तो कम से कम वाजपेयी जी और आड वाणी के बीच में दरार कैसे डाली जाए, लगातार मिसइंफॉर्मेशन फैलाओ और उन्होंने यह बहुत ही सिस्टैमैटिकली किया, मानना पड़ेगा, यह मैं मानूंगा। ... (व्य वधान)

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : मदन लाल खुराना ने किया है।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मदन लाल खुराना स्वयं देखेंगे।

... (व्यवधान)

श्री राजेश पायलट (दौसा) : आडवाणी जी, मैं आज वह खुशहाली देख रहा हूं, आपके चेहरे से लग रहा है जो पिछले एक साल में पहली बार ऐसी खुशहाली देखी है।

... (व्यवधान)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : राजेश जी, यह पार्टी किस प्रकार की है, इसकी आपको कल्पना ही करनी पड़ेगी।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : यह कांग्रेस पार्टी नहीं है। इस कांग्रेस पार्टी में क्या हो सकता है, यह तो पिछले आपके अध्यक्ष जिस प्रकार से पूर्व अध्यक्ष को हटाकर बने, तब सबने देखा था। यह पार्टी वैसी नहीं है। हमारी पार्टी को ही छोड़िए, लेकिन हिन्दुस्तान भर में इस प्रकार का नेता आपको नहीं मिलेगा, देश को नहीं मिलेगा, जैसे अटल बिहारी बाजपेयी जी। इतना कद है, इतनी कदावर है और बावजूद इसके कि उनकी विचारधारा में कमिटमेंट होते हुए भी, मेरी विचारधारा में कमिटमेंट होते हुए भी, मैं कभी इस प्रकार की इमेज क्रीएट नहीं कर पाया, जिसमें लोग मुझे कट्टरवादी मानते हैं, जबकि कट्टरता इस विचारधारा में ही नही। शरद पवार जी ने सही कहा - हिन्दुत्व की सबसे बड़ी कोई विशेषता है, तो उदारता है, वह सहिष्णुता है और सब लोगों को समेटकर चलने की बात है। अगर यह न होती, तो १९४७ में जो संविधान के निर्माता बैठे, उन्होंने १९५० में संविधान न बनाया होता।

... (व्यवधान)

श्री अकबर अहमद (आजमगढ़) : आप हिन्दुत्व की बात कह रहे हैं, आपने रामराज्य की बात की थी

... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Hon. Member, please take your seat.

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं इस बात से इन्कार नहीं करता हूं कि इतने बड़े समाज में कई प्रकार के लोग होते हैं, लेकिन कुल मिलाकर के कहा जा रहा है कि यह सरकार फन्डामैंटलिस्ट हो रही है। मुझे इस बात का खेद है कि बीजेपी की सरकार के आने के तुरन्त बाद से विश्वभर में इस बात का प्रचार किया गया है और हमारे ही लोगों ने किया है कि हिन्दुस्तान में फण्डामेंटलिज्म आ गया है। कोई फण्डामेंटलिज्म नहीं आया है और फण्डामेंटलिज्म आ ही नहीं सकता है। हिन्दुस्तान में सैक्युलरवाद है और यह हमारे यहां की धरती में है और जड़-जड़ में है।

... (व्यवधान)

मैं, अध्यक्ष जी, निवासी उस भाग का हूं, जो आज पाकिस्तान का हिस्सा है। मैं सिंध का निवासी हूं। इस क्षेत्र से करोड़ो लोग बेघर होकर इधर आए। १९४७ में जब भारत का विभाजन हुआ, तो किस आधार पर हुआ? पंथ के आधार पर, मजहब के आधार पर, धर्म के आधार पर कि कहां पर हिन्दुओं का बहुमत है और कहां पर मुसलामानों का बहुमत है। उसके आधार पर नक्शे खींचे गए और पाकिस्तान ने अपने को मजहबी राज्य घोषित किया कि हमारा इस्लामिक राज्य होगा। इस्लामिक राज्य और महजबी राज्य का अर्थ है कि मुसलमानों प्रथम दर्जा नागरिक है और बाकी द्वितीय दर्जे के नागरिक हैं। अगर भारत उस समय यही करता, तो शायद दुनिया हमको दोष नहीं देती, दुनिया कहती कि आकिर कांग्रेस पार्टी पार्टिशन के खिलाफ थी। कांग्रेस पार्टी को पार्टिशन को स्वीकार करने के लिए मजबूर

किया गया। दुनिया चाहे दोष नहीं देती, लेकिन हम अपने को माफ नहीं कर सकते। हिन्दुस्तान की परम्परा, हिन्दुस्तान का इतिहास, हिन्दुस्तान की संस्कृति कभी भी मजहबी राज्य की कल्पना स्वीकार नहीं करेगी, कभी नहीं कर सकती है। न पूर्व में किया है और न भविष्य में करेगी। सैक्युलरिज्म का मतलब है, सभी धर्मों के साथ समान आदर, सभी मजहबों के समान आदर, सारे नागरिक किसी भी मजहब के अनुयायी हों, उनके लिए समान न्याय, समान सुरक्षा। सिक्योरिटी और सैक्युलरिज्म हमारे संविधान के हिस्से हैं। यह सरकार पूरी तरह से उनके प्रति प्रतिबद्ध है। इसमें कभी कोई विचलित होने का कारण नहीं है। दुनिया भर में आपने प्रचार किया और मुझे दुःख हुआ, आज जब शरद पवार जी ने ईसाई के मसले को उठाकर दुनिया को यह बताने की कोशिश की कि ईसाइयों के ऊपर बड़े अत्याचार हो रहे हैं

... (व्यवधान)

मैं इसका जवाब एक बार विस्तार से दे चुका हूं, फिर नहीं दूंगा। लेकिन इतना जरूर कहूंगा कि कम से कम छः घटनायें दुनिया भर में ऐसी प्रचारित हुईं, जिनका आधार ही नहीं था, तथ्य ही नहीं था।

झाबुआ की घटना से, बारीपद में किसी नन के बलात्कार की घटना से लेकर जो क्रम शुरु हुआ, ये सारे प्रकरण गलत साबित हुए। ये कहीं नहीं छपे, इनका कॉन्ट्राडिक्शन नहीं छपा।

... (व्यवधान)

मैंने कहा कि ऐसी छः घटनाएं हुईं, इलाहाबाद, उड़ीसा आदि अन्य जगहों पर हुईं। इन सारी घटनाओं में मैं यह स्वीकार करूंगा कि ये जो घटनाएं हुई हैं वे नहीं होनी चाहिए। सरकार का काम है कि कहीं पर भी किसी के साथ अन्याय एवं अत्याचार न हो, खास कर अगर अल्पसंख्यकों पर अत्याचार होता है तो मेरी सरकार को अपने को जिम्मेदार मानती है, हमारा उनके प्रति खास दायित्व है। लेकिन जिस प्रकार से अत्याचार हुए हैं उनसे यह संशय पैदा होते हैं, जिनकी मेरे मित्र जार्ज फर्नान्डीज़ ने अभिव्यक्ति की, मैंने नहीं की, क्योंकि उन्हें लगा कि मैं कहूंगा तो कोई इस प्रकार का आरोप नहीं लगेगा। ऐसा लगता है कि इसके पीछे कोई षडयंत्र है और इसलिए सरकार ने पहली बार हिन्दुस्तान के इतिहास में एक घटना को लेकर ऐसा किया। एक आस्ट्रेलियन नेशनल थे, जिनके दो बच्चों की हत्या हुई। उन्हें जिन्दा जलाया गया, वह बड़ा भयंकर भीषण कांड था। हमने कहा कि इसके लिए साधारण कमीशन ऑफ इंक्वायरी नहीं, बल्कि जैसे राजीव गांधी जी की हत्या के समय कमीशन ऑफ इंक्वायरी बनाया गया था कि सुप्रीम कोर्ट का सिटिंग जज होगा वैसे हम लेंगे। हमने विशेष रूप से मुख्य न्यायाधीश श्री आनन्द से अनुरोध किया कि यह घटना ऐसी है इसलिए इस घटना के कारण हम आपसे निवेदन करने आए हैं कि आप किसी सिटिंग जज को स्पेयर करिए। उन्होंने कहा कि मेरे पास वैसे ही सीटिंग जज कम हैं, मैं किसी रिटायर जज को ले लूंगा, आप सिटिंग जज का आग्रह क्यों करते हैं। तब हमने कहा कि नहीं, हम इस बारे में विश्वसनीयता पैदा करना चाहते हैं इसलिए आप सीटिंग जज को स्पेयर करिए। उन्होने हमारी बात को माना और अब एक सिटिंग जज उसकी जांच कर रहा है। मैं उसके बारे में इस समय अन्य कुछ नहीं कहूंगा, सिवाए इसके कि जहां तक यह सरकार है, इस सरकार को इस बात का गर्व है कि पिछले दस सालों में १९८९ से लेकर १९९८ तक कभी भी साम्प्रदायिक घटनाएं इतनी कम नहीं हुईं, साम्प्रदायिक दंगे नहीं हुए, जिस प्रकार १९९८ रहा।

This year 1998 has been a riot-free year by and large.

मैं आपको बताना चाहता हूं कि इस सदन में से कोई वैकल्पिक सरकार नहीं उभर सकती, यह कांग्रेस पार्टी का भी कंविक्शन है। इसलिए ये सब को उकसा रहे हैं कि चलो, आपकी सरकार बन जाएगी, देवेगौड़ा की बन जाएगी, थर्ड फ्रंट बना ले, हमारी बना लो, हमें बाहर से समर्थन करो, उन्हें पता है कि कोई बाहर से समर्थन करके आपकी सरकार नहीं बनाएगा। इसलिए आप पहले हमारे साथ मिल कर इस सरकार को हटा दो। अगर कोई प्रमाण देना था तो शरद पवार जी के उत्तर में देना था। जैसे लालू प्रसाद जी ने कहा कि एक मिनट लगेगा, हम बैठ कर फैसला कर लेंगे।

... (व्यवधान)

यह तकलीफ आपको नहीं करनी पड़ेगी, यह मैं विश्वास दिलाता हूं। मैं अपने डीएमके के मित्रों का आभारी हूं, जिन्होंने सारी स्थिति को पहचान कर सही तरीके से निर्णय किया कि हमें चाहे जितना भी कठोर कदम उठाना पड़े लेकिन हम निश्चित रूप से देखेंगे कि यह जो सरकार को गिराने का षडयंत्र है वह विफल हो। मैं उनको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। आज तक तो हम समझते थे कि हिन्दुस्तान की राजनीति में हमें अछूत बनाने का प्रयत्न ... (व्यवधान)

SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): The same DMK told that they will not allow this pandaram and pardesi to enter Tamil Nadu. ....(Interruptions) The same DMK called them pandaram and pardesi. ....(Interruptions)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मुझे तब बहुत अच्छा लगा जब आज से दो दिन पहले इन्होंने मार्कसवादी पार्टी का वक्तव्य देखा।

हम अन्नाडीएमके के साथ नहीं जायेंगे। मैंने यह कहा कि यह क्या हो गया, क्या विचित्र बात हो गई। आज अन्नाडीएमके भी अनटचेबल हो गया। हमारे लिए कोई पार्टी अनटचेबल नहीं है, मार्कसवादी भी नहीं है। हिन्दुस्तान की राजनीति डैमोक्रेटिक राजनीति है। हम किसी को भी अनटचेबल नहीं मानते हैं। यह अनटचेबल एप्रोच आपकी हो सकती है, कभी और किसी की हो सकती है, कभी कांग्रेस की भी हो सकती है। हमारे यहां हमको पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने आइडियोलोजी की शिक्षा दी । उन्होंने १९६६ में जब पटना, बिहार में कम्युनिस्ट और हमारी मिलकर सरकार बनी थी, तो हमारे कुछ डैलीगेटस ने कालीकट में कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी यह आपने क्या किया, यह कैसे स्वीकार किया कि कम्युनिस्ट और जनसंघ दोनों एक ही में रहें? उन्होंने कहा कि यह जो सरकार बनी है,

एक कार्यक्रम के आधार पर बनी है। हम कम्युनिस्टों से आइजियोलोजिकली मदभेद रखते हैं, लेकिन उससे पहले हम उनके साथ बैठेंगे नहीं, उनके साथ मिलकर काम नहीं करेंगे, उनके साथ राष्ट्र या बिहार के हित में कोई कार्यक्रम बनाकर उसको कार्यान्वित नहीं करेंगे, यह अस्पृश्यता का कार्य है, यह कभी कोई जनसंघ का व्यक्ति न मानें। ये उनके शब्द थे कि बड़ी विडम्बना है कि सामाजिक क्षेत्र में अस्पृश्यता को पाप माना जाता है, अपराध माना जाता है, लेकिन राजनीतिक क्षेत्र में कुछ दल है, जो कहते हैं कि इसको अगर अस्पृश्य नहीं मानों, तो तुम पाप करते हो। इसलिए इसको अस्पृश्य मानो। मैं अन्नाडीएमके, डीएमके, कम्युनिष्ट पार्टी, मुस्लिम लीग को या किसी को भी अस्पृश्य नहीं मानता हूं। लेकिन हम यह मानते हैं कि इस समय देश की राजनीति जिस स्थान पर पहुंची है, उसमें से यह जो कल्पना कांग्रेस पार्टी करती है कि हमको स्पष्ट बहुमत मिल जाएगा, बहुत बड़ी गलतफहमी में है। उत्तर प्रदेश में तुम्हारा क्या हाल है और बिहार में क्या हालत है, यह किसी से छिपी नहीं है। आज अगर लालू प्रसाद जी आपके साथ हैं, तो केवल इसलिए कि ऋण चुका रहे हैं, कर्जा चुका रहे हैं और अभी आपने उनको बचाया है। अन्यथा, उनका मेल आपके साथ नहीं है। वे कोशिश करेंगे कि आपका तिल भर भी वहां न हो और उनको पता है कि आपका वहां कुछ है नहीं, इसलिए आपका साथ दे रहे हैं। मुलायम सिंह जी को थोड़ी चिन्ता है, सपा को थोड़ी सी चिनता है कि वे क्या करेंगे। मैं नहीं जानता हूं, लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूं कि उत्तर प्रदेश और बिहार में जितनी आपकी दुर्गति है, उसके आधार पर यह कल्पना करना कि आपको स्पष्ट बहुमत मिलेगा, यह कोरी कल्पना है और इस परिस्थिति से कुछ नहीं होना है। हां, इससे अच्छा होता कि आप सबको साफ कहते कि आज से छः महीने पहले जो स्थिति थी, लेकिन अब सरकार की लोकप्रियता खत्म हो रही है और यह नान-परफोर्मेंस गवर्नमेंट है। इन पिछले तीन-चार महीने में जिस प्रकार से इस सरकार ने लाहौर की बस यात्रा की, जिस प्रकार से बजट पेश किया, जिस प्रकार से बिहार के बारे में किया, जिस प्रकार से टैक्नोलाजी के बारे में कदम उठाए, जिस प्रकार से यह स्थिति लाकर खड़ी कर दी है कि बर्लड बैंक को कहना पड़ा कि -

"India is now the most sought after destination in this region."

वर्लड बैंक की रिपोर्ट में कहा गया है कि इस बार इस रीजन में जितना इन्वैस्टमेंट हुआ है, उसमें से ८० प्रतिशत भारत में हुआ है। इन सारी चीजों को देखकर आपको लगा कि स्थिति धीरे-धीरे बदल रही है और यह सरकार चलने लगी तो दो-चार महीने में यह सरकार ऐसी स्थिति कर लेगी, जब तक आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक में चुनाव आयेंगे, तो कांग्रेस का सफाया हो जाएगा, इसलिए जितनी जल्दी इस सरकार को गिरा सको, उतना अच्छा है। आप सबको कहते हैं कि चाहे आप अपनी सरकार बना लो, हम सरकार बना लें, कोई सरकार बना लें, कोई-न-कोई सरकार बननी चाहिए। इनकी नीयत है कि यह सरकार जाए और जल्दी से जल्दी चुनाव हों। इस नीयत को पहचाना चाहिए। मुझे विश्वास है कि आप सभी लोग सोचेंगे और विचार करेंगे और इनको कहेंगे कि विकल्प प्रस्तुत करे। जो विकल्प प्रधान मंत्री जी ने बताया है कि आप क्या करना चाहते हैं, वैसा विकल्प साकार होने वाला नहीं है, क्योंकि मैं समझता हूं कि बहुमत आज भी इधर है।

वह बहुमत शीघ्र प्रमाणित होगा, कल होगा, परसों होगा, वह तो अध्यक्ष पर निर्भर है। मैंने कुछ बातें नहीं कहीं हैं क्योंकि मुझे विश्वास है कि हमारे प्रतिरक्षा मंत्री, वित्त मंत्री, हमारे अन्य सहयोगी इन सारी बातों पर प्रकाश डालेंगे, जिनका जिक्र शरद पवार जी ने किया है। मैं कांग्रेस से ज्यादा अपेक्षा नहीं करता, मार्क्सिस्टों से ज्यादा अपेक्षा नहीं करता लेकिन और सभी से अपेक्षा करता हूं कि इस बात पर गंभीरता से विचार करिये कि क्या यह उचित होगा

... (व्यवधान)

मार्क्सिस्टों से तो मैं अपेक्षा करता ही नहीं हूं, थोड़ी बहुत सी.पी.आई. से करता हूं, वह कभी-कभी समझदारी की बात करते हैं, बाकी कांग्रेस की तो दयनीय स्थिति है।

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): You are against principled politics.

श्री लाल कृष्ण आडवाणीः इनकी स्थिति मैं समझ सकता हूं, अच्छी तरह से समझ सकता हूं, विपक्ष के नेता हैं, मैं उनके बारे में क्या कहूं। मैं इतना ही कहूंगा कि आप इस पर पुनर्विचार कर सकते हैं। जो अप्रोच आज से ६ महीने पहले आपने अपनाई थी और जिसकी प्रतिध्वनि हमको आपके पंचमढ़ी के प्रस्ताव में मिली थी, उसमें कुछ सूझबूझ लगती थी, कुछ बुद्धिमत्ता लगती थी। उस आधार पर आप चलेंगे तो आप देश के लिए अधिक योगदान कर सकेंगे। जो इस समय नैगेटिव पॉलटिक्स आप खेल रहे हैं, वह देश के लिए तो अहितकर है ही, आपकी पार्टी के लिए भी अहितकर है। मैंने जो बात बिहार के बारे में कही थी

... (व्यवधान)

मैंने बिहार के बारे में कहा था कि आप बिहार में लालू प्रसाद जी की सरकार को वापस बैठा रहे हैं, वह बिहार के लिए अहितकर होगा और मेरी पार्टी के लिए लाभकर होगा। लेकिन मैं आपसे कहता हूं कि मेरी पार्टी का अहित करते हुए भी आप बिहार और देश का भला करें। उसी प्रकार से मैं आपसे कहता हूं कि आप पुनर्विचार करिये। शरद पवार जी ने कुछ भी कहा हो लेकिन अगर आज शिवशंकर जी फैसला कर लें कि हम आज वाजपेयी जी की सरकार का समर्थन करेंगे तो स्थिति बदल जाएगी। इनका वजन ज्यादा है, शरद पवार जी का वजन नहीं है। शरद पवार जी तो औपचारिक रूप से विपक्ष के नेता हैं, असली तो यह हैं और अगर असली आदमी अपनी बात कह दे तो सारा वातावरण बदल जाएगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं बहुत जोरदार ढंग से वाजपेयी जी के प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और सदन से अनुरोध करता हूं कि वह भी इसका समर्थन करे।

(इति)

१२४३ बजे

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : अध्यक्ष महोदय, माननीय प्रधान मंत्री जी जो विश्वास का मोशन लाए हैं उसके विरोध में बोलने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं। माननीय प्र धान मंत्री जी ने बोलने से पहले पूरे प्रतिपक्ष से जानना चाहा कि क्या विकल्प है, कैसी सरकार आप बना रहे हैं, थोड़ा हमको बता दीजिए ताकि बाद में भी हम अ पना काम चला लेंगे। मैं प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देता हूं कि वे एक चिंतनशील व्यक्ति हैं। आज से चार दिन पहले माननीय प्रधान मंत्री जी ने अग्नि परीक्षण के समय शाम को राष्ट्र को संदेश दिया था। एकाएक जब हम लोगों ने सुना कि प्रधान मंत्री जी राष्ट्र को संबोधित करने वाले हैं तो सब कार्यक्रम छोड़कर हम लोग टी.वी. के सामने बैठ गये और हम लोग इंतजार में थे कि वे चिंतनशील व्यक्ति हैं,

१२४५ बजे (उपाध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

गलत कुसंगति में फंसे थे। अभी चेतना जगी। जैसे रहीम ने कहा ' जो रहीम उत्तम प्रकृत्ति का करि सकत कुसंग, चंदन विष व्यापत रहे लिपटे रहत भुजंग।' इसका यह मतलब हुआ कि जो अच्छे इंसान होते हैं, अगर वे गलत कुसंगति में फंस गए तो उनके ऊपर कोई असर नहीं होता है जैसे चंदन को विषधर लपेट लेता है तो भी चंदन पर उसका असर नहीं होता है लेकिन देश का दुर्भाग्य है कि नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाले, हम जैसे लोगों को बताने वाले इस बात को नहीं समझते। सत्ता ऐसी चीज होती है, सत्ता की भूख ऐसी होती है, न जाने कितने राजा-महाराजा और रूलर देश में आए और बोलते चले गए कि हम धरती पर कब्जा कर लेंगे, हम किसी को आने नहीं देंगे। रावण भी आए और उन्होंने कहा कि वह स्वर्ग में सीढ़ी लगाएंगे लेकिन धरती ज्यों की त्यों है और खामोश है। यह मन इतना मतवाला है

... (व्यवधान)

उसमें हम सब लोग हैं

... (व्यवधान)

मुझे अफसोस है कि आप जा रहे हो। कहीं मेरे गफूर चाचा बैठे हैं, कहीं मेरे भाई नीतीश कुमार जी बैठे हैं। अब धर्म-अधर्म की बारी आई है। हमें आज आप लोगों की पीठ पर गदा चलाना पड़ा है। चिन्ता मत करो। यह मन मतवाला है। कहीं हमारे गुरु जार्ज साहब बैठे हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी, यह मन मतवाला है, भोला है, ठुमक-ठुमक कर थिरकता है चाहे होली हो या कुछ और हो। जब आप थिरक रहे थे, हम कपड़ा फाड़ कर पटना और दिल्ली में गा रहे थे। धरती ज्यों की त्यों है और खामोश है। इस देश में सूफी-संत आए। अभी आडवाणी जी सूफी-संत की तरह पाठ पढ़ा रहे थे। आपने सोचा नहीं, आपका सत्यानाश कैसे हुआ और किस ने किया? उन दिनों में सूफी-संत हुए और भटकते इन्सान को, मतवाले इन्सान को जो बांध को बांध नहीं समझते, दूसरे की मां को मां नहीं समझते और दूसरे के बाप को बाप नहीं समझते तथा प्रणाम नहीं करते। सूफियों और मौलवियों ने कहा कि दौलत, दुनिया माल खजाना, सब यहीं रह जाएगा, इन्सान मुट्ठी बंद कर आया, हाथ पसारे चला जाएगा लेकिन मन मानता नहीं। रीता वर्मा जी, अब आपका स्वाभिमान जगना चाहिए। उन्हें डिप्टी स्पीकर भी लोग नहीं बना सके।

... (व्यवधान)

प्रो. रीता वर्मा (धनबाद): आप भी हाथ पसारे ऊपर जाएंगे।

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : हमने १३ महीने के शासन में इनकी दशा देखी लेकिन हमारे गुरु जार्ज साहब के कपड़े-लत्ते में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

आप देखते हैं कि हम लोग टाइट कपड़ा पहनकर आते हैं और जॉर्ज साहब का पोशाक देख लीजिये लेकिन जब बिहार जाते हैं तो आप वहां की पोशाक देख लीजिये। अब उनकी यह स्थिति रह गई है, अब उनका क्या दोष हो सकता है? आखिर उनका और रयूमर फ्लोटिंग सेंटर का जो मिलन हुआ है, यह बहुत सोच-समझकर हुआ है। जॉर्ज साहब की भ्रष्टाचार के बारे में जो सोच है और हम लोगों को बताते रहते हैं, जेल भिजवाते रहे हैं। राबड़ी देवी एक महिला मुख्यमंत्री हीं और जिसका नाम मुकदमे में न हो, फिर भी अपमान कराते रहे हैं। मेरे साथ राबड़ी माननीय प्रधानमंत्री जी से मिलती हैं। प्रधानमंत्री जी ने माना कि बहुत गलत काम हुआ है और आपने कहा था कि मैं फिर आऊंगा। आपने यह कहा था कि दुनिया में सबसे बड़ा काम पशु-पालन का है। यहां सारे लोग बैठे हुये हैं, दूध का दूध और पानी का पानी होगा। इस मुल्क में कौन बचा है और कौन बेदाग बैठा हुआ है। मैं इस चीज से छेड़छाड़ करके किसी के खिलाफ नहीं जाना चाहता हूं लेकिन बातें दबाई नहीं जा सकती हैं। चाहे जितनी बातें टी.वी. पर थापर साहब से कह डालें, बात दबती नहीं है, अभिलेख मिटता नहीं है। माननीय प्रधानमंत्री ने चिन्ता जतायी लेकिन गृहमंत्री जी ने आपका ग्रह खराब किया। आप मतवाले की तरह हैं। इसमें आपका ज्यादा दोष नहीं है। मैं किसी का अपमान करने के लिये नहीं कहता हूं।

उपाध्यक्ष जी, मेरा जन्म गोपालगंज जिला कें फुलवड़िया गांव में हुआ। गांव में हम लोगों को मालूम नहीं कि हमारे भविष्य में क्या लिखा है। गोसाईं लोग एक ऐसा पशु बैल रखते थे जिसकी आंख पर माशा, पीठ पर पैर है, छोटा नाटा, जिसे उत्तर प्रदेश में नादिया कहते हैं लेकिन हमारे बिहार में बसाह बैल कहा जाता है यानी भोले बाबा, शंकर बाबा का अवतार बसाह कहते हैं। गोसाईं उसी बैल पर कपड़ा औढ़ाकर, गेरूआ वस्त्र पहनकर, हजारों सफेद कौड़ियां लगाकर रखता है और घुमाते रहते हैं।हमारे साधू बाबा यहां बैठे हुये हैं जो इसी रूप में आते हैं। वह बसाह बेचारा गरीब है। उनके गांव में घूमते हैं। एक दिन मेरे गांव में आया और मेरी मां बैठी थी, उसने कपड़ा धरकर बैठा दिया। मेरी मां ने पूछा, बाबा मेरे बेटे के भाग्य में क्या लिखा हुआ है। मैं अकेला नहीं हूं, गांव से लाखों लोग आते हैं जिन्हें इस बात की जानकारी है। गोसाईं बाबा दोनों हाथ की मुट्ठी बांधकर पूछते हैं नौकरी मिलेगी या नहीं? इसमें नहीं मिलेगी तो जब दोनों मुट्ठी आगे करते हैं और गोसाईं बोले देखो भोले इस हाथ में क्या लिखा है। बैल का स्वभाव है कि जब मुट्ठी आगे बढ़ाइये तो वह समझता है कि उसे खाने को कुछ दे रहे हैं। कभी बांये और कभी दायें हाथ को चूमता है। तब भोला बाबा समझ आता है कि वह हमें ठग रहा है. तभा गौसाईं बोलता रहता है, पीठ ठोंकता रहता है जब हाथ नहीं चूमता तो गोसाईं पीछे से कोदता है और बसाह घंटी झनझनाता है।

आप कभी-कभी बढ़ते थे कोई काम करने के लिए, लेकिन फिर रिवर्स गियर में चले जाते थे। जो नादिया का हाल रहा वही १३ महीने में आपका हाल हो गया। १३ महीने में आपको एक मौका था। आप कांग्रेस की बात करते, सी.पी.आई. सी.पी.एम. की बात करते। जार्ज साहब वहां बैठे हैं। सन् १९७७ में छपरा से मैं एम.पी. बनकर लोक सभा में आया था। हम सब लोग एक साथ थे। सभी लोग आंदोलन में थे। आप लोग भी जेल में थे और हम लोगो भी जेल में थे। कांग्रेस के खिलाफ हम लोग लड़े थे। उस समय यशवन्त बाबू जेल में नहीं थे जो वित्त मंत्री हैं। थे क्या आप जेल में?

... (व्यवधान)

कभी जेल नहीं गए। आप तो बिना हारे कोई न कोई पद ले ही लेते हैं। चाहे उधर हों या इधर हों, दोनों पार्टियों में। उसमें आप अकेले नहीं हैं। दिल्ली में ऐसे बुद्धिजीवी लोग हैं। बुद्धि नहीं है लेकिन बुद्धि से जी रहे थे। खैर छोड़िये उन बातों को, ज्यादा आपको टॉर्चर करने की ज़रूरत नहीं है।

महोदय, मैं बताना चाह रहा था कि ये जार्ज साहब हैं। सन् ७७ में हम लोगों को दिल्ली समझ में नहीं आई। दिल्ली में हम लोग जब आए तो राजनारायण जी, जार्ज साहब, चौधरी चरण सिंह जी थे। हम लोग उसी परिवार के लोग हैं, चाहे मुलायम सिंह जी हों या और कोई हों, या नीतीश जी जो उधर चले गए हैं। हमारे मुंह में सीधे ३२ दांत हैं, मगर नीतीश जी के पेट में दांत हैं जो उधर चले गए हैं। पेट वाला दांत बड़ा खतरनाक होता है। तो महोदय, मैं सन् ७७ की याद दिलाना चाहता हूं। हम तो आपसे लड़ाई शुरू से लड़ रहे हैं, यह नयी बात नहीं है, किसी कारण से नहीं। जनता पार्टी का खंड-खंड हुआ, कोई यहां गिरा, कोई वहां गिरा। बंगलौर में हम लोग जुटे तो नाम का सारा झगड़ा हो गया। लेकिन सन् ७७ की सत्ता को हम लोगों ने लात मारी थी। क्यों मारी? हम सत्ता के भूखे नहीं हैं। हमने उस स वाल को उठाया था।

... (व्यवधान)

अरे, आप नये नये मेम्बर आए हैं, मुझे अफसोस है कि आप लोग इन लोगों की वजह से जा रहे हैं। सन् ७७ में दोहरी सदस्यता का सवाल हम लोगों द्वारा मज़बूती से उठाया गया कि आर.एस.एस. में रहना है या जनता पार्टी में रहना है। जार्ज साहब भी बोलते थे, छाती पर हाथ रखकर बोलें कि इन्होंने ही यह बात उठाई थी। हम लोग तो नये थे। उन्होंने कहा था कि या तो आर.एस.एस. में रहिये या जनता पार्टी में रहिये। दोहरी सदस्यता इस मुल्क में नहीं चलेगी और देश के सेक्यूलर कैरेक्टर फाउंडेशन को हम लात नहीं मारेंगे। आपको याद होगा इसीलिए हम लोग टूटे। हम लोगों ने नारा दिया ठचरण नहीं तो चुनाव' और हम लोग चुनाव में गए। हमारी लड़ाई आपसे है। आपने कहा अब बताइए हिन्दुत्व-हिन्दुत्व और हिन्दू-हिन्दू का कौन विरोध करता है? हम लोगों के पुरोहित आडवाणी जी कैसे हो सकते हैं? यह हमारे पंडित कैसे हो सकते हैं? हमारी मां-बहिन, गांव गृहस्थ के सारे लोग पंडित से पूजा कराते हैं। यह ठेका आपने कैसे ले लिया? आज इस देश का सेक्यूलर कैरेक्टर सेक्यूलरिज़म है। इसलिए राबड़ी देवी गांव की बेटी मुख्य मंत्री बनती है। देश की एकता-अखंडता के मामले में जब नाक तक पानी आया तो हमसे मीडिया के लोगों ने पूछा कि क्या करोगे। हमने एक कैलेण्डर कह दिया चूंकि वह रोज़ बोलते थे दिल्ली में कि नहीं-नहीं, जयललिता जी से पैच अप हो गया।

लालू और मुलायम में विगत दिनों में लड़ाई हो गई, कोई कुछ कहता है तो कोई कुछ कहता है। चूंकि हम पहले बोल देते थे। लेकिन इस बार हमने साइंटिफिक तरीके से काम किया है, चूंकि साइंस और टैक्नोलोजी का युग है। आप जनता पहनावा छोड़कर अग्नि में प्रवेश कर गये और पोखरण विस्फोट किये तो हम लोगों ने भी अपने साइंटिफिक तरीके का इस्तेमाल किया। आप पूछ रहे हैं क्या रूप होगा, क्या रंग होगा, इसमें रंग अजूबा होगा, इस रंग का कोई जवाब आपके पास नहीं होगा। आप जाइये। अभी भी आपको मेरा सुझाव है, हालांकि आपकी उम्र के आदमी को सुझाव देने का हकदार हम अपने को नहीं समझते। लेकिन माननीय प्र धान मंत्री जी आपने कहा था कि पूरे देश के कांग्रेस के लोगों को विन ओवर करने के लिए, सिम्पैथी लेने के लिए नेहरू जी ने कहा था कि अटल एक दिन तुम देश के प्रधान मंत्री बनोगे। यह लिखा हुआ है, रिकार्ड में है, आपने कहा था। तो आप एक बार नहीं दो बार प्रधान मंत्री हो गये। नेहरू जी एक बार बोले, आप दो बार प्रधान मंत्री हो गये, अब तो मुल्क की जान छोड़िये।

आप हम लोगों को पाठ पढ़ाते हैं। आडवाणी जी उठकर चले गये, आप हमें पाठ पढ़ाते हैं, हमें शिक्षा देते हैं। जो हमारे मुल्क के आदरणीय चोटी के नेता थे जिनमें नेहरू जी, लोहिया, जयप्रकाश नारायण और बहुत सारे अग्रिम पंक्ति के नेता थे, उन्होंने आपको जरूर आशीर्वाद दिया और उनके आशीर्वाद से आप दो बार प्रधान मंत्री हो गये। लेकिन अभी आपने इसी हाउस में अपने कार्यक्रमों की जो घोषणा की थी उसमें आपने जवाहर रोजगार योजना को क्यों मिटा दिया, रीनेम क्यों कर दिया, सारी चीजों को कम्पाइल क्यों कर दिया, इंदिरा आवास को आपने क्यों रीकम्पाइल कर दिया? आप इतिहास को मिटाकर देश की जनता को लालच दिखाकर आर.एस.एस. की संस्कृति लादना चाहते हो

... (व्यवधान)

सत्ता में कौन क्या होगा, कौन मंत्री हो, किसका मंत्री हो? मंत्री आयेंगे और जायेंगे, लेकिन मुल्क एक बार मुट्ठी से निकल गया तो फिर बात संभाल से बाहर हो जायेगी। इसलिए मेरा निवेदन है कि आप वोटिंग से पहले सीधे राष्ट्रपति भवन चले जाइये, आपने पहले भी यह काम किया है, ये लोग घेर-घेरकर आपका अपमान करवा रहे हैं, कह रहे हैं कि जीत जायेंगे, जीते कहां, आप तो हार चुके हो, आप गलतफहमी में मत रहना। यदि वोटिंग हुई तो इस बार वोटिंग खड़े होकर होगी, हम लोग टैक्नीकल काम में नहीं जायेगे। उस बार आपने भी गलती कर दी थी और हमारा बटन भी गलत दब गया था। इसलिए मेरा निवेदन है

... (व्यवधान)

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूरी, एवीएसएम (गढ़वाल) : जब एक बोगस वोट पड़ी थी, उसका क्या हुआ?

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : अब की बात ऐसी दुरुस्त वोट पड़ रही है कि आपको हमेशा के लिए याद रहेगी। इसलिए मैंने कहा कि इस बार पीला, लाल, हरा कागज नहीं होगा। जॉर्ज साहब को देखिये, देवेगौड़ा जी पीछे बैठे हैं, नीतीश जी, भाई रामविलास पासवान जी भी बैठे हैं। हमने कहा कि सोनपुर में जब गंगा पर पुल नहीं बना तो वहां पर देश प्रधान मंत्री जी को ले जाकर क्यों उदघाटन करवा दिया। नीतीश जी ने स्वीकार किया। पहले जहां बिहार शरीफ में प्रधान मंत्री जी गये। यह नीति है, हमारी पॉलिसी है कि कोल पीठ जहां होगा, वहीं थर्मल होगा।

उपाध्यक्ष महोदय, औरंगाबाद में बिजली का प्रोजैक्ट था। हमारे मित्र श्री लोटन सिंह के पुत्र श्री राम नरेश भाई वहां से समता पार्टी के सांसद हैं। वहां जाकर देखिए आज समता पार्टी की क्या हालत है क्योंकि वहां से बिजली के कारखाने को नीतीश जी बाढ़ में ले गए। बाढ़ में जहां वाटर लागिंग की समस्या है, वहां थर्मल पावर नीतीश जी कैसे लगाएंगे? प्रधान मंत्री जी, नीतीश जी आपको लेकर वहां चले गए और उदघाटन करा दिया। हमने प्रधान मंत्री से कहा और मुख्य मंत्री मंहोदय के माध्यम से सुझाव दिया कि राजेन्द्र सिंह जी से पूछो कि यह प्रोजैक्ट कब बनेगा, इसके लिए कितने पैसे का प्रावधान किया गया है? मेरे कहने का मतलब यह है कि जो हम कर सकते हैं वही काम हमें करना चाहिए। इस प्रकार से बिहार को कितना ठगा जाएगा बताइए?

महोदय, अभी १४ तारीख को नीतीश जी, जार्ज साहब को लेकर राजगीर चले गए। राजगीर-नालंदा, हमारा वह पवित्र स्थान है जहां जरासंध का अखाड़ा है। वह ि वद्या का केन्द्र है, वहां शांति स्तूप है। इन्होंने वहां जाकर घोषणा कर दी कि वहां हम आर्डिनेंस फैक्ट्री लगाएंगे। जब आपको मालूम है कि आपकी विदाई हो रही है, तो आपको यहां एम.पी.वगैरह से आकर बात करनी चाहिए थी और अपनी सरकार को बचाने का प्रयास करना चाहिए, लेकिन आप नालंन्दा (बिहार) चले गए। वहां की मुख्य मंत्री श्रीमती रावड़ी देवी को भी आपने मुख्य अतिथि के रूप में आने के लिए निमंत्रण भेज दिया। जैसे पहले बिहार में जितने भी उदघाटन हुए हैं वे काम पूरे हो गए हों। मेरा कहना है कि बिहार में हुए उदघाटनों में से अधिकांश काम अभी तक पूरे नहीं हुए है। फिर क्यों बिहार के लोगों को ठगने का काम किया जाता है?

महोदय, भारत में फैडरल गवर्नमेंट है, संघीय प्रणाली है और एक राष्ट्रपति है। सुप्रीमेसी पार्लियामेंट की है। इसमें क्षेत्रीय पार्टियों को मजबूत करने की जहां तक बात है, मैं कहना चाहता हूं कि आप उदघाटन करने जा रहे हैं और उस प्रदेश की मुख्य मंत्री को पता नहीं है। यह कैसे चलेगा? आप कब तक इस प्रकार से बिहार के लोगों को ठगते रहेंगे? बहन ममता जी के लिए बंगाल में आपने जो पैकेज दिया है, उस पर कहां तक कार्य हुआ है, उसके बारे में वे बताएंगी। इस प्रकार से आप बार-बार और जगह-जगह उदघाटन कराके देश और विशेषकर बिहार की जनता को कब तक धोखे में रखेंगे? हमने हमेशा कहा है कि बिहार के लोग हमेशा ठगे जाते रहे हैं। आप बताइए आयुध कारखाना जहां लगता है, वहां पर सफीशिएंट वाटर होना चाहिए, लेकिन वहां पानी है ही नहीं और आप आयुध कारखाना लगाने का उदघाटन करने जा रहे है। इस प्रकार से आप बिहार की जनता को कब तक बुद्धू बनाते रहेंगे? अब आपकी गवर्नमेंट जाने वाली है और आप कह देंगे कि हमने तो आयुध कारखाना खोल दिया था, लेकिन हमारी सरकार चली गई या इन लोगों ने हमारी सरकार को हटा दिया। इस बार फिर जोर लगाओ और हमारी सरकार लाओ, तो हम फिर कारखाना खोल देंगे। देश की भोलीभाली और विशेषकर बिहार की जनता के साथ इस प्रकार से धोखा नहीं होना चाहिए। इसलिए मैं जार्ज फर्नान्डीज साहब से पूछना चाहता हूं कि आयुध कारखाने के लिए कितने धन का प्रावधान किया गया है, कब वह तैयार होगा, कितने लोगों की जमीन ली जाएगी, उनके पुनर्वास की क्या व्यवस्था होगी?

महोदय, आप वहां आयुध कारखाना खोलने जा रहे हैं और यहां से निकलिए, मोदीनगर से मुजफ्फरनगर तक, हमारे मुलायम सिंह यादव जा रहे थे, वहां रैली निकल रही थी, पूरा मोदीपुरम स्वदेशी के नारों से पैक था। नारे लगाए जा रहे थे कि भारत अपने पैरों पर खड़ा है और अमरीका की परवाह नहीं करता, इकनौमिक सैंक्शन्स की परवाह नहीं करता। हम भारत को अपने पैरों पर खड़ा करेंगे, अपनी रक्षा स्वयं करेंगे और अपना विकास करेंगे, लेकिन आज क्या स्थिति है, आज आपने भारत की जनता को वाशिंगटन के हाथों में कैद कर दिया है।

सारी स्वदेशी मिलें, कल कारखाने बंद हैं। बड़े पैमाने पर जो मजदूर हैं, गरीब हैं, उनकी गरीबी और गुरबत बढ़ रही है। अन्य चीजों में, कन्ज्यूमर गुडस के बारे में, अगर इनका शासन एक क्षण भी इस मुल्क में रहता है, तो न जाने कितना खामियाजा इस देश के मइनौरिटीज को, जो सर्वहारा हैं, उन सर्वहारा के देश के ऊपर हमला होने वाला है चाहे किसान हो, मजदूर हो। जो भारत के बेटे और बेटियां हैं, आपने कहा था कि कम से कम हम पीने के पानी का प्रबंध कर देंगे। जिस समय आपका सम्बोधन हो रहा था, पीने के पानी के सवाल पर अखबार वालों ने लिखा कि आगे लड़ाई है। देश के मोहल्ले-मोहल्ले में पानी के सवाल पर हम लड़ेंगे, लड़ाई होगी। आपने पानी का प्रबंध नहीं किया है। पूरे १३ महीने में सारे लोग जो बोलते थे कि हम सादगी वाले लोग हैं, ब्रहमचारी लोग हैं, हमको सत्ता की परवाह नहीं है। इन १३ महीनों में सत्ता की भूख में आपका सारा ब्रहमचार्य टूटा है। आडवाणी जी, हम लोगों के ऊपर यह तोहमत मत मढ़िये कि आप में और वाजपेयी जी में दरार हम लोगों ने पैदा की है। सत्ता ऐसी है, सत्ता की भूख ऐसी मतवाली है कि न जाने कितनी दरारें और टुकड़े आप में हो चुकी हैं। आप अपने भीतर निहारकर नहीं देख रहे हैं। आप लोगों को बता रहे हैं, आपने कहा कि हम मंत्रिमंडल का विस्तार करेंगे। ये लोग बैठे हुए हैं। हमारी बहन ममता बनर्जी कोई मामूली आदमी नहीं हैं। वह मजबूत आदमी हैं। उनकी ताकत है कि वे जहां से लड़कर आयें, ममता जी ने कहा था कि अगर आप हमें मंत्री बनाते हैं तो हम रेल मंत्रालय लेंगे। नीतीश जी बोले कि हम रेल मंत्रालय नहीं छोड़ेंगे तब जार्ज साहब चाकरी करने चले गये कि भाई सरकार टूट जायेगी, नीतीश जी आप मान जायें। नीतीश जी ने जार्ज साहब को कहा कि खबरदार, फिर बिहार से लड़ना नहीं है क्या?

... (व्यवधान)

यह स्थिति है। अभी आपने शुकनी चौधरी, हमारे चाचा श्री गफूर साहब क्या मामूली आदमी हैं? राज्य के मुख्यमंत्री रहे हैं। हम उनके बेटे हैं, उनके वोटर हैं। वे गोपालगंज के हैं। वे हमारे चाचा हैं, उनका सम्मान है। ऐसे व्यक्तियों को आपने तरजीह दी? आप लोगों को फंसाकर रखे हैं कि रुको-रुको अभी एक्सपैंशन हो रहा है। अब मंत्रिमंडल का विस्तार हो रहा है। जब लोहा गर्म हो गया तो नीतीश जी ने कहा कि मंत्रिमंडल का विस्तार होना चाहिए।

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण) : उपाध्यक्ष महोदय, लालू जी ने मेरा नाम मिनिस्ट्री के बारे में बोला है।

I would like to have only one minute to clarify my position.

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : मैं सिट डाउन हो जाता हूं।

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण) : यह बात सच नहीं है कि हमारी पार्टी मिनिस्ट्री में ज्वाइन करना चाहती है। जो बात प्राइम मिनिस्टर ने हमारी पार्टी को पहले से कही, हम प्राइम मिनिस्टर के आभारी हैं। किसी ने पूछा था कि हमारी पार्टी का क्या ऑप्शन है तो हमने बता दिया था। लेकिन यह बात नहीं है कि हम लोगों ने मिनिस्ट्री में जाने के लिए मन तैयार किया था। हम लोग बाहर से सपोर्ट कर सकते हैं लेकिन आप नहीं कर सकते। आपको मिनिस्ट्री की जरूरत है, हमें नहीं है। ... (व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : माननीय ममता बहन ने उस बात को जस्टीफाइड और क्लीयर किया है। इनके सिद्धांत और उसूल पर हम अंगुली नहीं दिखा रहे हैं। क्या यह बात सही नहीं है कि आपने रेल मंत्रालय मांगा था?

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण) : हमने नहीं मांगा था।

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : नहीं मांगा था तो अब कभी भी नहीं मिलेगा। ... (व्यवधान)

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण) : लालू जी, आपको क्या चाहिए।

... (व्यवधान)

... (व्यवधान)

हमने सुनने की कोशिश की। लालू जी चीफ मिनिस्टर थे, पावर ब्रोकर थे। अभी इनके पास कोई रास्ता नहीं है। ये सब मिलकर वाजपेयी जी को हटाना चाहते हैं, जो मर्जी कर सकते हैं लेकिन देश की जनता इनको क्षमा नहीं करेगी। ये गलत बात कहते हैं, पार्लियामैंट को मिसलीड करते हैं।

For God's sake, do not mislead the House.

ऐसा नहीं होना चाहिए।

... (व्यवधान)

आप अपनी बात कहें। आप किसी को ठुकरा नहीं सकते। अगर आप ठुकराएंगे तो हम भी आपको ठुकराएंगे।

... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Lalu Prasad, please address the Chair.
... (Interruptions)
MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Verma, that is over. He has yielded the floor to her. ... (Interruptions)
MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record.
(Interruptions) ... (Not recorded)

श्री रतिलाल कालीदास वर्मा (धन्धुका): बिहार में दलितों की हत्या हुई है। ... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please do not disturb him. Let him conclude now.

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : मैंने इन बातों को इसलिए कहा कि माननीय आडवाणी जी ने कहा, उधर कौन वित्त मंत्री , कौन क्या बनेगा, कौन बनने वाला है, उधर है इधर है, इधर है उधर है। हमने जो आंख से देखा और कान से सुना है, लालू यादव ने नहीं देखा बल्कि दुनिया ने देखा है। हमने बहन ममता का अपमान नहीं किया, हमने कहा कि यह बात थी। आप बांधकर रखना चाहते हैं। हम लालू यादव और महिला का अपमान? हमसे बढ़कर महिला को कोई सम्मान नहीं देगा।

... (व्यवधान)

अपनी सीट दे दी, सब कुछ दे दिया, कुछ नहीं लिया, 'न लोटा न थारी, पेट भरे गिरधारी'। हम उसूल वाले लोग हैं, यह आप समझ लीजिए। ये जो लोग बैठे हुए हैं,

... (व्यवधान)

वह भी है। उसके बाद निकलेगा तो कहीं चेहरा नहीं बचा सकेंगे, तुरंत आने वाला है। कहां-कहां कार जुटा, कितना घपला कितना लूटा, किसकी गर्दन कहां है, हयात होटल में ९० करोड़, अभी जो पकड़ाया है, हार्स ट्रेडिंग के लिए रुपया दबाया है। हम इस बात को कहना नहीं चाहते थे, ऐकेडैमिक डिस्कशन करना चाहते थे।

... (व्यवधान)

बीच में बोलेंगे तो हम इन चीजों को रखेंगे।

... (व्यवधान)

बात सुनिए।

... (व्यवधान)

आडवाणी जी सुधार देंगे। सीता स्वयंवर हो रहा था, कौन धनुष तोड़ेगा, डंका बज गया, भारी-भारी भोपू जुट गए, सीता हमारी मां, भारत की बेटी, हाथ में माला, चारों तरफ वीर लोग बैठे हुए हैं कि मेरी गर्दन में डालेगी, मेरी गर्दन में डालेगी, सब जगह से रिजैक्ट होते-होते ... (व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : ये बोलने नहीं देंगे इसलिए आज जल्दी से वोटिंग करवाइए। अभी हम इनका रिजल्ट सुना देते हैं।

... (व्यवधान)

उन वीरों में नारद जी भी थे। जब वे रिजैक्ट हो जाएं फिर आगे आकर बैठ जाएं। किसी ने कहा कि अपना चेहरा आइने में देखें।

... (व्यवधान)

श्री विजय गोयल (चांदनी चौक): यह पार्लियामैंट है या मजाक हो रहा है। ... (व्यवधान) सारे कांग्रेसी मजा ले रहे हैं।

... (व्यवधान)

एक आदमी लगातार नौटंकी कर रहा है और आप सब लोग हंस रहे हैं।

... (व्यवधान)

इतने सीनियर आदमी हैं, मिनिस्टर रह चुके हैं, एक घंटे से रामायण चल रही है। देश का इतना पैसा और समय वेस्ट हो रहा है, मजाक बनाकर रखा है और आप सब लोग हंस रहे हैं। लालू जी, मैं आपका बड़ा सम्मान करता हूं।

... (व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : मैं तो बैठ ही जाऊंगा। शेयर ब्रोकर हैं, भागो, मुम्बई जाओ, मुम्बई में दलाली करो। लाटरी बेचो, लाटरी।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Goel, please sit down.
... (Interruptions)
MR. DEPUTY-SPEAKER: Do not disturb him.
... (Interruptions)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Goel, please sit down. He is concluding.
... (Interruptions)
MR. DEPUTY-SPEAKER: Do not provoke him.

श्री विजय गोयल (चांदनी चौक): यह मजाक की बात नहीं है।

... (व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : हम नहीं बोलने देंगे। आज इनको बोलने नहीं देंगे।

श्री विजय गोयल (चांदनी चौक): सारे लोग बैठकर हंस रहे हैं।

... (व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : ये बोलने नहीं देंगे। वापस जाओ।

महोदय, प्रधान मंत्री जी अभी लालच में पड़े हुए हैं।

उपाध्यक्ष महोदय : अब आप ऐसा कीजिए, चूंकि हाउस को लंच के लिए एडजर्न नहीं किया है, इसलिए सब लोग उसका नतीजा भुगत रहे हैं, इसलिए जल्दी से खत्म कीजिए।

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : तो लंच के बाद रखिये। पहले हमको लंच खिलाइये।

उपाध्यक्ष महोदय : अब आप खत्म कीजिए।

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : मैं संक्षेप में बोल रहा था, एकेडेमिक डिस्कशन। प्रधान मंत्री जी, मैं इसलिए कह रहा था कि आपके जितने साथी लोग हैं, आपको थाह लगने नहीं दे रहे हैं, आपको बता नहीं रहे हैं, आपकी जमीन खिसक चुकी है। आपको झूठ-मूठ के नारद मोह में डाले हुए हैं, आप नारद मत बनिये। जमीन नहीं है, जहां आप खड़े थे, वह जमीन खिसक गई। जयललिता जी का कितना अपमान आपने किया, मुकदमे पर मुकदमा, मुकदमे पर मुकदमा, लटकाकर रखो, क्लच में रखो। लोगों पर शासन करते रहे, इसलिए आपको मेरा सुझाव है। मैं फिर कहता हूं

... (व्यवधान)

श्री सत्य पाल जैन (चंडीगढ़): सुझाव सोनिया जी को दो।

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : सुनो, बैठो। आपको मेरा सुझाव है कि परसों ११ बजे वोटिंग है, खरवांस कल १४ तारीख को उतर गया। हम लोगों का, हिन्दू भाई लोगों का खरवांस उतर गया, सतवान होता है, आम का टिकोड़ा खाकर, सत्तू-वत्तू खाकर करते हैं, यही हमारी संस्कृति है, यही हिन्दुत्व है। उसके बाद से शुभ काम किया जाता है। अब खरवांस उतर गया। परसों भाषण करके बिना वोटिंग कराये राष्ट्रपति जी को इस्तीफा दे दीजिए। राष्ट्रपति जी अब हम लोगों से पूछेंगे कि वैकल्पिक सरकार कौन-कौन मिलकर बना रहे हो। यह हिसाब हम राष्ट्रपति जी को देंगे, आडवाणी जी को नहीं देंगे। यही वैल एस्टैब्लिश्ड पार्लियामेंटरी नोर्म में है। आपकी इसमें इज्जत बच जायेगी। पीठ में छुरा लगने से अच्छा है, सीधे जाकर वहां दे दीजिए। इससे आपकी इज्जत बच जायेगी कि आर.एस.एस. ने आपको चलाने नहीं दिया, देश का नाश आपने कर दिया, सत्यानाश पर पहुंच गया। हम लोगों को और मुलायम सिंह यादव को कुछ नहीं चाहिए, सुन लीजिए, साम्प्रदायिकता के खिलाफ, एक-एक कतरा खून जब तक हमारे शरीर में रहेगा और इस बार हम चाहते हैं, भारत से हमेशा के लिए साम्प्रदायिकता की विदाई हो। दोबारा फिर आप आने वाले नहीं है। हम लोग बनाएंगे या ये बनाएंगे तो इनसे भी लड़ेंगे, हम बनेंगे तो हम भी लड़ेंगे, लेकिन आपकी कोर्ट में भारत की जनता नहीं जाने वाली है। आप क्या विश्वास मत लाये हैं, आप नहीं लाये हैं, वह तो राष्ट्रपति जी ने आपसे बोला। तीन महत्वपूर्ण पालिटिकल पार्टीज़, चौटाला जी की पार्टी, चौटाला जी की पार्टी कोई मामूली पार्टी है? वह लोकदल है, बिहार हरियाणा, यू.पी., चारों तरफ हम लोगों का ग्राउण्ड है।

राजस्थान और गुजरात में हमारी ग्राउंड है, इनके पास तो मोरली ग्राउंड भी नहीं है। देश के तेज-तर्रार नेता सुब्रमणियम स्वामी साहब भी हमारे साथ हैं। इनके दल के सदस्यों की संख्या भले ही ज्यादा न हो, लेकिन ये ऐसे नेता हैं, जैसे हमारे बिहारी कवि के बारे में किसी ने कहा है-

सत साईं के दोहरे जो नावक के तीर

देखन में छोटे लागें घाव करें गम्भीर।

इस सरकार के तीन समर्थक दलों ने राष्ट्रपति जी के पास जाकर अपना समर्थन वापस ले लिया। बूटासिंह जी तो पहले ही इनसे अलग हो गए थे। अब ये तीन राजनीतिक दल हट गए हैं और ये हम पर ब्लेम करते हैं। मैं कहना चाहता हूं कि आप समाप्त हो चुके हैं, देश की जनता को मालूम है कि यहां से भाषण देकर और चतुराई से यह कहकर अब काम नहीं चल सकता कि हम लोगों ने इनकी सरकार गिराई है। आपको जिनका समर्थन प्राप्त था, वे हट गए हैं, तो हम क्योंकि आपको गिराने लगे। हम सरकार गिरने के बाद क्या करेंगे, क्या नहीं करेंगे, इसकी आपको क्यों चिंता है। हम तो भैंसें चराकर दूध पी लेंगे और बेच देंगे।

आपने अपने मन से यह विश्वासमत यहां नहीं रखा है। देश के प्रधान मंत्री जी, गृह मंत्री जी और संसदीय कार्य मंत्री जी राष्ट्रपति जी के पास गए थे कि ऐसा न करें। मैं पूछना चाहता हूं कि आप कौन होते हैं उनको ऐसा कहने के लिए। आपने वहां जाकर इसके लिए कुतर्क दिया और हम लोगों ने वहां जाकर तर्क दिया। वी.पी. सिंह, देवगौड़ा जी और गुजराल जी का उदाहरण है कि बिना हाउस के फ्लोर पर कांफीडेंस लिए आप बजट को हाथ में नहीं ले सकते। हमारा संविधान एक है, भारत एक है और राष्ट्रपति जी एक हैं। यह नहीं हो सकता कि बिहार में कुछ हो और यहां कुछ हो। आप बिहार के मसले पर भी राष्ट्रपति जी को कुतर्क देने गए थे, लेकिन राष्ट्रपति जी ने आपकी बात नहीं मानी। हम इसके लिए उन्हें बधाई देते हैं और उनका धन्यवाद करते हैं।

उपाध्यक्ष महोदयः अब खत्म करें।

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : मैं खत्म कर रहा हूं। उधर जो साधु बाबा लोग बैठे हुए हैं, मैं उनसे कहना चाहता हूं कि आप इनसे निजात पाएं और एक नया भारत बनाएं। हमारे खुराना जी उधर हैं, बहन सुषमा जी की वहां क्या हालत हुई, सब जानते हैं। सुषमा जी को कितना टार्चर किया, जब आप परिवार नहीं चला सकते, देश की जिम्मेदारी हम आपके हाथों में ज्यादा दिन तक नहीं रहने देंगे। इसलिए हम आपकी सरकार को सिर्फ झटका ही नहीं देना चाहते, एक मिनट में वोट से पटका देकर नई सरकार बनाएंगे और भारत की एकता, अखंडता और धर्मनिरपेक्षता पर आंच नहीं आने देंगे। यही कहकर मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

(इति)

1330 hours
The Lok Sabha then adjourned for Lunch till thirty minutes past
Fourteen of the Clock.

१४.३५ बजे

मध्याहन भोजन के पश्चात लोक सभा १४.३५ बजे पर पुनः समवेत हुई।

(उपाध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

वित्त मंत्री (श्री यशवंत सिन्हा): उपाध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री जी ने सदन में जो विश्वास मत प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, मैं उसके समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं।

महोदय, इस चर्चा में अभी तक विरोध पक्ष की ओर से दो भाषण हुए हैं - एक भाषण विरोधी दल नेता का, जिसके बारे में अधिकांश सदस्य, जो इस तरफ बैठे हैं, उनका यह मत था कि मजा नहीं आया, जमा नहीं और दूसरा भाषण हमारे ही प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष, लालू प्रसाद जी का हुआ। जिसके बारे में सदस्यों की राय थी कि बहुत ही एन्टरटेनिंग भाषण रहा। उसमें कुछ लोगों का यह भी कहना था कि नौटंकी वाला भाषण था, लेकिन यह मेरा कहना नहीं है। लालू प्रसाद जी ने स्वंय कहा कि उनका भाषण बहुत एकेडैमिक था। एकेडैमिक भाषण उन्होंने बहुत मतवाले मन से शुरु किया था। अभी तो उस डाल पर दो ही पंछी बैठे हैं - लालू प्रसाद और मुलायम सिंह - लेकिन जब वे बोल रहे थे, तो उनके बीच में स्वामी जी भी बैठे हुए थे। हो सकता है कि लालू जी का जो दार्शनिक भाषण हुआ, एकेडैमिक भाषण हुआ, उसमें कुछ स्वामी जी का भी इन्पुट हो।

... (व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : स्वामी लोग बहुत खरतनाक होते हैं। गुरुस्वामी तो आपको ले डूबे।

... (व्यवधान)

श्री यशवन्स सिन्हा : आपको अभी तुरन्त पता चल जाएगा। हमारा जो स्वामी था, उससे तो हमने छुटकारा पा लिया, लेकिन आप इस स्वामी के चक्कर में मत पड़िए, एक मित्र के नाते आपको सलाह दे रहा हूं।

लालू प्रसाद जी के भाषण में ऐसा कुछ नहीं था, जिसका उत्तर दिया जा सके। लेकिन जो विरोधी दल के नेता ने भाषण दिया, उसमें उन्होंने का उल्लेख किया। जो स्थिति देश की अर्थ-व्यवस्था से संबंधित है और उनके मुताबिक पिछले १३ महीनों में अर्थ-व्यवस्था के क्षेत्र में हमने ऐसा कुछ नहीं किया, जिसका उल्लेख भी उनके द्वारा किया जा सके - ऐसा उनका मानना था।

महोदय, आज जब इस चर्चा में भाग लेने के लिए मैं इस सदन की तरफ आ रहा था, तो कई पत्रकार बंधु मुझे मिले, जिनको पिछले कई दिनों से एक ही चिन्ता खाए जा रही है, पूरे देश को परेशान कर रही है और वह चिन्ता है कि हमने जो बजट पेश किया है, उसका अन्जाम क्या होगा? वह इस सदन के द्वारा पास होगा या नहीं होगा? मैंने उनको आश्वासन दिया कि हम विश्वास मत जीतेंगे, बजट भी पास होगा, फाइनेंस बिल भी पास होगा। लेकिन चिन्ता तो लगी है और हम लोग इस सदन में जिनते भी सदस्य बैठे हैं, वे चुनकर आए हैं।

लालू प्रसाद जी कह रहे थे कि बिना चूना फिटकरी लगाए, हम कोई-न-कोई पद पा लेते हैं। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि इस सदन में मैं उनसे ज्यादा वोट से जीत कर आया हूं और चुनाव जीतने में कितना चूना-फिटकरी लगाना पड़ता है, यह उनको भी पता है और हमको भी पता है, क्योंकि बहुत दिनों से इस पापड़ को बेल रहे हैं। यह जरूर है कि मुझे उनकी तरह जेल में रहने की आदत नहीं है। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं ... (व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : आप जेल जाने से कैसे बचिएगा, यह बता दीजिए। ... (व्यवधान)

श्री यशवंत सिन्हाः देखिए न, आप बहुत कोशिश किए हैं, कम कोशिश नहीं किए हैं। हम बैठे हुए हैं, आप कहां बैठेंगे।

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : ... (अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार कार्यवाही-वृत्तान्त से निकाल दिया गया।)

श्री यशवन्त सिन्हाः आप की बद दुआ किसी को नहीं लगती है, क्योंकि किसी ... (अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार कार्यवाही-वृत्तान्त से निकाल दिया गया।) की बद दुआ किसी को नहीं लगती है।

जब से इस देश में राजनैतिक अस्थिरता का दौर शुरु हुआ है तब से देश की अर्थव्यवस्था के ऊपर कितना कुप्रभाव पड़ा है, क्या हम सब लोगों को इसकी चिन्ता है? सरकार आएगी, जाएगी, लेकिन इस देश की अर्थव्यवस्था के लिए क्या हम सब लोग एक साथ मिल कर जिम्मेदार नहीं हैं? क्या इस सदन में बैठे हुए सब लोगों का यही कर्तव्य है कि हम देश को रसातल तक पहुंचा दें, इसके भविष्य की कोई चिन्ता न करें। आप जानते हैं कि मुंबई स्टाक मार्केट का क्या हाल हुआ। रुपए के ऊपर इस राजनैतिक अस्थिरता के बाद कितना दबाव बढ़ा है। मैं तो अपने देश के समझदार लोगों को मुबारकबाद देना चाहता हूं, जिन्होंने इस राजनैतिक अस्थिरता के बावजूद भी सूझ-बूझ से काम लिया और जो बात हाथ से निकल सकती थी उसको हाथ से निकलने से बचाया। आज भी हम मजबूती के साथ देश की अर्थव्यवस्था के ऊपर काबिज़ हैं लेकिन पिछले १२-१३ महीनों में क्या हुआ, इसके बहुत सारे आंकड़े पेश होते हैं। मुझे याद है इस सदन में जब कभी हम अर्थ व्यवस्था के ऊपर चर्चा करते थे, हमें बार-बार बताया जाता था कि आपको अर्थव्यवस्था को संभालना नहीं आता है। आप कुछ नहीं जानते हैं, आपने अर्थव्यवस्था को तहस-नहस कर दिया, लगभग यही बात विरोधी दल के नेता आज कह रहे हैं। यहां आंकड़े हैं, मैं आपको बताना चाहता हूं कि इस देश में मंदी का दौर १९९६ के मध्य से शुरु हुआ था और उस मंदी के दौर के पीछे जो कारण थे, वे सीधे वहीं हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं, कांग्रेस पार्टी की जो नीतियां १९९१ से लेकर १९९६ तक थीं। आज शरद पवार जी बहुत चिन्ता व्यक्त कर रहे थे कि उनके निर्वाचन क्षेत्र में उद्योग बंद पड़े हैं तथा अन्य क्षेत्रों में भी उद्योग बंद पड़े हैं, पब्लिक सैक्टर अंडरटैकिंग्स बंद पड़ी हैं। हमारी सरकार ने जोर देकर कहा है कि भारतीय उद्योगों की रक्षा करने के लिए हमें जो भी कारगर कदम उठाना पड़ेगा वह हम उठाएंगे और उसकी रक्षा करेंगे। भारतीय उद्योगों को आवश्यक रूप से नष्ट करके नये उद्योग बनाने की हमारी नीति नहीं है। आज जो लोग कांग्रेस पार्टी की गोद में जाकर बैठ रहे हैं, उनका समर्थन करने के लिए आतुर हैं, जो उनके साथ मिल कर सरकार बनाना चाहते हैं मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि १९९१ और १९९६ के बीच में जो नीतियां चलीं उस समय उनके विचार क्या थे, आज उनके विचार क्यों बदल गए?

... (व्यवधान)

आपके विचार बदल गए हैं। आप जब गठबंधन करेंगे, उनके साथ मिल कर सरकार बनाने की बात सोच रहे हैं, आपको पता चल जाएगा कि देश फिर उसी तरफ जा रहा है। हम देशी उद्योगों की रक्षा करना चाहते हैं, हम चाहते हैं कि जो हमारा दुनिया के साथ तालमेल है वह धीरे-धीरे आगे बढ़े, इसलिए हमने नेशनल एजेंडा फॉर गवर्नेंस में केलीब्रेटेड ग्लोबलाइजेशन की बात की है और हमने एक अंतर किया है- 'माइंडलैस ग्लोबलाइजेशन' और 'केलीब्रेटेड ग्लोबलाइजेशन'। पिछले साल जीडीपी की प्रगति दर पांच प्रतिशत थी, इस साल जब बजट पेश किया था उस समय मैंने कहा था कि यह ५.८ प्रतिशत होगी। अभी जो कृषि का आंकड़ा लिया था, इसमें फूडग्रेन प्रोडक्शन का आंकड़ा १९५ मिलियन टन था। हमारे पास जो न्यूनतम आंकड़ा है, उसमें हम २०० मिलियन टन पार करेंगे और ५.८ प्र ातिशत जो वृद्धि की दर है उसको अगर हम पार कर गए तो १९९८-९९ के जब आंकड़े आएंगे उसमें हमें कोई आश्चर्य नहीं होगा।

सारी मंदी के बाद भी हमने अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने का काम किया है और जो प्रगति की दर है वह अपने आप में सारी बातों को देखते हुए अत्यंत ही संतोषप्र द मानी जाएगी।

हमारे ऊपर चार्ज लगाया गया कि मुद्रास्फीति के ऊपर आपका कोई नियंत्रण नहीं है, कीमतें भाग रही हैं। मैं कहना चाहता हूं कि आज हम बात कर रहे हैं अप्रैल के महीने में। पाइंट टू पाइंट मार्च के आखिर में जो होलसेल प्राइस इंडैक्स की दर थी वह पांच प्रतिशत मात्र थी और जो १९९० से यह दशक शूरू हुआ, उस समय १९९५-९६ में जब यह इंक्रीज ४.४ थी, उसको छोड़कर यह सबसे कम, पाइंट बाई पाइंट साल के आखिर में पांच प्रतिशत है। ये पूरे आंकड़े इंफ्लेशन के १९९०-९१ से पूरे दशक के हैं। मैं कहना चाहता हूं कि १९९६-९७ और १९९७-९८ के दो वर्षों में जबकि १९९५-९६ में मुद्रास्फीति की दर ६.४ प्रतिशत थी, १९९७-९८ में ४.८ प्रतिशत थी और अभी जो प्रॉविजनल आंकड़ें हमारे पास हैं उनके मुताबिक १९९८-९९ में यह ६.७ प्रतिशत हो सकती है, जो इन दो वर्षों को छोड़कर नब्बे के दशक में सबसे कम है।

इसी तरह जो कंज्यूमर प्राइस इंडैक्स इंडस्ट्रियल वर्कर्स के लिए है वह ८.६ प्रतिशत १९९७-९८ के फरवरी में था और हमारा ८.६ प्रतिशत है। वहां भी भारी गिरावट मुद्रास्फीति की दर में आई है, उस पर नियंत्रण हमने पाया है।

उसी प्रकार जब हम विभिन्न प्रकार के बजट के घाटों की बात करते हैं तो उन पर भी नियंत्रण पाने का और आगे के लिए रास्ता प्रशस्त करने का काम हमारी सरकार ने किया है और यह भी नियंत्रण में है।

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी (दरभंगा): बजट तो पेश हो गया है।

श्री यशवंत सिन्हाः वह आप लोगों के समझने की बात नहीं है, उसके लिए बिहार विधान सभा में जाइये। उपाध्यक्ष महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि जो ४.४ प्रतिशत खाद्यान्न उत्पादन वृद्धि दर है और जो हमारे पास फूड-ग्रेन्स का स्टॉक है वह बहुत ही आरामदेह है। आज हमारे पास ८९ लाख टन राइस का स्टॉक है, ८७ लाख टन हमारे पास गेहूं का स्टॉक है। जो नोर्मस हैं उनसे कहीं ज्यादा हमारे पास स्टॉक है। रबी की फसल जब आयेगी तो कीमते और नीचे होंगी। इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन के जो आंकड़ें हैं उनके अनुसार और हमारे रैवेन्यू के जो आंकड़े हैं उनके अनुसार हम एक अपटर्न जनवरी, फरवरी और मार्च के महीने में देख रहे हैं। मैं कहना चाहता हूं कि बार-बार यही हुआ है कि जब सब कुछ ठीक-ठाक होने लगे तो कहीं न कहीं कुछ न कुछ गड़बड़ी कर दो। इसी सदन में कहा गया कि हमारा जो करेंट एकाऊंट डैफिसिट है वह तीन प्रतिशत से ऊपर हो जाएगा। जब मैं बजट भाषण का उत्तर दे रहा था तो मैंने कहा था यह जी.डी.पी. का १.४ प्रतिशत होगा। मुझे सदन को बताते हुए खुशी हो रही है कि जो न्यूनतम आंकड़े हैं,

the current account deficit is not going to exceed one per cent of the GDP.

उसीका नतीजा है कि १९९८-९९ में हमने ३.६ बिलियन डालर एड किया है।

यह डर था कि विदेशी मुद्रा भंडार खत्म हो जाएगा। जब अमेरिका और दूसरे देशों ने परमाणु परीक्षण के बाद हम पर प्रतिबंध लगाए, जब दुनिया भर में क्राइसिज चल रहा था तो यहां पर कहा गया कि विदेशी मुद्रा के भंडार पर देश की इकॉनोमी रन होगी, हम रुपए की कीमत को बरकरार रखने में अक्षम होंगे, पता नहीं कहां जाकर यह देश ठहरेगा? उस समय हमारी तरफ से जो कहा गया उसका उल्लेख आडवाणी जी यहां कर रहे थे। वर्लड बैंक ने जो कुछ कहा मैं उसका यहां उल्लेख करना चाहता हूं। मुझे वर्लड बैंक के सर्टिफिकेट की आवश्यकता नहीं है। आंकड़ों के मुताबिक वर्लड बैंक ने कहा है :

"India, the dominant economy in the region, was protected by its large domestic markets and capital account restrictions that dampened the effects of turbulence in international capital markets. The recent estimates suggest that a growth of 5.8 per cent may be achieved during the fiscal year 1998-99."

शरद पवार जी कह रहे थे कि इनवैस्टमैंट नहीं हो रहा है, जितने फॉरेन इनवैस्टर्स थे, उनका दिल टूट गया है, वे इस देश में नहीं आना चाहते हैं। मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि वर्लड बैंक की रिपोर्ट में कहा गया है :

Foreign Direct Investments in the South Asian Region equal 4.4 billion in 1998, down from 4.7 billion in 1997. India which received 80 per cent of the Region's Foreign Direct Investments experienced an increased inflows.

जब सारी दुनिया में यह चल रहा था और एमर्जिंग मार्किट के ऊपर से फॉरेन इनवैस्टर्स का विश्वास खत्म हो रहा था, उस समय हमारी प्रगति और परफॉर्मेन्स यह था। आज के दिन

$ 32.647 billion is the highest foreign exchange reserves ever in this country. This is the position today.

आज तक इतना विदेशी मुद्रा भंडार कभी इस देश में इकट्ठा नहीं हुआ था जितना आज के दिन इकट्ठा हुआ है। हमारे फॉरेन करैंसी ऐस्सेटस गोल्ड और एस.डी.आर. जोड़ कर ३२.६ बिलियन और विदआउट गोल्ड ऐंड एस.डी.आर २९.७ बिलियल डालर हैं।

There are our foreign currency assets.

इसलिए मुझे यह कहते खुशी हो रही है कि सारे बवंडर के बावजूद जितने इस दुनिया में स्टॉर्मस उठे, जितना दबाने का प्रयास दुनिया के देशों ने किया, यहां जो कुछ बात हुई, इस सदन और देश के भीतर हमारे अपने ही लोगों ने जितना हमारा दिल और मनोबल तोड़ने का काम किया, उसके बाद इस देश की आर्थिक व्यवस्था की यह स्थिति है। यदि नेता विरोधी दल श्री शरद पवार और अन्य लोगों को यह दिखाई नहीं दे रहा है तो मैं कहूंगा कि वे आंख की जांच कराएं जिससे उन्हें दिखाई देने लगे कि सच्चाई क्या है? ये सब हमारे संतोष का कारण नहीं है। अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में लालू जी और हम बिहार विधान सभा में बहुत बहस कर चुके हैं। उन्हें यह याद होगा

... (व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : आप बताएं कि आंख की जांच किस अस्पताल में करानी है?

श्री यशवन्त सिन्हा : पटना अस्पताल को छोड़ कर सब अस्पताल में इसकी जांच करानी है। यहां देश के उद्योगों की बात कही गई, स्वदेशी की बात कही गई, अनएम्पलायमैंट की बात कही गई। नेता विरोधी दल को चीनी उद्योग के बारे में बहुत चिन्ता हो रही थी। वह कह रहे थे कि इस देश में हमारी क्षमता है और इस देश की जो आवश्यकताएं हैं, उसकी पूर्ति देश के भीतर जो उत्पादन होता है, उससे की जा सकती हैं। चीनी को ओपन जनरल लाइसेंस में रखने का काम किस सरकार ने किया? कांग्रेस की सरकार ने किया था। चीनी को ओपन जनरल लाइसेंस पर रखने के बाद उस पर जीरो डयूटी इम्पोर्ट को एलाऊ करने का काम किस सरकार ने किया था? कांग्रेस की सरकार ने किया था।

एक माननीय सदस्य : आपने क्या किया?

श्री यशवन्त सिंहा : हमने आते ही उस पर ५ परसैंट इम्पोर्ट डयूटी लगाई। उसके ऊपर साढ़े आठ सौ रुपए प्रति टन काउंटर वेलिंग डयूटी लगाई। आज चीनी पर इम्पोर्ट डयूटी २५ परसैंट है। यह काम हमने किया। आपने क्या किया? क्या आपको यह कहने का हक बनता है?

मैं दूसरी बात यह कहना चाहता हूं कि वर्लड ट्रेड आर्गेनाइजेशन के ... (व्यवधान)

श्री पृथ्वीराज दा. चव्हाण (कराड़) : सारी चीनी तो आ गई।

श्री यशवन्त सिन्हा : आ गई है तो फिर अभी क्यों चिन्ता कर रहे हैं? आ गई तो आ गई।

श्री पृथ्वीराज दा. चव्हाण (कराड़) : किसान तो मर गया।

श्री यशवन्त सिन्हा : चव्हाण साहब, आप तो कांग्रेस पार्टी के बड़े भारी डबल्यू.टी.ओ. के एक्सपर्ट माने जाते हैं। जब टेलिविजन में चर्चा होती है तो आप आते हैं, चर्चा में भाग लेते हैं। बहुत अच्छी-अच्छी बातें कहते हैं। मैं उनका आदर करता हूं लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि क्या अधिकार है कि हम जब चाहें, उस चीज के आयात पर रोक लगा दें। हम डबल्यू. टी.ओ. में सस्टेन कर पाएंगे। डब्लयू.टी.ओ. पर किस ने दस्तखत किए।

श्री पृथ्वीराज दा. चव्हाण (कराड़) : आप रेट आफ डयूटी की बात कर रहे हैं।

श्री यशवंत सिन्हाः वह २५ प्रतिशत और कांउटर वेलिंग डयूटी उसके ऊपर हम लोगों ने लगायी है। माननीय नेता विरोधी दल जानकार व्यक्ति हैं। अगर आप कह रहे हैं कि चीनी इम्पोर्ट को पूरी तरह से बैन कर दो, क्या यह संभव है। जब तक हम विश्व व्यापार संगठन के सदस्य हैं, क्या हम ऐसा कर सकते हैं? उस एग्रीमेंट पर दस्तखत आपने किये और उल्टा दोष हम पर लगा रहे हैं, आप ऐसा क्यों कर रहे हैं? आपने हम पर और देश पर आब्लीगेशन लगाया है।

उपाध्यक्ष जी, यहां अनएम्पलायमेंट की बात कही गई। कहा गया कि अनएम्पलायमेंट बढ़ता जा रहा है। मैं कहना चाहता हूं कि यह क्यों बढ़ रहा है। जो रिफार्मस ि वदआउट ह्युमन फेस १९९१-९६ के बीच में हुआ, जो हमने मॉडल ग्रोथ अडाप्ट करने का फार्मूला लिया, उसके चलते इस देश में अनएम्पलायमेंट की स्थिति में बिगाड़ आया। क्यों आया? वर्लड ह्युमन डेवलेपमेंट रिपोर्ट में इस फार्मूले के बारे में कहा गया कि

This is jobless growth.

रोज़गार नहीं बढ़ेंगे मगर आर्थिक विकास होगा। इसीलिये हमने अपने नेशनल एजेंडा फार गवर्नेंस में उस मॉडल को रिजैक्ट कर दिया, हमने स्वीकार नहीं किया। हम चाहते हैं कि इस देश का आर्थिक विकास भी हो, रोजगार का सृजन हो, यह हमारा मॉडल है। अभी नेता विरोधी दल यहां नहीं हैं। हमारा संतोष इस बात से नहीं होता कि मुम्बई में सेनसेक्स बढ़ रहा है, हमारा संतोष मात्र इस बात से भी नहीं होता कि हमारा फारेन एक्सचेंज रिजर्व बढ़ रहा है, हमारा संतोष मात्र इस बात से भी नहीं होता कि हमारी खेती की पैदावार बढ़ रही है। हमारा संतोष तो इस बात से होता है कि इस देश के जो सबसे गरीब तबके के लोग हैं, जो सबसे निर्धन हैं, जो सबसे कमजोर है, उस अंतिम पंक्ति के व्यक्ति के लिये यह सरकार क्या कर रही है। हमारे लिये पिछले १२-१३ महीने में सरकार द्वारा कृषि, कॉटेज इंडस्ट्रीज, स्माल स्केल इंडस्ट्रीज, अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने के क्षेत्र में जो कुछ किया गया, वह हमारे लिये सबसे ज्यादा संतोष की बात है। मैं आपसे यह भी कहना चाहता हूं कि स्वदेशी आप नहीं समझते हैं। आपके लिये स्वदेशी मात्र एक शब्द हो सकता है लेकिन हमारे लिये स्वदेशी हमारे और इस देश की आत्मा है। इसीलिये उस शब्द को बार बार रिपीट करूं या न करूं लेकिन आप कहते हैं कि बजट में स्वदेशी शब्द का इस्तेमाल नहीं हुआ जबकि पूरा बजट स्वदेशी की अन्तर्आत्मा से प्रेरित है और इसीलिये हमने यहां ...

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी (दरभंगा): लेकिन आपकी पार्टी के लोगो ने हंगामा किया।

श्री यशवंत सिन्हाः कोई हंगामा नहीं किया और कहीं कुछ नहीं हुआ है। आप हमारी पार्टी के बारे में क्या जानते हैं? आप कहते हैं कि हंगामा हुआ।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Fatmi, please do not interrupt. Let him speak. When you get your chance, you can speak. Do not disturb like this.

श्री यशवंत सिन्हाः उपाध्यक्ष जी, यह सही है कि मैं कभी उन्हीं के साथ था। उधर जितने लोग बैठे हुये हैं, उनकी रग-रग को ज्यादा कोई नहीं जानता, जितना मैं उन लोगों को पहचानता हूं, उतना कम लोग पहचानते होंगे।

उपाध्यक्ष महोदय : आप पहचानते हैं मगर उन्हें प्रोवोक मत कीजिये, इससे हमें तकलीफ होती है।

श्री यशवंत सिन्हाः उपाध्यक्ष महोदय, हमने बजट पेश करते हुये कहा था कि हमें संतोष है कि कृषि क्षेत्र में...

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : यह आप बोल चुके हैं, कोई नई बात बोलिये।

श्री यशवंत सिन्हाः हमने जो ऋण की व्यवस्था की, उसके अंतर्गत १९९८-९९ में ३१ हजार करोड़ रुपये की जगह ३८ हजार करोड़ रुपये की व्यवस्था कृषि क्षेत्र को उपलब्ध कराई गई है और जो रूरल इनफ्रास्ट्रक्चर फंड है...

श्री बलराम जाखड़ (बीकानेर): यह तो पिछले साल के बजट के खर्च के हिसाब से कम कर दिया। आप आंकड़े देखकर बोलिये। आपके कृषि मंत्री यह कहते हैं कि कम होता है। आप ऐसा मत कहिये और आप ऐसा क्यों कहते हैं।

श्री यशवंत सिन्हाः जो प्रश्न उठाया गया उसके मुताबिक मैं इंस्टीटयुशनल फाइनेंस के आंकड़े बता रहा था।

जब हम कृषि को देखते हैं, कृषि के पूरे क्षेत्र को देखते हैं, उसमें जाखड़ जी को जानना चाहिए, अन्य सदस्यों को जानना चाहिए कि यह राज्य का विषय है और भारत सरकार का जो बजट है वह बहुत छोटा अंश है उस पूरे देश के बजट का जो कृषि के ऊपर हम खर्च करते हैं। इन्होंने कहा कि यह हमने कितना परसेंट कम कर दिया। मैं कहता हूं कि आर.आई.बी.एफ. को अगर हमने २५०० करोड़ रुपये से बढ़ाकर ३५०० करोड़ रुपये कर दिया, १००० करोड़ रुपये की उसमें अगर वृद्धि हुई है तो यह पैसा क्या कृषि के क्षेत्र में नहीं जा रहा है?

श्री बलराम जाख़ड़ (बीकानेर) : मैंने यह नहीं कहा है। मैंने कहा है कि पिछले साल जो आबंटन किया था उसमें से खर्च नहीं हुआ।

श्री यशवन्त सिन्हा : पिछले साल कृषि के क्षेत्र में ५८ प्रतिशत की वृद्धि की थी। श्री बलराम जाखड़ (बीकानेर) : वह किया लेकिन खर्च नहीं हुआ।

श्री यशवन्त सिन्हा : उसमें बहुत कुछ खर्च हुआ। वह आंकड़े चाहेंगे तो मैं बता दूंगा।

श्री बलराम जाखड़ (बीकानेर) : मेरे पास आंकड़े हैं। मैंने निकालकर दिये थे।

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : आम आदमी को क्या मालूम है आंकड़े क्या होते हैं। श्री वीरेन्द्र सिंह (मिर्जापुर) : आम आदमी को तब मालूम होता है जब वह आंकड़ों से प्रभावित होता है।

... (व्यवधान)

श्रीमती भावना देवराजभाई चिखलिया (जूनागढ़) : ५० साल में जो हुआ उसके आंकड़े भी देख लें आप।

श्री यशवन्त सिन्हा : उपाध्यक्ष जी, आंकड़ों का कोई मतलब नहीं है। जब लालू जी और हम बहस करते थे तो एक दिन लालू जी को मैंने कहा कि आंकड़े छोड़िये, ठऔक्का बौक्का तीन तड़ौक्का' खेलते हैं। आंकड़ों से क्या मतलब है?

... (व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : आपसे कहा गया था --

'ताड़ काटो सत्तू काटो काटो रे बल ख्वाजा

हाथी पर गए घुंघरू, चमक चले राजा।'

श्री यशवन्त सिन्हा : उपाध्यक्ष महोदय, मैं कह रहा था कि छः लाख से अधिक, पिछले वर्ष जो कम समय हमें मिला, किसान क्रेडिट कार्ड हमने इस देश में बैंकों के माध्यम से बांटे। इस साल का टार्गेट २० लाख किसान क्रेडिट कार्ड बांटने का है। हमने माइक्रो क्रेडिट की बात की। उसमें हमने बहुत जोर देकर बैंकों को कहा

कि ग्रामीण क्षेत्र में जाकर माइक्रो क्रेडिट की व्यवस्था होनी चाहिए और मुझे खुशी है कि पिछले साल १९९८-९९ में हमने जो लक्षय रखा था, सेल्फ हेल्प ग्रुप्स, स्वयं सहायता समूह जिसको कहते हैं, वह १०,००० का आंकड़ा था और हमने वर्ष के अंत तक १५,००० सेल्फ हेल्प ग्रुप्स को इस देश में ऑर्गनाइज़ किया। इस साल का जो आंकड़ा रखा है, ५०,००० सेल्फ हेल्प ग्रुप्स जिसके माध्यम से हम उन सबसे अंत्म व्यक्ति तक पहुंचे जो फातमी जी पूछ रहे हैं। अंतिम व्यक्ति की मदद के लिए माइक्रो ग्रुप सेल्फ हेल्प ग्रुप्स राज्य से नहीं होगा और इसलिए आवश्यक है कि हम उन तक पहुंचें। मैं कहना चाहता हूं कि यहां बिहार की बहुत चर्चा होती है। मैं अभी अपने क्षेत्र में सेल्फ हेल्प ग्रुप्स की परफॉर्मेन्स रेव्यू कर रहा था। मुझे खुशी है यह कहते हुए कि अनपढ़ महिलाओं के सेल्फ हेल्प ग्रुप्स बने हुए हैं। २०-२५ महिलाएं इकट्ठा होकर कुछ न कुछ काम करती हैं। उनको छोटी सहायता बैंकों से मिलती है और आपको जानकर खुशी होगी कि जो बिहार बहुत मामलों में बहुत बदनाम है लेकिन ९६ प्रतिशत वहां पर रिकवरी रेट है। हमें तो बहुत खुशी हुई। इसी तरह बैंकों के पैसे को हम दें, बैंकों के पैसे वापस आएं, हम उसमें हस्तक्षेप नहीं करें तो बहुत तेजी के साथ हम आगे बढ़ सकते हैं। यह हमारे लिए संतोष का विषय है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि बहुत तेजी के साथ इस क्षेत्र में हम काम को आगे बढ़ाएंगे।

उपाध्यक्ष महोदय, हम सिर्फ अपनी चिन्ता नहीं कर रहे हैं। हम अपना घर संवार लें और देश के बाकी राज्यों की चिन्ता न करें, यह सही नहीं होगा।

क्योंकि जब कोई भी बाहर से इस देश को देखता है तो भारत सरकार का क्या फिस्कल डेफिसिट है, भारत सरकार किस तरह से अपनी अर्थव्यवस्था को संभाल रही है, वह यही नहीं देखता है। वह यह भी देखना चाहता है कि इस देश के जो विभिन्न राज्य है, उनमें अर्थव्यवस्था कैसी चल रही है, फाइनेन्शियल मैनेजमैंट कैसा चल रहा है। मुझे यह कहते हुए खुशी है कि आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने फरवरी में नेशनल डेवलपमैंट कौंसिल की मीटिंग बुलाई थी। उस मीटिंग में राज्यों ने अपनी पीड़ा और तकलीफें हमारे सामने रखीं और पूरा विचार-विमर्श करने के बाद यह तय हुआ कि मैं वित्त मंत्री की हैसियत से कुछ चुने हुए राज्यों के मुख्य मंत्रियों और वित्त मंत्रियों को बुलाऊंगा और उनके साथ विचार-विमर्श करके हम आगे का रास्ता तय करेंगे। मुझे यह कहते खुशी हो रही है कि हमने किसी राजनीति से प्रेरित न होकर पश्चिम बंगाल के मुख्य मंत्री को यह दायित्व दिया कि आप राज्यो के मुख्य मंत्रियों को इकट्ठा कीजिए और स्टेटस में आपस में जो टैक्स वार चलता है, जिसमें हम रेट कम करते जाते हैं, ताकि हमारे यहां उद्योग आयें, इस टैक्स वार को कम किया जाए, खत्म किया जाए। वह रिपोर्ट आई है, उस रिपोर्ट को मैंने सारे राज्यों को सर्कुलेट किया है और यह कहा है कि उसके अनुसार वे अगले बजट में काम करें। मेरे पास सूचना है कि बहुत सारे राज्यों ने सहमति के आधार पर काम करना शुरू कर दिया है। लेकिन उससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि इस देश में अनेकों राज्य हैं और ३१ मार्च, १९९९ तक उनका रिज र्व बैंक के पास बहुत ओवर ड्राफ्ट हो गया था। सारे लोग आये हुए हैं। वे पांचवे वेतन आयोग के बर्डन को बर्दाश्त करने की स्थिति में नहीं हैं।

शरद पवार जी कह रहे थे कि इस बीच में कितनी स्ट्राइक्स हुईं, कितनी तरह के भारत सरकार के मुलाजिम स्ट्राइक्स पर गये, लेकिन क्यों गये, चूंकि पांचवे वेतन आयोग की जो रिपोर्ट आई, उस पर पिछली सरकार ने जो कुछ किया है, उसके बावजूद उसमें इतनी विसंगतियां हैं कि जिनके कारण कहीं न कहीं, कुछ न कुछ बखेड़ा पैदा होता रहता है। पांचवे वेतन आयोग का भार राज्यों पर भी पड़ा है। लालू जी कह रहे थे कि वे महिलाओं का बहुत सम्मान करते हैं, जरूर करते हैं, इसीलिए इन्होंने अपनी पत्नी को मुख्य मंत्री बनाया, बहुत सम्मान किया। लेकिन लालू जी, बिहार में क्या हो रहा है? बिहार में पता नहीं कितने दिनों से वहां के मुलाजिमों की स्ट्राइक चल रही है कि हमें भी पांचवे वेतन आयोग के अनुसार वेतन दो। बिहार में चार महीने से स्ट्राइक चल रही है। बिहार में वैसे भी काम-काज नहीं होता है इसलिए वे स्ट्राइक पर रहें या काम करें, कोई फर्क नहीं पड़ता है। लेकिन वहां पिछले चार महीनों से यह चल रहा है। लेकिन कितना बड़ा बोझ राज्यों पर इसका पड़ा है।

उपाध्यक्ष महोदय, गोवा में राष्ट्रपति शासन है। इसी सदन में जब मैं गोवा का बजट पेश कर रहा था, तब मैंने कहा था कि १९९७-९८ में अगर गोवा में २० करोड़ रूपये का राजस्व का घाटा था तो वह बढ़कर १८० करोड़ रूपये हो गया

only because of the burden of the Fifth Pay Commission.

इस तरह हम राज्यों के साथ मिलकर बातचीत कर रहे हैं और मुझे यह कहते हुए खुशी हो रहीहै कि जैसा हमने एन.डी.सी.की मीटिंग में तय किया, हम हर एक राज्य के साथ डिस्कशन कररहे हैं कि उन्हें कैसे बेल आउट किया जा सकता है, भारत सरकार उनकी क्या मदद कर सकतीहै। इन सारी बातों को देखते हुए हमने इस बात को कहा है। हम जब कमरे में बैठकर बात करते हैं तो सही नतीजे पर पहुंचते हैं और हमने कई राज्यों के बारे में इस प्रकार की बातचीत कर ली है,

A major fiscal correction programme, in the whole country, has been started by the Government of India and the State Governments. I am sure, within this year, it will be possible for us to show very worthwhile results in this regard.

उपाध्यक्ष महोदय, देश की अर्थव्यवस्था सही है, देश की अर्थव्यवस्था ऊपर की तरफ उठती दीख रही है। लेकिन हमें देश के साथ-साथ दुनिया की भी चिंता है। चिंता इसलिए है कि कहीं किसी दूसरे देश में कुछ हो जाए उसका असर हमारे ऊपर पड़ता है। कहीं किसी क्षेत्र में कुछ हो जाए, उसका असर हमारे ऊपर पड़ता है। इसलिए मैं इस सदन को विश्वास में लेकर कहना चाहता हूं कि अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में जब इस बात की चर्चा होती है कि दुनिया भर में नया फाइनेन्शियल आर्कीटैक्चर कैसा हो,

उसमें भारत अपनी भूमिका निभा रहा है। इन संस्थाओं में आज के दिन भारत की आवाज इज्जत के साथ सुनी जा रही है क्योंकि मैंने उनसे कहा कि भारत न के वल-

We are neither the victims nor are we the cause of this crisis. Therefore, our voice must be heard with respect. I am glad to say, Mr. Deputy-Speaker, Sir, that our voice is being heard. We are making our contribution at the

international level.

मैं एक बात अन्त में कहकर अपनी बात समाप्त करूंगा। हम इंटरनैशनल से नैशनल और नैशनल से राज्यों तक सारी बातों को देख रहे हैं, लेकिन हमें एक बात की चिन्ता है और वह यह है कि भारत सरकार से जो पैसे राज्य सरकारों को जा रहे हैं उनका सही उपयोग होना चाहिए, यह देखना हमारा कर्तव्य है, यह हमारी जिम्मेदारी है। लेकिन मुझे यह कहते हुए अफसोस है कि कंट्रोलर एंड आडीटर जनरल की जो रिपोर्ट आ रही हैं उनमें से कई राज्यों की रिपोर्ट अत्यन्त भयानक हैं। सारा लेखाजोखा देखने के बाद वे रिपोर्ट बता रही हैं कि राज्यों में ढील की वजह से, नियंत्रण की कमी की वजह से इन पैसों का दुरुपयोग हो रहा है। मैं यहां पर सारे सदस्यों से निवेदन करना चाहता हूं कि यह धन देश की जनता की गाढ़ी कमाई का है और इसको बर्बाद करने का किसी को अधिकार नहीं पहुंचता है।

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : पता नहीं, ये क्या बोल रहे हैं।

श्री यशवन्त सिन्हाः हम जो बोल रहे हैं वह आपको खूब समझ में आ रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय, यह आवश्यक है कि हम जितने सदस्य यहां बैठे हैं वे सब इस बात की चिन्ता करें कि इस पैसे का सदुपयोग हो और पैसा सही रूप से सही व्यक्ति तक, सही काम के लिए पहुंचे। मैं कहना चाहता हूं कि जो राज्य इस दिशा में सही काम करेंगे, अब जो नई व्यवस्था बनाई जा रही है, उसमें कोई न कोई ऐसा उपाय किया जाएगा जिससे उन राज्यों के हिस्से में अधिक पैसा जाएगा। जो राज्य पैसे का सदुपयोग करेंगे उनको अधिक पैसा जाएगा और जो दुरुपयोग करेंगे, उन राज्यों को कम पैसा दिया जाएगा।

उपाध्यक्ष महोदय, इसके साथ ही साथ मैं यह कहना चाहता हूं कि हम यहां विश्वास मत के लिए खड़े हैं। विश्वास मत पर लालू जी का जो निर्गुण भाषण हुआ, उसको सुनकर हमारे अखबार वाले भाइयों की भी यह मजबूरी रहेगी और उनको बड़ी मुश्किल होगी कि वे उसमें कहां से क्या निकालें और क्या छापें?

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : हमारा वह भाषण स्वदेशी भाषण था। यही आपकी समझ में नहीं आ रहा है।

श्री यशवन्त सिन्हाः लालू जी खुद कह रहे थे कि विदेशिया था, तो क्या विदेशिया स्वदेशिया हो गया?

श्री वीरेन्द्र सिंह (मिर्जापुर): विदेशिया यदि स्वदेशिया हो जाएगा, तो स्वदेशिया लजा जाएगा।

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : यशवन्त जी तो विदेशिया हो गए हैं।

श्री सशवन्त सिन्हाः देश की अर्थव्यवस्था किसी एक दल की जिम्मेदारी नहीं है। देश की अर्थव्यवस्था इस सारे सदन की जिम्मेदारी है। हम सब लोग सम्मिलितरूप से एक साथ इस देश की अर्थव्यवस्ता के लिए जिम्मेदार हैं और हमें इस बात को समझना चाहिए।

We must realise that each one of us has to make his contribution. This whole House, Parliament as a whole, has to make its contribution to improve the economic situation of this country. I would like to submit to all parties and all Members that despite all the problems this country has faced, we have brought the economy back on the rails. Feel-good factor, as they call it, in the economy has improved and the country is ready to take off.
Let us not do anything in this House for which we might have to repent later.

मैं सारे सदस्यों से, सारे राजनैतिक दलों से अपील करना चाहता हूं कि जहां तक अर्थव्यवस्था का सवाल है, अपने दलीय मतभेदों को भुलाकर हमें उसकी चिन्ता करनी पड़ेगी। लालू जी ने एक बात कही थी, उसका उत्तर देना आवश्यक है। उन्होंने बिहार के बारे में कहा कि हमें बिहार को छलना नहीं चाहिए। उन्होंने प्रधान मंत्री जी, जो बिहार गये थे, वहां उन्होंने कुछ कार्यक्रमों और कुछ योजनाओं का शिलान्यास किया। कल हम लोग गये थे, बिहार के मुख्य मंत्री महोदया भी वहां थीं। वहां पर राजगीर के पास एक आर्डिनैंस फैक्ट्री का शिलान्यास हुआ। इंडीपैंडेंट इंडिया में पहली बार एक आर्डिनैंस फैक्ट्री बिहार में बनने जा रही है। लालू जी, अगर बिहार के लिए जरा सा दर्द है तो आपको भी इस बात पर फ़ख़ और संतोष होना चाहिए। २५ हजार करोड़ रुपये का इन्वेस्टमैंट उस राज्य में होने जा रहा है। बोकारो स्टील प्लांट के बाद बिहार में सैंट्रल गवर्नमैंट का इन्वेस्टमैंट नहीं के बराबर है, इसकी चिन्ता हुई? किसने चिन्ता की है?

श्री रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): श्री रीतलाल प्रसाद जी कह रहे थे कि १५ वर्षों से जांच पड़ताल कोडरमा में हुई और शिलान्यास राजगीर में हो गया।

... (व्यवधान)

आज रति लाल वर्मा जी कलप रहे थे।

... (व्यवधान)

वह कहीं बैठे होंगे, आप उनसे पूछ लीजिए।

... (व्यवधान)

सारी औपचारिकताएं पूरी हो गई थीं।

... (व्यवधान)

वह वहां बैठे हैं।

... (व्यवधान)

उपाध्यक्ष जी, तनिक आप बता दें।

... (व्यवधान)

श्री यशवंत सिन्हाः रघुवंश बाबू, हम लोगों के बीच में यही तो दिक्कत है। आज अगर बिहार पिछड़ा है, आज अगर बिहार आगे नहीं बढ़ रहा है।

... (व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : यशवंत बाबू, विरोध की बात हमने नहीं की। बिहार में कहां रहे।

... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please do not interrupt. You are a senior Member.

श्री यशवंत सिन्हाः रघुवंश बाबू जी, आपके पीछे बैठे हैं, उनको समझाईए। ... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Are you yielding?
... (Interruptions)
MR. DEPUTY-SPEAKER: The Minister is not yielding.
... (Interruptions)

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : आखिर यह १४ तारीख को खरवास में ही क्यों? किसान की चिन्ता, मजदूर की चिन्ता है लेकिन मैं आपको बोलता हूं कि यह बिल्कुल आई वॉश है।

... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: May I make a request to the hon. Minister. Whenever you are yielding, you have to say that. Then only, I will allow him to speak.
THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YASHWANT SINHA): Mr. Deputy-Speaker, Sir, I am on my legs.

श्री यशवंत सिन्हाः लेकिन यहां पर नार्मल कर्टसी अगर नहीं है।

... (व्यवधान)

हम खड़े हैं और वे बोले जा रहे हैं।

... (व्यवधान)

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : मैं भी अपने बैंच पर खड़ा हूं।

... (व्यवधान)

श्री यशवंत सिन्हाः मैं खड़ा हूं, मैं अपने पांव पर हूं। लालू जी, आप बैठ जाइये।

... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: This is what I am saying. This has to be observed.
... (Interruptions)
MR. DEPUTY-SPEAKER: If you are yielding, then only I will allow him to go on record. Otherwise, I will not allow him to go on record.
THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YASHWANT SINHA): I am not yielding.
... (Interruptions)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Let there be some norms.

श्री यशवंत सिन्हाः मैं यह कह रहा था कि बिहार में पहली बार दशकों में एक अच्छे काम की शुरुआत हो रही है। क्या है यह, यह तर्क यहां इस सदन में दिया जा रहा है। वहां पर कहा जा रहा है कि कुछ नहीं होगा, यह निराशा का वातावरण है। इसी से बिहार पीछे पड़ा हुआ है। आपस के टक्कर की वजह से ही बिहार पीछे पड़ा हुआ है। हमको आपस में किसी पर कोई विश्वास नहीं है। कुछ नहीं करेंगे, इससे बिहार आगे नहीं बढ़ेगा। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि यह सरकार राज्यों को आगे बढ़ाने के लिए, क्षेत्रों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है और इस बजट में हमने पूरे क्षेत्र को आगे बढ़ाने कि लिए इतना कन्सैशन दिया है, अगर वह सारा कुछ हो तो इस देश के जितने पिछड़े क्षेत्र हैं, वह औद्योगिक दृष्टिकोण से आगे बढ़ेंगे। यहां पर बहुत चिंता हो रही थी। लालू जी नहीं थे, उस दिन रात को बारह, साढ़े बारह बजे जब मैं बजट भाषण का उत्तर दे रहा था।

... (व्यवधान)

श्री रामदास अठावले (मुम्बई उत्तर-मध्य) : सरकार ही नहीं रहने वाली है, तो बिहार को कैसे आगे बढ़ायेंगे।

... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Ramdas Athawale, he is not yielding. Please resume your seat.

... (Interruptions)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please do not interrupt. He is not yielding.

श्री यशवंत सिन्हाः मुझे याद है, उस दिन रात साढ़े बारह बजे जब मैं बजट भाषण का उत्तर दे रहा था, आप भी यहां मौजूद थे। मैंने उस समय कहा था कि नार्थ ईस्टर्न स्टेटस के लिए मैंने जो टैक्स पैकेज की घोषणा की थी, मैं लक्षयद्वीप, अंडमान निकोबार और जम्मू कश्मीर में उसी टैक्स इन्सेंटिव पैकेज को वहां पर लागू करूंगा। यह कौन सी चिन्ता है? यह चिन्ता हमारे दूर-दराज इलाकों की है। इन सारे इलाकों की तरक्की हो, वे आगे बढ़े। मैं अभी दो दिन लेह में था। हमारे रक्षा मंत्री महोदय का यह विचार था कि हमें वहां जाकर अपने देश के जो प्रहरी हैं, जो सेना के लोग हैं, उनसे मिलना चाहिए। मैं उनसे मिलने के लिए गया था। वहां पर मैंने देखा कि लेह जो दूर-दराज का इलाका है, वहां क्या स्थिति है? कौन लेह के बारे में बोल रहा है? कौन सी चिन्ताएं हम लेह के बारे में दिखा रहे हैं।

जहां बिजली नहीं है, जहां पानी नहीं है, जहां खराब जमीन है, क्या वहां की चिन्ता की? आज श्री शरद पवार जी हमको पाठ पढ़ा रहे हैं कि इस देश में बेरोजगारी का क्या होगा, इस देश में विकास का क्या होगा, इस देश में बंद उद्योगों का क्या होगा। पचास वर्षों में क्या हुआ, मैं यह सवाल कांग्रेस पार्टी से पूछना चाहता हूं। क्या आपको पचास वर्ष और पावर में रखना पड़ेगा तब आप इन समस्याओं के समाधान के बारे में कहीं पहुंच पाएंगे? आपको कितना टाइम चाहिए? कुछ दिनों के लिए युनाइटेड फ्रंट की दो सरकारें थीं, अटल जी की १३ महीनी के सरकार, कोई और ११ महीने की सरकार, कोई और २२ महीने की सरकार, आप तुलना करते हैं। सबको जोड़कर भी जब तक कांग्रेस पार्टी शासन में रही है, हम उसके आसपास पहुंचने की बात भी नहीं करते। मुझे अफसोस होता है जब यहां बैठे हुए हमारे वामपंथी मित्र, लोकतांत्रिक मोर्चे के लोग, अन्य लोग आज उनके पास जा रहे हैं कि सरकार बना लें, किसी तरह सरकार में आ जाएं। किस बात के लिए आ जाएं? पचास वर्षों तक इस देश में जो कुछ हुआ है, क्या उसी को आगे पचास वर्षो तक करने के लिए आ जाएं? कौन यहां पर खड़ा होकर कह सकता है? आज चिदम्बरम जी यहां नहीं हैं। मैं उनके साथ सहानुभूति जताना चाहता हूं, उन्होंने भी बजट पेश किया था और उस बजट के साथ भी वही खतरा पैदा हुआ था जो इस साल के बजट के साथ हुआ है।

... (व्यवधान)

श्री बलराम जाखड़ (बीकानेर) आप क्या कह रहे हैं, पचास वर्षों में कुछ नहीं हुआ?

... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Are you yielding to Shri Balram Jakhar?

SHRI YASHWANT SINHA: I am not yielding.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Balram Jakhar, the Minister is not yielding. Please sit down.

श्री वीरेन्द्र सिंह (मिर्जापुर): पचास साल में यदि कुछ हुआ है तो केवल सोनिया गांधी पैदा हुई हैं।

... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing will go on record unless Shri Yashwant Sinha yields.

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : आप क्यों गुस्सा कर रहे हैं। गुस्सा आता ही है, ये जा रहे हैं इसलिए इनको गुस्सा आ रहा है।

... (व्यवधान)

श्रीमती भावना देवराजभाई चिखलिया (जूनागढ़) : उपाध्यक्ष जी, अगर पन्द्रह वर्ष का लड़का ढाई फीट का हो तो क्या उसको विकास कहते हैं?

... (व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please stop this running commentary.

श्री यशवंत सिन्हा : स्वतंत्र भारत में अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार दूसरी सरकार हे जो बिना कांग्रेस पार्टी के समर्थन के न केवल बनी है बल्कि सालभर से ज्यादा चली है, पहली सरकार जनता पार्टी की श्री मोरारजी देसाई की थी। लेकिन इस देश में होता क्या है। कांग्रेस पार्टी, सत्ता से कुछ दिन बाहर हुई कि बिन पानी के मछली की तरह छट-पट करने लगती है। इनके सत्ता से बाहर ६-८ महीने गुजरे, इनको कुछ-कुछ होने लगता है।

... (व्यवधान)

उसके बाद जोड़-तोड़, उठा-पटक, कहीं लालू जी को लगाओ, लालू जी कह रहे हैं कि एक मिनट में चित्त करेंगे, धोबिया पाट मारेंगे। किसलिए मारेंगे, हमने आपका क्या बिगाड़ा है। आपके खिलाफ उन लोगों ने केस किया, आपको जेल कोर्ट ने भेजा, हमारे खिलाफ तो हाई कोर्ट का स्ट्रिक्चर आ रहा है कि तेजी नहीं कर रहे हैं। कुछ-कुछ हो रहा है उन लोगों को और मैं आपको सावधान करना चाहता हूं कि इनके फेर में मत पड़ें, एक बार हम पड़कर देख चुके हैं। चंद्र शेखर जी यहां नहीं हैं। जब देवे गौड़ा जी की सरकार बनी थी, मुझे याद पड़ता है कि उस समय इंडियन एक्सप्रैस में मैंने एक लेख लिखा था। मैंने चंद्र शेखर जी की सरकार के अनुभव का वर्णन करते हुए कहा कि देवेगौड़ा जी की बहुत मजबूत सरकार बन गई है, चलेगी नहीं, सालभर पूरा नहीं होगा। मुझे लोगों ने कहा कि क्या भविष्यवाणी कर रहे हैं, यह सही नहीं होगा, यह बिल्कुल गलत है।

... (व्यवधान)

मैंने कहा था देवेगौड़ा जी की सरकार सालभर पूरा नहीं करेगी क्योंकि उनके सालभर पूरा करने से पहले कांग्रेस को कुछ-कुछ होने लगेगा और हुआ। गुजराल साहब उसी तरह चले गए। लालू जी कह रहे हैं एक मिनट में बनाएंगे।

क्या बनाओगे, ताश के पत्तों का घर बनाओगे? उनके साथ जो बैठेगा, मित्रों, वह बर्बाद होगा, याद रखो। अगर खुद का अनुभव नहीं है तो हमारे अनुभव से सीखो और अगर उसके बाद भी नहीं सीखना चाहते हो तो चूल्हे में जाओ।

(इति)

1526 hours

SHRI PURNO A. SANGMA (TURA): Mr. Deputy Speaker, Sir, on the 20th of March, 1998, when the Prime Minister sought the confidence of this House, I had reminded the House and I quote:

"This is the fifth Motion of Confidence during the last 22 months. I do not know how many more Motions of Confidence would be coming up before this House in the near future but I am quite sure that there could be at least one more in less than one year."

Well, I was wrong. I expected a Confidence Motion in less than one year but here we have today another Confidence Motion in slightly more than one year.

1527 hours (Mr. Speaker in the Chair)

This morning, while participating in the debate the hon. Home Minister referred to article 67 of the Constitution of Germany wherein he pointed out that the Motion of No-Confidence has to be accompanied by a proposal for an alternative Government. I do not think today this House is discussing a No-Confidence Motion. We are today discussing a Confidence Motion moved by the Prime Minister himself. So, where is the question of the Opposition presenting before this House an alternative? I had expected the hon. Prime Minister to have told this House as to how this Confidence Motion has come about. What are the reasons for it? Why did the President of India direct the Prime Minister to seek the confidence of the House? I think the whole country was expecting that the Prime Minister in his initial observations, after moving the Motion, would tell this august House the reasons for seeking the Vote of Confidence. The Prime Minister said that instead of speaking first, he would prefer to listen. I think there is a confusion between the Confidence Motion and the No-Confidence Motion. Today we are not discussing the No-Confidence Motion but the Confidence Motion.

During the General Elections of 1998, the slogan of BJP was, `an able Prime Minister and a stable Government'. This Government assumed office on the basis of a National Agenda for Governance. In the last 13 months of this Government, I have neither seen the stability nor the governance.

I think these 13 months have been a period in our country where the country has witnessed a rule of non-governance. While participating in the debate on the Confidence Motion last time, though I elaborately dealt with the prevailing political instability in this country, I emphasised that as far as our nation is concerned, more than stability, it is the governance which is more important. I would like to quote:

"Is it enough for our country to have a stable Government if that Government does not govern? I think the important thing today is not merely stability. It is the good governance which is the issue today."

I further said:

"I am not worried about the stability of Mr. Vajpayee's Government. I am only worried about the governance by this eighteen-party Government."

I would have liked to go into the matters relating to finance. But then I do not have much experience of finance. Whatever the Finance Minister has claimed just now about the economy, I think, tomorrow somebody will reply to all those things. I have something with me. I do not want to waste my time by contradicting the Finance Minister. But who does not know what is the state of affairs in this country today? You talk of economy or you talk of foreign policy. Of course, again, I am not going to deal with the foreign policy. Though the hon. Home Minister made a reference to this in the morning, my colleague Shri Natwar Singh will be dealing exclusively with the foreign policy tomorrow or may be late this evening.

Look at the law and order situation in the country and look at the morale of the nation as a whole. I do not think anybody need to explain all this with the type of electronic media and print media that we have and with the information technology that is available today in this country. It does not matter what Shri Sangma is speaking on the floor of the House. People already know; people can judge whether Shri Sangma is speaking truth or not. It does not matter. I am not going into all this and make a reply to these points.

Today, I thought I will deal exclusively with one area of concern. That area of concern is the denigration of institutions that is taking place in our country. The way our institutions are being weakened, the way our institutions are being destabilised and the way our institutions are being denigrated, this is the cause of worry for us. If we are able to preserve, promote and strengthen our institutions and if we are able to strengthen and preserve our systems, the country will move even with instability of the Governments. I am told Italy had 51 governments in 50 years. But it is moving. So is the case in many parts of the world. Therefore, what is important in our country to remember is that how do we preserve, protect and strengthen our institutions.

I am sorry to say that in the last thirteen months, a lot of damage has been done to our institutions and I have no courage to blame the hon. Prime Minister for this. I have faith on him. But how has it happened? Is it deliberate or accidental or conscious or unconscious? Perhaps, it is due to lack of experience in governance. Look at the institution of the office of the President himself! The President's name was being dragged on the floor of the

House to facilitate a debate so much so that next day, the Minister for Parliamentary Affairs had to intervene saying that the Speaker will go through the records and will expunge all those remarks. It was in a very bad taste. The President of India and the Government communicate with each other. Secret correspondences are there; confidential correspondences are there but today, we find that even the secret communications between the Government and the President are being leaked to the Press. Are we not denigrating the office of the President? Look at the manner in which Admiral Vishnu Bhagwat had been dismissed! The President of India is the Supreme Commander of the Armed Forces but we are told through the Press that the President of India was not even consulted.

SHRI INDRAJIT GUPTA (MIDNAPORE): He had not signed it.

SHRI PURNO A. SANGMA (TURA): It was not the question of approving or signing it. What did the Government do? This is what we read in the papers, Mr. Prime Minister. If it is not true and even then we are deliberating it, it is because you never told the Parliament about it. This is another charge I want to level against you. You never tell the Parliament as to what is happening and we come to know about it through the electronic and print media. But the allegation is that the President did not sign it. The President was simply "informed". I am worried about it. Again Mr. Prime Minister, I want to say that I have no allegations against you because you would not have done it deliberately and it cannot be so. You may come to the Parliament itself.

What is happening in Parliament? I am sorry to say that today Parliament has become non-functional. In the last Session, 17.29 per cent of the time had been lost because of disorder. I know that you will ask as to who created disorder. Is it not the Opposition? You can ask me this legitimate question. If the Opposition was creating this problem, was it not your failure of floor management? Do you ever think as to how the floor has to be managed? If the Treasury Bench has no patience to hear the Opposition, if the Minister for Parliamentary Affairs provokes the Opposition, does not even talk to the Opposition Leaders and wants to impose decisions and his will, then how do you manage the floor of the Parliament? The floor management of Parliament is the sole responsibility of the Treasury Benches. Today, if the whole country is witnessing slogans, if the whole country is witnessing the Members coming to the well of the House and if the whole country is witnessing disruptions in the proceedings of the House, then I hold the ruling party responsible for this.

It is the failure of the Government's floor management.

Then, what is the Parliament of India? The Parliament of India consists of the President and the two Houses... (Interruptions)

SHRI VIJAYASHANKAR (MYSORE): About the bogus voting also, do you want us to take the responsibility?...(Interruptions)

SHRI PURNO A. SANGMA (TURA): I am raising serious issues. I am not blaming you fully. Perhaps, we are also partly responsible. But I am holding you more responsible. These are the serious issues of the country. We must apply our mind. I am sure, the hon. Prime Minister is with me a hundred per cent.

I said, right at the beginning, that what has happened has not happened deliberately because Shri Vajpayee would not have consciously allowed all these things. That is why, I attributed it to lack of governance and lack of experience in governing the country. That is what I am attributing to you. Therefore, you should learn this. What happened to the Prasar Bharati (Amendment) Bill?...(Interruptions)

SHRI M. MASTER MATHAN (NILGIRIS): You have got fifty years of experience. You are talking of good governance. But why did you go to the Well of the House?...(Interruptions)

MR. SPEAKER: Please do not interrupt him.

SHRI PURNO A. SANGMA (TURA): What happened to the Prasar Bharati (Amendment) Bill? It was passed in the Lok Sabha. The Government decided not to send it to the Rajya Sabha. Is it not a violation of the constitutional obligation and constitutional requirement? Can the Government just take the Parliament for a ride? It thinks that the Upper House of Parliament is just nothing. Did the same thing not happen with regard to the imposition of Article 356 in regard to Bihar? Was it not the duty of the Government to see that after having passed it in this House, it should automatically have gone to the Rajya Sabha? But the Government decided not to send it to the Rajya Sabha because technically the Government can withdraw its decision. Are we going only by the technicalities? Is the imposition of President's Rule in any State a matter of a mere debate in Lok Sabha or Rajya Sabha? Do we not have a Constitution of India? Why are you doing it?

What happened in the last thirteen months? I do not want to hurt my friend Shri Pramod Mahajan. What is happening in the Information and Broadcasting Ministry is because of him only. Shrimati Sushma Swaraj is here. She was a very very good Minister of Information and Broadcasting after me...(Interruptions)

THE MINISTER OF COMMERCE (SHRI RAMAKRISHNA HEGDE): Why do you not say that she was better than you?...(Interruptions)
SHRI PURNO A. SANGMA (TURA): I am not touching Commerce. I am not touching exports and imports. Today, there is no CEO. There is no Director-General, Doordarshan. The employees are on strike. Only Shri Pramod Mahajan is there. So, I was asking somebody this question: What is happening in Doordarshan? He said that there is no more Doordarshan. I asked why it is so. He said that it is the Sarkar Darshan now. It is no more Doordarshan but it is giving the Sarkar Darshan...(Interruptions)
SHRI S. JAIPAL REDDY (MAHABUBNAGAR): It is Shri Mahajan's Darshan...(Interruptions)
SHRI PURNO A. SANGMA (TURA): I am talking about Parliament. Shri Yashwant Sinha, you remember that when you presented the 1998-99 Budget, for the first time in the history of this Parliament, the Demands for Grants of all the Ministries had to be guillotined. The Demands of only one Ministry, the Ministry of Agriculture, were discussed for exactly 15 minutes. Shri Balram Jakhar spoke for 15 minutes. If the Parliament of India has to deny the people of this country a debate on the Budget proposals and if we have to just guillotine everything, are we doing justice?

Is the Government functioning? Is the Parliament functioning? I am asking these very serious questions.

From the day you took over, till today, this Government have promulgated 35 Ordinances. ... (Interruptions) Yes, 35 Ordinances. They have not been ratified by Parliament of India. Is it a Government by Ordinance only? Where is the relevance of Parliament of India? I am talking of the weakening of our institutions and Parliament is the most sacred institution in the country. If the laws of this country have to be only promulgated and in 13 months you have promulgated 35 Ordinances that could not be ratified by the Parliament of India, are we doing justice to the Parliamentary democracy? I am asking this very simple question.

Come to the institution of Governorship. Come to any other institution. I do not want to name them. Today, anybody can become a Governor. You only have to be a loyal party man and after having occupied the post, you continue to be a party man and declare yourself to be a party man. Where is the impartiality of the office or of an institution? It is all right. One can have an ideology. I have an ideology. Tomorrow, I can become a Governor. But the moment I become a Governor, I think, I am a Governor and that is all and nothing else, if I have to do justice to my job. Therefore, anybody can become anybody in this country today. I think, we are not doing justice to the institutions. Institutions are suffering.

... (व्यवधान)

श्री राजवीर सिंह (आंवला): आपकी रोमेश भंडारी जी के बारे में क्या राय है? उनको आप ही ने भेजा था।

... (व्यवधान)

आपने यू.पी. में रोमेश भंडारी जी को राज्यपाल बना कर भेजा था। उनका कैसा व्यवहार था, उसके लिए आपने क्या किया?

SHRI PURNO A. SANGMA (TURA): You do not know what I did. ... (Interruptions)

मैंने रोमेश भंडारी के इश्यु पर इसी कुर्सी पर बैठ कर क्या किया, आप उसे देख लीजिए।

श्री राजवीर सिंह (आंवला): वह स्पीकर ने किया, कांग्रेस पार्टी ने नहीं किया। ... (व्यवधान) इस समय स्पीकर नहीं बोल रहे हैं।

MR. SPEAKER: Please sit down.
... (Interruptions)
SHRI PURNO A. SANGMA (TURA): Come to bureaucracy. I do not want to go into the details. What happened to the Enforcement Director, Shri Bezbaruah? What happened to the Secretary, Urban Development Ministry?
SHRI MOHAN SINGH (DEORIA): What happened to the Vigilance Commission?

SHRI PURNO A. SANGMA (TURA): Whatever it may be, Mr. `a' or Mr. `b' is appointed Secretary to the Government of India and the Minister says, `She will not exercise the power of the Secretary and I will not give her any work'. It is not correct to do so. We are denigrating the established systems, the established institutions? I can go on and on to many other things. But I do not think I need to because I promised my party that I would take only half an hour.

In the last debate, I also spoke about a hidden agenda, a hidden agenda for saffronisation of educational system. My apprehension was, how RSS is going to work in every school of India? Dr. Murli Manohar Joshi promptly stood up and said, `You are wrong, Shri Sangma, we do not have any hidden agenda'. I told this House that well, I am only expressing my suspicion. I used the word `suspicion'. Have we not seen in 13 months? Are we not seeing in 13 months what is happening to the HRD Ministry? Was this country not stunned when in the Conference of the Education Ministers of this country, Dr. Murli Manohar Joshi introduced an RSS man saying that here is a person who will formulate our education policy and here is a person who will brief what will be the future policy of education where Saraswati Vandana is going to be compulsory.

We only remember that. I do not think anybody has forgotten it.

SHRI INDRAJIT GUPTA (MIDNAPORE): What was that expert?

SHRI PURNO A. SANGMA (TURA): That expert's name is Shri Chitlangia. It is a very difficult name to pronounce.

Sir, I have information as to how people are being selected for institutions in the Ministry of Human Resource Development, how people are being posted, how the syllabi are going to be changed, how the history is going to be refined etc. We know how the Indian Council of Historical Research was reconstituted. They may deny all these things. But I strongly feel that we are heading towards a situation where there will be a danger for our democracy as such.

Then, there is the example of handling the issue of Admiral Vishnu Bhagwat's dismissal. We read in the Press that he was a threat to national security. The official statement issued on 30.12.1998 said that the Admiral Bhagwat's conduct threatened national security. It went on to say that Vishnu Bhagwat has taken a series of actions in defiance of the established system of Cabinet control over the Armed Forces.

Sir, I have already referred as to how the President was ignored. I have also read about Shri Brajesh Mishra claiming that the Opposition people were consulted, Shri Sharad Pawar was consulted, Shri I.K. Gujral was consulted etc. I know that Shri Sharad Pawar has described it as a total falsehood. We read everyday statements and counter-statements being issued by Admiral Bhagwat and Shri George Fernandes. Yesterday, I received a big booklet explaining as to why he was sacked. I want to ask how a courageous person and a person with a clear conscience like Shri George Fernandes, who is very close to me, - I have a lot of admiration for him; he helped me so much when I was the Labour Minister and he was a trade union leader - is frightened today. He is going to the Press everyday to defend himself and he has now come out with a booklet to defend himself. If the Defence Minister has become so defensive, what will happen? Instead of defending the country, he is now defending himself. How will the country run?

Sir, I am not going into this matter further because we are expecting a debate on this issue and I will be participating in that debate. Therefore, I am not going into the whole issue of the dismissal of Admiral Bhagwat. But I only want to ask this question that when the matter is before this House, when the hon. Speaker has admitted a Motion and it has to be discussed on the floor of the House, why has the Government been going to the media everyday? Why did the Government not come to Parliament earlier and tell us what had happened? We came to know everything from the Press. The Parliament has not been told anything about it. Why is the Government trying to justify his action through the media and not through the Parliament of India?

I take a strong objection that when a matter is lying before the House and when the hon. Speaker has admitted the Motion, I think, the Government should stop going to the media. Whatever the Government has to say, let them say it on the Floor of the House. Otherwise, the whole thing is going to be prejudiced.

I never talk that I have some element of being a prophet. But on the 28th March, 1998, here is what I have said. I was reading my speech. And I found that whatever I had said on that day is happening. I spoke so much about non-governance.

Another thing I spoke about on that day was very interesting. I referred to the national agenda for governance where it had a reference to the National Water Policy. I attributed that this National Water Policy has been included there to please somebody in the South. I wished the Prime Minister all the best and success. I would like to quote that:

"I wish you well in your effort to please somebody in matters of Cauvery water. I wish you success in solving this problem. But having known the South Indian river, which is as mighty and as sacred as the Ganga, I am only afraid that the Cauvery and the riparian water issues may wash away your Government."
That is how, I think, you are here today. And that is precisely the reason why we are discussing this Motion. I cannot wish you all the best second time. I have to oppose the Motion moved by the hon. Prime Minister.
(ends)

1557 hours
SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): Mr. Speaker, Sir, I would have appreciated Shri Atal Bihari Vajpayee if he would have stepped down from the office instead of seeking this vote of confidence after our leader had withdrawn support to his Government yesterday. There are reasons for seeking the resignation of the Prime Minister. In the forenoon, the hon. Minister of Home Affairs had stated that when this Government was formed in March, 1998, the President had asked Shri Atal Bihari Vajpayee to form the Government even before the letter of support from our party was given to the President. The fact is not like that. Only after the receipt of our letter, His Excellency, the President, had invited the Leader of the BJP Parliamentary Party, Shri Vajpayee, to form the Government. Thus, we were the prime cause for the formation of this Government. ... (Interruptions)
SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): I have to mention the facts. ... (Interruptions)
MR. SPEAKER: Hon. Members, please take your seats. What is this?
... (Interruptions)
SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): The practice of Shri Baalu is always to disturb the House. He is doing it even now.
Not only for the formation of this Government, but, for the formation of the alliance which BJP had established for the last Lok Sabha elections we were the root cause and our leader Puratchi Thalaivi was the cause for electoral alliance from State to State. Advaniji would recall that after the 1996 General Elections there was nobody to support them in this Parliament when they sought a Vote of Confidence, except Shiv Sena. On the contrary, did you get these many parties in this House to support you when you had sought a Vote of Confidence during 1998? Is it not our leader the root cause for everything? What reward have you given to her?
MR. SPEAKER: You cannot read the entire text. You can just quote a few sentences.
SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): I am not reading everything.
Have you not ill-treated us? Have you not humiliated us? With all faith we have formulated our National Agenda and in the National Agenda we have included so many things pertaining to Tamil Nadu. Have you fulfilled all of those aspirations of Tamil Nadu? In our National Agenda, we have assured the country the constitutional protection of 69 per cent reservation which is prevailing in Tamil Nadu. We have assured to make arrangements to declare all the national languages of the country, including Tamil, as the official languages of the Union Government. We have assured 33 per cent reservation for women in the Parliament and in the State Legislatures. We have assured amicable solution to the river water disputes, as my predecessor the former Speaker of Lok Sabha himself pointed out, including Cauvery water dispute. We have assured to implement the Sethu Samudram project of Tamil Nadu in a fitting manner.
Now I am asking our Prime Minister what steps he has taken for the implementation of all those schemes which we have assured to the country in our National Agenda. Shri Vaiko is going to speak. We have included the Sethu Samudram project even in this Budget. Just a mention is there; but not a single rupee has been earmarked by the hon. Finance Minister in his Budget. A single word is there; that is all. Now everybody is speaking on behalf of the BJP. Their Spokesman was saying that we have withdrawn the support because, you have not dismissed the DMK Government in Tamil Nadu. The dismissal of the DMK Government is not in our hidden agenda. We have assured the people of Tamil Nadu during the elections itself that if we come to power, if our allies come to power in the country, we shall dismiss this anti-people DMK Government from power.
SHRI INDRAJIT GUPTA (MIDNAPORE): How can he dismiss it?... (Interruptions)
SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): We have assured the people in front of the hon. Prime Minister himself; in front of the hon. Home Minister himself, our leader had assured the people of the country and people of that State that if we come to power, the anti-people Government headed by the DMK shall be dismissed... (Interruptions)
... (Interruptions) That would be their hidden agenda... (Interruptions)
MR. SPEAKER: Shri Baalu, please.
... (Interruptions)

this is their hidden agenda... (Interruptions)
SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): Sir, we had not demanded the dismissal of the Tamil Nadu Government during our personal talks, but we have demanded that in this House itself. We have assured the people of Tamil Nadu that we would dismiss the Government of Tamil Nadu... (Interruptions)

श्री शंकर प्रसाद जायसवाल (वाराणसी): वह कांग्रेस वाले करेंगे।

SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): We were not in alliance with them in the elections. In the elections we had an alliance with the BJP. In front of their leader and all the people we had assured the people of Tamil Nadu that we would dismiss the DMK Government in Tamil Nadu. It is not in our hidden agenda. We have openly told the people... (Interruptions)
(Interruptions)
MR. SPEAKER: Shri Muthaiah, Please address the Chair.
SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): Sir, on so many occasions we have put forth this demand openly in this House itself. Now, these people are saying that because of the non-dismissal of the DMK Government, we have withdrawn the support. The reason is not that alone, Sir.
(Interruptions)
SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): Yes, even now we are saying that the DMK Government ought to be dismissed. We have been demanding this Government. We had even demanded this when Shri Indrajit Gupta was the hon. Home Minister. In the Rajya Sabha we had demanded it from him. It is not only with this Government ... (Interruptions)
(Interruptions)
SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): Even with the United Front Government we had demanded this. We have demanded with this Government also and even we would demand with the future Government... (Interruptions) Yes, openly, we will demand. It is not in our hidden agenda like you have... (Interruptions)
SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): Sir, when we had asked for justice in the Cauvery Water Issue, we were betrayed. When we had insisted for constitutional protection of 69 per cent reservation for the OBCs, we have been betrayed. When we were eagerly waiting for the steps to be taken to treat Tamil as the official language of this Union Government, we were betrayed. These are the things pertaining to our State alone. There are so many things.
When our leader had raised the issue of Vishnu Bhagwat in the Coordination Committee itself, it had been neglected and the neglect itself has revealed clearly the failure of this Government to uphold the security of the country itself. They are saying that only after all these things our leader had insisted on the Bhagwat issue. But I would like to inform the House that as early as 2 January 1999, our leader had issued a statement insisting the hon. Prime Minister to take action in this regard and to have a thorough enquiry on this issue.
After all these demands of ours were neglected, we decided to ... (Interruptions)
SHRI INDRAJIT GUPTA (MIDNAPORE): She demanded something about the Defence Minister also. ... (Interruptions)
SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): Yes. On 2-1-1999, she had given a statement stating that this should be thoroughly inquired into. After that, with all these things, we came to understand that as long as this Government is going to be allowed to remain in power, that shall be a security risk for this country and because of the failure of this Government, we have decided to withdraw our Ministers from the Cabinet and to stay away from this Government. From yesterday, we have withdrawn our support to this Government.
Today morning, Shri Advaniji has stated so many things but he never cared to state something about his Home Ministry. As to what negligence this Home Ministry is having, I am having one instance of one Mr. Madani, who had been arrested under the NSA in connection with the Coimbatore bomb blast. Due to the negligence of the Home Ministry, a hard core terrorist who had supplied arms to the terrorist involved in the Coimbatore blast had been let off from the NSA. Sir, then to what conclusion can we come to? Today, he has appreciated the DMK for their support which they are going to lend to this Government when the voting is going to take place. ... (Interruptions)
SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): Yes. What is the hidden agenda between the Home Minister and your Party for the past one year? Sir, he had rewarded them like anything. For what? You have to tell us ... (Interruptions)

... (Interruptions)
SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): For the past one year, he had done his level best to bail out Shri Karunanidhi from the Jain Commission accusations. That is why, the DMK is going to reward this Government. This Government had rewarded all these things to the DMK. That is why, after all these facts having come to light, we have withdrawn our support to this Government and as such, I am opposing the motion moved by the hon. Prime Minister; we are opposing this Government wholeheartedly and all the 18 Members from our Party are opposing this motion.
Somebody is spreading some rumours; some managers of this Government who have not attended this House are spreading some rumours outside that there is going to be a split in the AIADMK. No. All the 18 Members are wholeheartedly with our leader, Puratchi Thalaivi Dr. Jayalalitha in opposing this Motion of Confidence in this House. ... (Interruptions)
(ends)
DR. SUBRAMANIAN SWAMY (MADURAI): In Hyatt Regency hotel they are doing it. ... (Interruptions)
MR. SPEAKER: Now, I call upon Shri Vaiko to speak.
... (Interruptions)
MR. SPEAKER: Order please.
1614 hours
SHRI VAIKO (SIVAKASI): Mr. Speaker, Sir, thank you very much. The hon. Prime Minister, Shri Atal Bihari Vajpayee has moved a motion calling upon this House to express confidence in the Council of Ministers headed by him.
Sir, with all sincerity, I am here to support the Motion.
Sir, some of my friends have been telling about the mandate. The mandate was given by the people of India in their own wisdom. It was not an absolute majority to any political party. Bharatiya Janata Party became the single largest party. In the year 1996, when the mandate was given, at that time also, the Congress was defeated. (Interruptions) Yes, they are the real culprits. That is why, I am pointing at them. Again in the year 1998, the people had rejected Congress outright. The Congress had been voted out. The mandate we sought from the people was on the plank of stability under the leadership of Shri Atal Bihari Vajpayee. That was the mandate given by the people. This side only focussed the leader. Here is the leader to lead the country. But in the other camp, they were in total confusion. They could not project a leader from their ranks. Therefore, now it is an attempt by the Congress Party, which has been their modus operandi for all these years in this country, to destabilize this Government. It is an attempt to destabilize the mandate given by the people. It is an attempt to destabilize democracy.

When Shri Sangma was referring to the parliamentary democracy, I recalled the words, "The devil quotes the scriptures of the Bible". Sir, I am looking at my friends from non-Congress (I) political parties here. There is not a single non-Congress political party either in this House or in the country which has not been a victim of the destabilization game of the Congress. In the 1996 elections, on the floor of this House, when Shri Deve Gowda took the reigns of the Government after the fall of the 13-day Government of Shri Atal Bihari Vajpayee, the, then President of the Congress Party, Shri Narasimha Rao, gave an assurance that their party would give unconditional support for its fullest term of five years. After some time, some strange theory of relativity was discovered by the destabilizers of the Congress Party and the time compression took place that that tenure of five years was suddenly reduced to 10 months. Shri Gowda was thrown out. Then, my esteemed friend, Shri Inder Kumar Gujral took over the reigns of the Government. It was only for six months. When they, the Congress Party, speak about parliamentary democracy and the norms of democracy, this country has not forgotten and the people of the country will not forgive for what has happened all these years.

The Congress Party does not allow any other party, any non-Congress Party to rule any State in this country and also the Centre. That is why, let us recall, what happened in the year 1959 to the Namboodiripad Government in Kerala. Out of l04 times when the State Governments were toppled, it was the Congress Party which dismissed 95 times.

In a democracy when a ruling party becomes an opposition party by the verdict of the people, if the members of that party have got any respect for democracy, they should wait for the next term. But as Shri Yashwant Sinha, our hon. Minister of Finance has stated, they cannot survive without power. (Interruptions)

SHRI A.C. JOS (MUKUNDAPURAM): Two theories of democracy are being promulgated! (Interruptions)

SHRI VAIKO (SIVAKASI): Yes. I can. I support them. You please listen.

SHRI A.C. JOS (MUKUNDAPURAM): I am listening to you.

SHRI VAIKO (SIVAKASI): It is your party which killed democracy in this country. When there was a threat to your Government due to the verdict of the High Court of Allahabad, it was your party which killed democracy, a model democracy. And to uphold democracy, along with some of our friends, we suffered in the dark cells of the prison. (Interruptions)

MR. SPEAKER: He is not yielding.

... (Interruptions)

SHRI VAIKO (SIVAKASI): You have no right to speak about democracy.

SHRI A.C. JOS (MUKUNDAPURAM): You got elected through Ms. Jayalalitha's support.(Interruptions)

SHRI VAIKO (SIVAKASI): I do not want to enter into that muddle now.

You can answer me. Would you answer me whether you destroyed democracy in the l975 or not? In the year l975 you murdered democracy. You were thrown out. Again, you were thrown out by the people of India in the year l977. The Congress Party was thrown out, lock, stock, and barrel. They were rejected by the people of India in the year l977.

What happened? Again, they played the same trick when the Morarji Desai Government was there. They instigated, they gave false hopes, they totally misled Chowdhary Charan Singh and then they pulled down that Government. Then what happened? Chowdhary Charan Singh had to face the same music on the first day when Parliament commenced.

Again, in the year l990 when the V.P. Singh Government was there, what happened? (Interruptions)

MR. SPEAKER: No, let there be order in the House.

SHRI VAIKO (SIVAKASI): Because they are afraid of my arguments there is a problem. They cannot face the argument. They are terrified.

When Shri V.P. Singh's Government was there again, what did they do? They misled them again, they instigated Shri Chandra Shekhar as Shri Sinha explained the terrible experience which he had to undergo. At the sight of two Policemen from Haryana State, they raised a hue and cry and that Government was toppled. They had to go.

About the Congress, Shri Lalu Prasad and Shri Mohan Singh also know. (Interruptions)) I have got respect for you, Shri Lalu Prasad.

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : कितनों को प्रधान मंत्री बना दिया।

... (व्यवधान)

SHRI VAIKO (SIVAKASI): Shri Lalu Prasad, do not play into the hands of the Congress! At least do not play into the tentacles of the octopus. You will be finished.
That has happened previously.
Why the Congress Party started the destablising game now? What is the reason? This Government, headed by Shri Atal Bihari Vajpayee, brought glory and credit to the country before the eyes of the world when Pokhran tests were conducted. It was demonstrated to the world that India is a nuclear weapon State. We have proved our

might and demolished the myth that the so-called powers of the world is having that they are the nuclear weapon State. So, that myth was demolished. On the one hand, proving our might and establishing this country as a nuclear weapon State in the world, he extended an olive branch to Pakistan for peaceful coexistence. The world has witnessed many defining moments and many defining occasions of history.
Sir, at Camp David when Mr. Anwar Saddat and Menachem Begin shook hands and entered into an agreement, the world was jubilant; when the Berlin Wall was demolished, the world was jubilant; and when the Palestinian side and the Israelis entered into an agreement in the lawns of the White House, the whole world congratulated it. Likewise when Madam Indira Gandhi entered into an agreement with Mr. Zulfikar Ali Bhutto --the Shimla Agreement -- the world cherished it and congratulated it. Likewise when the bus crossed the boundary and entered into the territory of Pakistan, the whole world congratulated Shri Atal Bihari Vajpayee. Here is a message for peace and here is a message for peaceful coexistence.
These people are raising hue and cry that this Government is against the Muslims and the Minorities and when that argument was demolished, they were terrified. The Government consolidated in every field. Therefore, they wanted to pull down the Government. Now, my friends are playing into their hands. The mandate was given for Shri Vajpayee.
We inherited a legacy particularly from the Congress. But all the ills in economic fields are the legacies inherited by this Government. The hon. Minister of Finance elaborated in detail as to how we have overcome the crisis which is reflected due to the global economic crisis and the East Asian economic crisis. Therefore, in every field when the Government is succeeding and consolidating, they decided to pull down the Government. Their attempt will end in fiasco and they will not succeed. When the voting takes place, what happened in the case of Bihar, the same thing is going to be witnessed by the House and the world.
All these years, during the last five decades, when the Congress Party was in rule, scandal after scandal and scam after scam took place. That was the experiment with the Congress Government. For example, right from Mundra Corruption to Securities Scam, Urea Scam, Sugar Scam and Bofors, a number of scams took place.
I am coming to Bofors. I have got respect for my comrades, my Marxists friends.
What have they stated on Bofors in 1987 when the debate on Bofors took place on 20th April? This is what Shri Somnath Chatterjee said on the floor of the House:
"Charge after charge of corruption and charge after charge of bribery is there. This Government is trying to place the cart before the horse. We are disclosing facts without involving the Parliament but they are trying to put everything under the carpet."
This was the speech of Shri Somnath Chatterjee. When Shri Indrajit Gupta, the leader of the Communist Party wanted to seek a clarification as to what was the total amount involved in the contract, again Shri Somnath Chatterjee interrupted and said: "What was the total percentage of bribery?". Again in the year 1988, that is, the next year, when the debate on Bofors took place on 15th November, Shri Somnath Chatterjee, when he was referring to an insinuation and criticism by the Congress friends against Shri V.P. Singh, said: "As if he was sharing bed with the Opposition". These are the words of Shri Somnath Chatterjee. He was referring to Shri V.P. Singh sharing bed with the Opposition. He said: "I hope he does not share bed with the Congress people. I repeat, I hope he does not share bed with the Congress people because then he will have AIDS". This was the statement made by Shri Somnath Chatterjee. Even in the year 1979, when Shri Jyotirmoy Bosu tried his level best to contact Shri Jyoti Basu when he was on vacation in Warsaw in Poland, we felt very sad when the Marxist Communist Party did not support the Government and they abstained themselves. Now the Congress Party is trying its best to destabilise democracy, to destroy the norms of democracy by Hand with the help of Hammer and Sickle. This is what is happening here.
We are seeing all these scams and corruption charges one after another. The money which has been looted in the name of the Bofors contract, has been deposited in five accounts in the Bank of Switzerland ...(Interruptions)
SHRI K.H. MUNIYAPPA (KOLAR): What is your participation in Sri Lanka?
MR. SPEAKER: Please do not interrupt. Please take your seat.
SHRI VAIKO (SIVAKASI): My participation is known to the whole world. It is transparent. It is not hidden... (Interruptions)
MR. SPEAKER: Hon. Member, please take your seat.
... (Interruptions)
MR. SPEAKER: Nothing will go on record except Shri Vaiko's speech.
(Interruptions) ... (Not recorded)

SHRI VAIKO (SIVAKASI): Sir, they have looted the country in the Bofors contract, they have lotted the country in the Security Scam, they have looted the country in the Sugar Scam, they have looted the country in the Urea Scam. Today, the Government is freed from the clutches of blackmailers. Today, the Government, headed by Shri Vajpayee, is liberated from the clutches of blackmailers and pressure groups. There was a ridiculous statement about Defence that this Government, particularly the Minister of Defence and the Minister of External Affairs have prevented the launching of Agni-II...(Interruptions). When that ridiculous statement was in the print media, already Agni-II had been launched and it had crossed the east coast.

AN HON. MEMBER: Now Agni-III will be launched in Delhi...(Interruptions)

SHRI PRITHVIRAJ D. CHAVAN (KARAD): Who made that statement?

SHRI VAIKO (SIVAKASI): You know better than anybody else. Those who are capable of making such ridiculous statements, have made it.

Mr. Speaker Sir, Shri Sharad Pawar, the Leader of Opposition spoke at length. Shri Sangma also spoke. There was not even a single charge of corruption against the Prime Minister of this country, against this Government.

SHRI PRITHVIRAJ D. CHAVAN (KARAD): What does Guruswamy say?

SHRI VAIKO (SIVAKASI): On Shri Mohan Guruswamy issue, their whole case was demolished on that day and they did not have the face on that day. ....(Interruptions) There was no case at all. All their arguments were totally destroyed.

Sir, our Prime Minister had put a very interesting question for argument sake : `what will be the post-Vajpayee Government scenario?' Is there any unanimity among them? The Revolutionary Socialist Party and the Forward Bloc have categorically stated that on any account, they will not support any formation headed by Congress. There are more than 18 people aspiring to become the Prime Minister of this country. For argument sake, if this Government falls, there is no option other than election.

What is the opinion of the people? The mandate of the people should be respected and honoured. The will of the people should be respected and honoured. Even the people who had not voted for the BJP and alliance, even the people who did not exercise their franchise in favour of BJP at the time of election in the year 1998, those people also want this Government to continue. That is the verdict of the opinion poll. In the morning our Home Minister read out the opinion poll of India Time. There was a question in the opinion poll: `will Sonia be a better Prime Minister than Vajpayee?' `Yes' was said by 19 per cent, `no' by 77 per cent and `cannot say' by 4 per cent. This is a magazine which is always critical of the BJP Government. This is the magazine, Outlook, which is not supporting the BJP Government. In this magazine, there is a report about the opinion poll. This is April 19, 1999 edition. The question was : `Should Vajpayee continue or resign?' This opinion poll was taken in six metropolitan cities including Chennai. Sir, Chennai has not voted for the BJP alliance. In all the three constituencies, we were defeated at the time of election. Even then, the opinion poll taken in six cities including Chennai says that Vajpayee Government should continue. 63.9 per cent people say that he should continue. 26.2 per cent people say that he should resign. That is the will of the people.

Sir, we are committed to democracy. We have never compromised even an inch on the question of corruption. Corruption is the cancer in public life. Corruption is the biggest evil in the public life and all these years .... (Interruptions) when the Congress was holding the reins of the Government, they were involved in scandal after scandal. But the whole year of 1998 was a scandal-free year for India, scam-free year for India. Therefore, those who have looted the coffers of the people, those who have looted through corrupt practices, it is their design and modus operandi to utilise the executive authority for their own personal agenda. What is the hidden agenda? There is no hidden agenda at all.

The Government is committed to implement the National Agenda for Governance.

There was a mention about the Sethu Samudram Canal Project. I would like to pose a question to my friends on that side. All these years, why did you not come forward to implement this project? You were in power for 45 years and there were so many Prime Ministers. It is only Shri Atal Bihari Vajpayee, when he visited Madras on the 15th of September to participate in the rally conducted by the MDMK on the Anna's Birthday, he had assured the people that the long pending Sethu Samudram Canal Project would be implemented by the Government. So, Sir, these people have no right to criticise about those things.

They talked about communalism. The country has not forgotten as to what role they have played. It is the Congress Party which played the communal card when the elections took place in Jammu and Kashmir for the first time. They played the Hindu card. We are committed to secularism. When we extended support and when we became a party in the alliance, we have categorically stated that secularism and the places of worship,

whether it is a Church or a Mosque or a Temple or a Gurudwara, should be honoured and respected. ... (Interruptions)
SHRI BASU DEB ACHARIA (BANKURA): They have demolished the Babri Masjid.
SHRI VAIKO (SIVAKASI): I will come to that point.
We are second to none. Whenever any attack on minorities takes place, it is deplorable and condemnable. These were the words used by Shri Atal Bihari Vajpayee. You kindly go through the speech of Shri Vajpayee, when he moved the No-Confidence Motion in the year 1992. He expressed his sadness and unhappiness. But what has happened? ... (Interruptions)
SHRI BASU DEB ACHARIA (BANKURA): In whose presence was it demolished?
SHRI VAIKO (SIVAKASI): What was the Congress Government doing? The Al-Aqsa Mosque at Jerusalem is being protected even today. Shri Acharia, please listen. In Jerusalem, even today, the Al-Aqsa Mosque is being protected. What was the Congress Government doing with 128 companies and what was the Army doing? What was the Congress Party doing? ... (Interruptions)
SHRI BASU DEB ACHARIA (BANKURA): Who have been charge-sheeted for the Babri Masjid demolition?
SHRI VAIKO (SIVAKASI): Who allowed it? It is the Congress Party which allowed the shilanyas to take place. It was Shri Rajiv Gandhi who allowed shilanyas to take place.
SHRI SHARAD PAWAR (BARAMATI): It was Shri Kalyan Singh.
SHRI VAIKO (SIVAKASI): It was your Government and it was the Congress Party, which was in power, which allowed a temple to be erected. So, you have no moral right to speak about all those things.
SHRI DATTA MEGHE (WARDHA): It was the BJP Government in Uttar Pradesh.
MR. SPEAKER: Let him complete.
SHRI VAIKO (SIVAKASI): Democracy should be protected and we are committed to democracy. Today, there is unanimity, cohesion, mutual and cordial understanding between the BJP and its allied parties. With one will, one heart and one determination, we are for the stability and prosperity of the country. The Government headed by Shri Vajpayee and the allied parties are committed for that. Could you say like that? Every party has a different agenda. Whatever happens, Sir, with all sincerity, I would again like to say that during these thirteen months till this minute, they have not been able to pinpoint a single accusation of corruption against this Government. This Government is for transparency and honesty.
Mr. Speaker, Sir, why have some people withdrawn their support? ... (Interruptions) It is because the Government could not compromise on the question of corruption, and that is the reason. ... (Interruptions)
MR. SPEAKER: Shri Vaiko, please conclude.
SHRI VAIKO (SIVAKASI): It is a question of corruption involving not one or two crores of rupees but thousands of crores of rupees. ... (Interruption)
MR. SPEAKER: Shri Janarthanan, please take your seat.
... (Interruptions)
MR. SPEAKER: Shri Muthiah, please take your seat.
... (Interruptions)
MR. SPEAKER: Nothing will go on record except Shri Vaiko's speech.
(Interruptions) ... (Not recorded)
SHRI VAIKO (SIVAKASI): Sir, I did not name any political party. ...(Interruptions)
MR. SPEAKER: Hon. Members, please take your seats.
... (Interruptions)
SHRI VAIKO (SIVAKASI): I did not name any political party but those who are guilty are jumping in their seats. ...(Interruptions)
MR. SPEAKER: Shri Vaiko, you have taken more than half an hour. Please conclude.
SHRI VAIKO (SIVAKASI): Sir, there are many paintings hung on the inner walls of Parliament House.
MR. SPEAKER: Shri Vaiko, please conclude.
SHRI VAIKO (SIVAKASI): I am going to conclude, Sir, but they are interrupting me. ...(Interruptions) I did not name any political party. But, if some people are guilty, they become panicky. ...(Interruptions) Sir, at least the Government is free from the biggest blackmailers now. ...(Interruptions) I did not mention the name of any political party. ...(Interruptions) I did not mention the name of AIADMK. ...(Interruptions) I did not mention the name of the General Secretary of AIADMK. ...(Interruptions) Why are they so nervous? Why are they becoming panicky? ...(Interruptions) Why do they have to become so panicky if they do not have any skeletons in their cupboard?

MR. SPEAKER: Shri Vaiko, you have taken nearly forty minutes. Please conclude now.

SHRI VAIKO (SIVAKASI): Sir, it is they who have looted the State of Tamil Nadu. It is they who have minted crores and crores of rupees using the executive authority when they were ruling the State.

SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): Sir, how can you allow him to go on saying things like that?

MR. SPEAKER: Shri Muthiah, please take your seat.

... (Interruptions)

SHRI VAIKO (SIVAKASI): I never justified the corruption of AIADMK in any political platform. ... (Interruptions)

MR. SPEAKER: nothing will go on record except Shri Vaiko's speech.

(Interruptions) ... (Not recorded)

SHRI VAIKO (SIVAKASI): Why do they become so panicky and nervous when I talk about corruption. What is happening now is that some people are building castles in the air. Those castles will be demolished when the voting takes place.

I support the motion moved by Shri Atal Bihari Vajpayee. It is going to meet with success and victory on the floor of this House.

(ends)

1649 hours

SHRI N.K. PREMCHANDRAN (QUILON): Mr. Speaker, Sir, I rise to oppose the Motion of Confidence in the Council of Ministers moved by the hon. Prime Minister Shri Atal Bihari Vajpayee.

This House is witnessing the second Confidence Motion. The first one was discussed after the inception of the Government and within 13 months, this House is discussing the second Confidence Motion.

1651 hours (Shri Raghuvansh Prasad Singh in the Chair)

The Home Minister and those who spoke for the Government have blamed the Opposition for pulling down the Government headed by Shri Atal Bihari Vajpayee. First of all, what is the reason for this Confidence Motion to come to this House? I would like to discuss on this point. It is not due to the blame or the activities of the Opposition. This Government has come to power only because of the letter of support given by AIADMK. His Excellency the President has invited Shri Atal Bihari Vajpayee to form the Government, as per the letter of support given by AIADMK supremo and she has withdrawn the support only yesterday.

So, my first submission is this Government has no moral, legal or constitutional right to continue in office. It is better for this Government to resign and not to seek the confidence of the House. It is due to the inner contradictions among the partners of the Government that Shri Buta Singh, Dr. Subramanian Swamy and now AIADMK and also the Indian National Lok Dal and all these parties have withdrawn their support and they have specifically and emphatically made it clear that this Government is lacking majority. How can the BJP blame the Opposition for having this confidence motion in the House? We are not discussing a no confidence motion. The Opposition has not moved a no confidence motion. As directed by His Excellency, the President of India, this Government was forced to move the confidence motion.

The partners of the BJP-led Government have withdrawn support not due to the fault or the activities of the Opposition. Now, BJP is very anxious about its next course of action. What is the next course of action when this Government falls?

The BJP Government has no moral right to continue in office. It is because it was only a fractured mandate that was given by the people when election to the 12th Lok Sabha took place. No clear majority has been given to any party. Being the single largest party, BJP has come to power with the support of some allies and AIADMK was the second biggest party having 18 MPs and now that party has withdrawn its support. AIADMK has to give the reasons for its withdrawal to the people of this country. Government also has to speak to the people of this country because the people of this country want to know the reason for the break up of this alliance.

I would like to say that this Government which is continuing in office over the last 13 months is also without majority. It is as of necessity that they have come to power. It is better for it not to seek confidence, but to resign from the office. It is a moral obligation on the part of the Prime Minister and also on the part of the Government.

The first confidence motion was also elaborately discussed in the House. What was the main slogan of BJP during the last election? Not only in the election, but subsequent to the election also, they have formed a national agenda for governance of the country. All the 13 parties have signed it and the first main slogan which was raised in the last election was a stable government. The second promise was an able Prime Minister and the third promise was good governance of the country. They have also put forth the national agenda for governance.

On page 3 of the National Agenda for Governance, it is stated as follows and I quote: -

"Our first commitment to the people is to give a stable, honest, transparent and efficient government capable of accomplishing all round development."

"For this, the Government shall introduce time-bound programmes on needed administrative reforms including those for the police and other civil services."

So, the commitment of these people was to form a stable, honest and transparent Government. When we analyse about the stability of this Government, for the last thirteen months, has the Government found any time to govern the country? During all these thirteen months, the inner contradictions had started between the partners within the Government. The Government is Governed by pressure groups.

What are the pressure groups? One is from Calcutta, that is of Kumari Mamata Banerjee; another from Chennai, the AIADMK; another from Patna, the Samata Party and another from Chandigarh, the Shiromani Akali Dal. So, it is being regulated and controlled by pressure groups. In order to satisfy the pressure groups, how many times have the hon. Minister of External Affairs, Shri Jaswant Singh, Shri Pramod Mahajan and as Shri P.A. Sangma has already stated, the Defence Minister have flown to Chennai, Calcutta and Patna? They have no time to govern the country, always trying to settle the issues and disputes between the partners. The coalition Government run by Shri Atal Bihari Vajpayee for all the thirteen months did not find any time to perform the governance of the country. This Government has spent most of the time in order to satisfy the pressure groups.

We have had allegations in this House itself when the Secretary (Revenue) and the Finance Secretary were transferred and the Enforcement Director was removed from office. What was the reason for this? For whose satisfaction have they been removed? The BJP Government has to spell out frankly the reasons in this House. It had also come up in this House that some cases which were pending in the Special Courts had been transferred. For whose satisfaction has that been done?

Some packages have also been announced. A Bengal package has been announced in order to satisfy Kumari Mamata Banerjee of the Trinmool Congress. The Bihar Government was also dismissed and this House discussed it elaborately. It took hours of discussion. For what reason was the Rabri Devi Government dismissed in Bihar? It was done in order to satisfy the Samata Party in Bihar. That was the sole reason for which that Government was dismissed. Now, the AIADMK is asking, `Why are you not dismissing the DMK Government? If you are able to dismiss the Government in Bihar, why are you not dismissing the DMK Government?' This is the question put by the AIADMK. The BJP has to answer it and it has to be answered by none else.

In order to grab power, in order to remain in power and in order to administer the country, they have surrendered all political and ethical values. Everything has been surrendered and now the Government itself is in difficulty

because of the inner contradictions among the allies and not because of the fault of the Opposition. The Opposition has not tried to destabilise this Government. How can this Government say that the Opposition is destabilising this Government? I am of the opinion that this Opposition is giving all sorts of support. Even the major Opposition party has voted in favour of certain Bills in order to overcome the difficulties which are faced by this Government. How can the BJP and the Government blame the Opposition that they are destabilising the country? How can Shri Vaiko say that the Opposition parties are trying to destabilise this Government? Maybe, in the earlier cases, it was all right but in the present case, it is solely due to the compromising politics and surrendering politics of this Government. There are no political, ethical or democratic values.

In order to remain in power, they have formed an unholy combination of 13 or 14 parties with outside and inside support. When a pressure group demands something, it is accommodated. After such accommodation for thirteen months, the Government has come to this position now. So, it is absolutely and solely due to their inefficiency in running the Government. They have absolutely failed in running a coalition Government. They cannot run the Government and it has been proved over these thirteen months.

I would like to say that above these pressure groups - the Samata Party, the AIADMK and the Trinmool Congress - from three sides, that is Patna, Chennai, and Calcutta, there is another major pressure group which is located at Nagpur. That is the Sangh Parivar comprising the RSS, the Bajrang Dal and the Vishwa Hindu Parishad. They are remote controlling this Government.

The crucial decisions are taken by the Nagpur Headquarters. That is an external power. This is what is called back seat driving. Shri Atal Bihari Vajpayee is an eminent person of this country. There is no dispute about it. But his hands are tied and he is put in a prison. Who is the watchman? The Vishwa Hindu Parishad is the watchman. They will decide the policies of the Government as to what should the Government do. That is being decided by the Nagpur Headquarters, that is the Headquarters of the Sangh Parivar.

Educational policy has already been highlighted here. A person who was deputed by Nagpur Headquarters attended the Educational Ministers' Conference. A person who was not known to Education Ministers, the eminent Secretaries of the Central and State Government Departments was present there. A person who was not known to the audience or to the official bureaucracy or to the representatives of the public was sitting in the Ministers' Conference. For what purpose? It was on the direction given by the Nagpur Headquarters.

This Government has no will power to take a decision. Though Shri Atal Bihari Vajpayee is an eminent personality of this country, his hands are tied and he is put in a prison. He is watched by so many persons. So, the ability of the Prime Minister is also questioned here. That was the second slogan of the BJP during the last election, stability being the first one. Stability has gone. This Government could not provide stable system to the country during the last thirteen months. What about the ability of the Prime Minister? We are not disputing the ability of the Prime Minister. But the decisions are being taken by somebody else. The decisions are taken or controlled by somebody else. So, the ability of this Government is also in question. So, this Government has failed on these two fronts also - ability and stability.

We opposed this Government from its inception itself. We are opposing this Government at the political level also. What is the main agenda of this Government? The main agenda of this Government is not solving the problems of the people. There is a National Agenda for Governance. What have they done out of this Agenda? I am not going to quote all the programmes that have been stated in the National Agenda for Governance. Nothing has been implemented. What they have done is the Pokhran Test and the Lahore bus journey. Except these two, what are the contributions of this BJP Government? What has been happening in the economic front? It has been already cited here.

Coming to the communal harmony, now they are claiming that there is no big riots in this country. That itself shows who is behind all these communal riots. In 1992 the Babri Masjid was demolished. Who were behind it? Though the Congress was in power, it was done under the leadership of the BJP. The present Home Minister was chargesheeted. The chargesheeted person is in power now. Now, they are saying that there is no big riots in the country. Is that an achievement of 13 month-old Government? Is it an achievement, Sir? What has been happening during the last thirteen months as far as the protection of the minorities is concerned? The Christians

and the missionaries are being brutally attacked. So many charitable institutions, Churches and other places of worship have been desecrated and minorities are brutally manhandled. Is it the policy of the Government? Is it the communal harmony? The Australian Missionary and his children were burned to death. India is very proud of its secular credentials. But what is the message going out to the world? The secular credentials of this country are damaged during these thirteen months.

What is the main plank of this Government? It is Hindutva. They are saying that they believe in Hindutva. What is Hindutva? We cannot understand. What is real Hindutva? It is the cultural tradition of our country. Nobody disputes that cultural tradition of India which is Sarva Dharma Sambhav. That is the hallmark of Hindutva. Vasudeva Kudumbakam which means the whole world is one family, that is the universal brotherhood, is the cultural tradition of India. Is this Government following the real principles of Hindutva? Let us examine as to what has happened during the last thirteen months. In so many places, like Madhya Pradesh, Orissa and in various parts of the country, minorities were brutally attacked. To a certain extent we can understand the attacks on minorities, because communal passion leads to some unhappy incidents taking place. But what were the statements made by the responsible persons? Especially, the All India General Secretary of the VHP and the Bajrang Dal leaders were openly making provocative statements against the minorities on the conversion issue. So, the message which has gone to the whole world during the last thirteen months of the BJP rule has adversely affected the interests of the country. The country's secular credentials are lost. So, this Government has to go on the political principle and political philosophy also.

Another issue that has been mentioned here is that of corruption. Is it a corruption-free Government? During the last 13 months of this Government, Shri Mohan Guruswamy, an official in PMO, has vehemently made a number of serious allegations against the Finance Minister. He is supposed to be a responsible person in the Prime Minister's Office. This House will have a discussion on this issue also. For the first time in the history of India a Chief of the Naval staff has been removed and nothing has been disclosed to the Parliament. No discussion has taken place on the dismissal of Admiral Vishnu Bhagwat so far. It was supposed to be taken up today. Who was the first person to react? One of the partners of the Government, the AIADMK, demanded a Joint Parliamentary Committee probe into the matter. What is the harm in having a Joint Parliamentary probe into this? In the case of Bofors gun deal, it was on the initiative of the BJP that a Joint Parliamentary probe was ordered. Why is this Government afraid of a Joint Parliamentary probe into the matter? It is very clear from the statements being made by the Government that definitely there is something that this Government is afraid of. I can cite a number of such things.

This Government has absolutely lost the moral right and the legal right to continue in the Office. This Government has disrespected the secular principles of this country. It is not a corruption-free Government. If the Government has any belief in the democratic norms and ethics, it should resign without even seeking the confidence of the House.

With regard to the second phase of operation, I would like to say that when Shri Atal Bihari Vajpayee became the Prime Minister for the first time and had to resign after 13 days, no future course of action was spelt out. Since that Government had lost the confidence, it had to resign. Various political parties are responsible to the people, to the country. We will sit together and discuss the future course of action on the basis of some agenda or programme and I have no doubt that something will come out of it. We are all responsible to the people. Our BJP friends should not worry about the second phase. It has now become very clear that the Government will not win the Confidence Motion. It has lost from all angles. I strongly oppose the Confidence Motion moved by the Prime Minister. I am sure, at 1100 a.m. on Saturday, second time this Government will lose the Confidence Motion and the Prime Minister will have to resign. With these words I oppose the Motion.

Thank you.

(ends)

1708 hrs.

सूचना और प्रसारण मंत्रालय में राज्य मंत्री और संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मुख्तार नक्वी): सभापति जी, इस सदन में पिछले दस सालों में विश्वास मत प्राप्त करने के लिये यह नौवां प्रस्ताव आया है। यह प्रस्ताव ऐसी परिस्थिति में आया है जब एक सहयोगी दल ने अपना समर्थन वापस लेने की घोषणा की है।

आज देश के जो हालात हैं, उन को लेकर इस सदन में सुबह से चर्चा हो रही है। इसमें खासकर सबसे ज्यादा चर्चा स्टेबल गवर्नमेंट और एबल प्राइम मिनिस्टर की हुई है। लोगों ने स्टेबल गवर्नमेंट और एबल प्राइम मिनिस्टर के प्रति अपनी अलग-अलग चिन्तायें जतायी हैं लेकिन सब ने कहा कि प्राइम मिनिस्टर की एबिलिटी के बारे में कोई शक, शुबहा या संदेह नहीं है। चूंकि प्राइम मिनिस्टर की एबिलिटी पर किसी तरह का कोई शक या शुबहा नहीं है, इसलिये सरकार की स्टेबिलिटी को किस तरह से डिस्टर्ब करें। वे प्राइम मिनिस्टर की एबिलिटी खत्म नहीं कर पाये।

लेकिन सरकार किस तरह से अस्थिर हो, किस तरह से परेशान हो, किस तरह से देश की जनता के सामने यह संदेश दिया जा सके कि यह सरकार अस्थिर है, यह काम करने की असफल कोशिश जरूर की जा रही है। यह बात सही है कि विपक्ष में कांग्रेस के लोग या अन्य पार्टियों के जो लोग हैं, वे अच्छी तरह से जानते हैं कि दो दिनों की जो बहस होगी, उसका नतीजा उनके पक्ष में नहीं होने वाला है। वे यह भी अच्छी तरह से जानते हैं कि दो दिनों की बहस के बाद उन्होंने जो ि वचार किया है, जो सोचा है, समझा है, जो साजिशें उन्होंने रची हैं, उसका जनता तो उन्हें मुंहतोड़ जवाब देगी ही, इस सदन में भी उन्हें किसी प्रकार की सफलता नहीं मिलेगी।

आज १३ महीनों से यह सरकार चल रही है और जिस समय सरकार बनी थी उसी वक्त सबसे ज्यादा परेशानी कांग्रेस के भाइयों को, समाजवादी पार्टी के लोगों को, आर.जे.डी. के लोगों को और उन लोगों को हुई थी जो कि पूरे देश के मुसलमानों को, पूरे देश के अल्पसंख्यकों को यह बता रहे थे कि यह सरकार बनने के बाद पूरे देश में खून-खराबा होगा, पूरे देश में लाशों के ढेर लगेंगे, पूरे देश में लोग परेशान होंगे और अल्पसंख्यक असुरक्षित होंगे। लेकिन उन्हें पिछले १२ महीनों के हमारी सरकार के काम को देखने के बाद पूरी तरह से निराशा हाथ लगी। उन्हें यह महसूस हुआ कि अल्पसंख्यकों में विश्वास बढ़ रहा है। उन्हें महसूस हुआ कि देश के अन्य लोगों में कमज़ोर तबकों में विश्वास कायम हो रहा है। उन्हें महसूस हुआ कि विश्व में भारत का नाम ऊंचा हो रहा है। उन्हें महसूस हुआ कि भारत एक ताकतवर और मज़बूत देश के रूप में पूरी दुनिया में जाना जाने लगा है और यह महसूस होने के बाद उनको परेशानी महसूस होना जायज़ था। इसके बाद जयललिता जी दिल्ली आईं और ४०-५० सूटकेस लेकर आईं। एक दिन तक सुना कि कोई उनके पास नहीं गया। सारे लोग सूटकेस के अंदर क्या है उसका इंतज़ार करते रहे लेकिन उसके बाद दूसरे दिन काफी लंबी लाइनें लगीं और वह लाइन लगने के बाद नतीजा आपके सामने है कि फिर तीन दिन पूरे देश में ऐसा माहौल पैदा करने की कोशिश की जा रही है, ऐसी परिस्थितियां पैदा करने की कोशिश की जा रही है कि यह महसूस किया जा सके कि यह सरकार अब चल नहीं सकती।

सभापति जी, आज देश के हालात पिछले दस सालों के हालात से बहुत ज्यादा बेहतर हैं। इस सदन में हम लोग नये हैं लेकिन बहुत से लोग ऐसे हैं जो बहुत सीनियर हैं। उन्होंने इससे पहले कई सदन देखे होंगे। वे अच्छी तरह से जानते होंगे कि इस देश में दंगों से लेकर, खून-खराबा से लेकर लोगों में जिस तरह से दहशत पैदा कर दी जाती थी, यह सदन हमेशा उस पर चिन्ता व्यक्त करता था। इस सदन में हमेशा इस बात को लेकर बहस हुआ करती थी कि अमुक स्थान पर सांप्रदायिक दंगों में इतने लोग मर गए, अमुक स्थान पर मुसलमानों के साथ ऐसा किया गया, दलित तबकों के साथ ऐसा किया गया। इस प्रकार का माहौल इस सदन में होता था। एक बार मात्र आरिफ़ मोहम्मद खान साहब ने बहस कराई वह भी उन्होंने क्रिश्चियन्स के मामले को लेकर, बिहार, उड़ीसा और मध्य प्रदेश के स वाल को लेकर उन्होंने बहस कराने की शुरूआत की थी। इसके अलावा कभी भी सदन में किसी ने यह बात नहीं कही कि हिन्दुस्तान के मुसलमान आज असुरक्षित हैं, आज उनके अंदर विश्वास नहीं है, आज वह अपने आपको हिन्दुस्तान की मुख्यधारा से अलग महसूस कर रहे हैं। यह बात किसी ने न कही और न ही किसी ने इस बात को सदन में उठाया। यह खुशी की बात है कि पिछले १३ महीनों में इस सदन में कृत्रिम सवाल उठते रहे। कभी भागवत का सवाल, कभी कोई और स वाल, कभी ऐसे सवाल कि जिनमें कुछ दम नहीं था। उन सवालों के गुब्बारे ज़रूर पूरे देश में छोड़े जाते रहे जिनकी हवा थोड़ी देर में फुस्स हो जाती थी।

लेकिन कोई ऐसा सवाल जिसकी प्रामाणिकता हो, जिससे लगे कि जो सवाल सही मायनों में उठाये जा रहे हैं, वे सही सवाल हैं, ऐसे सवाल इस सदन में आज तक नहीं उठाये गये। इसका अर्थ यह है कि जिन सवालात को लेकर हमने इस देश की सत्ता, इस देश की बागडोर को संभाला था, हमने उन सवालात को हल करने में कामयाबी हासिल की है। हमने लोगों में विश्वास कायम करने में कामयाबी हासिल की है। जिन सीमाओं पर गोलियां और बम चलते थे, जिन सीमाओं पर खून-खराबे होते थे, वहां आज बसें और ट्रेनें चल रही है, जिन सीमाओं पर लोगों को दहशत रहती थी, जिन सीमाओं पर लोग रह नहीं पाते थे, आज वहां प्यार और मौहब्बत के गीत गाये जा रहे हैं। यह कोई मामूली उपलब्धि नहीं है। यह उपलब्धि कांग्रेस से लेकर दूसरे सभी लोगो को घबराने और परेशान करने के लिए काफी है। कांग्रेस ने जैसा हमेशा किया है, कांग्रेस जिस रास्ते पर हमेशा चलती रही है, उसी तरह से उसने एक बार फिर से वही खेल खेलने की नाकाम कोशिश की है। मुझे इस बात की पूरी उम्मीद और विश्वास है कि जिन लोगों ने इनकी इस चाल में आने की हिम्मत की है, उन्हें बाद में निराशा ही हाथ लगेगी।

सभापति महोदय, मुल्क में हर स्तर पर, हर जगह लोगो में एक सवाल बहुत तेजी से गूंज रहा है। एक सवाल हर आदमी को परेशान किये हुए है। अभी एक साल पहले चुनाव हुए और चुनाव होने के बाद हम सभी लोग सदन में चुनकर आये। लेकिन इस सदन में किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं था। इससे पहले भी कई बार ऐसा होता रहा है कि किसी पार्टी का स्पष्ट बहुमत नहीं रहा है। सहयोगी दलों के साथ मिलकर इससे पहले भी सरकारें बनी हैं, इससे पहले भी विपक्षी दलों की और गैर कांग्रेसी सरकारें बनी हैं और आज भी यहां एक गैर कांग्रेसी सरकार है। इससे पहले भी गैर कांग्रेसी सरकारों को कांग्रेस ने जिस तरह से गिराने की खतरनाक साजिश रची है, यह सारा सदन जानता है और आज भी वही कांग्रेस इस गैर कांग्रेसी सरकार को गिराने की किस तरह से साजिश रच रही है, यह स्पष्ट रूप से सारे लोगों को दिखायी दे रहा है और निश्चित तौर से यह एक ऐसा सवाल है जो पूरे देश के लिए चिंता का विषय है। चाहे विश्वास मत हो या अविश्वास मत हो, आज यह प्रश्न नहीं रह गया है, आज यह भी प्रश्न नहीं रह गया है कि मुल्क की बागडोर किनके हाथों में है, आज यह सवाल रह गया है कि लोकतंत्र कायम रहेगा या नहीं, डेमोक्रेसी कायम रहेगी या नहीं। यदि डेमोक्रेसी कायम रहेगी तो किन लोगों के हाथों में कायम रहेगी। आज सेक्युलरिज्म का नाम लेकर, धर्मनिरपेक्षता का नाम लेकर जिस तरह से पूरे मुल्क में एक गुमराही का माहौल पैदा किया गया और तमाम ऐसे कृत्रिम सवाल उठाये गये, जिससे आज पूरे मुल्क को दीख रहा है कि ये सवाल गलत थे, जात-पांत के नाम पर, धर्म के नाम पर इस मुल्क में कभी भी कोई भी राजनीतिक पार्टी न तो सियासत कर सकी है और न सियासत करने में सफल हो सकती है। हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि इस देश में सेक्युलरिज्म कायम रहना चाहिए, इस देश में सेक्युलरिज्म को पूरी तरह से मजबूत रखना चाहिए। इस देश में कोई भी व्यक्ति हो, मैं मुसलमान हूं, मैं इस संसद का सदस्य हूं, मंत्री हूं, यहां तमाम तरह के लोग हैं जो अलग-अलग जाति, अलग-अलग धर्मों और अलग-अलग राजनीतिक पार्टियों से आते हैं और ऐसे लोग भी है जो विदेश में रहने वाले हैं, लेकिन वे इस देश की बड़ी-बड़ी पार्टियों के अध्यक्ष बने हुए हैं। ऐसा इस देश में है। लेकिन मुझे ताज्जुब होता है कि जो लोग विदेशी विचारधारा पर जी रहे हैं, वे आज स्वदेशी के बारे में चिंता

और विचार व्यक्त कर रहे हैं। आज इन हालात में, इन परिस्थितियों में यह देश पूरी तरह से भारतीय सभ्यता, भारतीय मान्यता और भारतीय विचारों के साथ मजबूती के साथ खड़ा हुआ है। जो लोग इसमें साजिश कर रहे हैं, उन्हें इस बात को महसूस करना चाहिए कि पिछले दस वर्षों में जितने चुनाव हुए और एक चुनाव में एक व्यक्ति पर जो खर्च आता है, वह ऐसा खर्च है जो हर आदमी को परेशान करता है।

सभापति महोदय, आज अभी शरद पवार जी कह रहे थे कि इस बार फसल भी बहुत बेहतर हुई है। यह खुशी की बात है। इसका सदन के सभी लोगों को स्वागत करना चाहिए। फसल बेहतर हुई है, तो यहां पर दो महीने के बाद आवश्यक वस्तुओं के दाम भी जमीन पर आ जाएंगे, चीजें सस्ती हो जाएंगी। मैं एक बात स्पष्ट रूप से कह सकता हूं कि पिछले १० महीनों में जमीनों के दाम बड़े-बड़े नगरों में जमीन पर आए हैं। इसका कारण यह है कि हमने चोरबाजारी, कालाबाजारी और जखीरेबाजी करने वालों के साथ सख्ती से निपटा है और ऐसे लोग जो उनके साथ मिलकर बेइमानी करते थे, उन पर अंकुश लगाया है। इस देश में ऐसे लोगों के साथ मिलकर पिछले ५० वर्षों में राज्य करने वाले ऐसे लोगों के ऊपर हमने अंकुश लगाने का काम किया है। निश्चितरूप से आज ऐसे लोगों को हमसे परेशानी हो रही है।

महोदय, आज पूरे मुल्क में जहां तक अल्पसंख्यकों का सवाल है, वे सुरक्षा महसूस कर रहे हैं। ऐसे लोग जो अल्पसंख्यकों के वोटों को लेकर चौराहे पर खरीद-फरोख्त करते थे, उनके वोटों को नीलाम करते थे, आज उनको चिन्ता हो गई है, क्योंकि हमने अल्पसंख्यकों को उनकी वास्तविकता बता दी और यह दिखा दिया है कि किस प्रकार से वे अल्पसंख्यकों को धोखे में रखकर उनको उनके रीयल इश्यूज से हटाकर आर्टीफीशियल इश्यूज में फंसाकर लाभ उठाते रहे। आज भारतीय जनता पार्टी ने दिखा दिया है कि अल्पसंख्यकों के असली इश्यूज रोजी-रोटी, शिक्षा है न कि मंदिर-मस्जिद का झगड़ा। आज १३ महीनों के पूरे काल में हमारी पार्टी के किसी मंत्री या किसी व्यक्ति पर कोई एक भी, किसी भी जगह, कहीं भी भ्रष्टाचार की एक छींट भी नहीं आई है जबकि इससे पहले वाली सरकारों पर हर एक-दो महीने बाद, एक के बाद एक आरोप लगते थे और घोटालों के केसेस खुलते थे। इस सरकार की खुली तस्वीर को पूरा देश जानता है और इससे पहले वाली सरकारों के दिन प्रति दिन खुलने वाले घोटाले भी लोगों के सामने हैं।

महोदय, आज पूरी दुनिया देख रही है कि यह सरकार, स्वच्छ, ईमानदार और रिश्वतखोरी से दूर तथा जनता के लिए कुछ काम करने वाली सरकार है और देश के अल्पसंख्यकों, समाज के कमजोर वर्ग, पिछड़े लोगों एवं कमजोर तबकों को उनके अधिकार दिलाना चाहती है। ऐसी सरकार को गिराने की साजिश करने वाले लोग कभी सफल नहीं हो सकते हैं। ऐसे लोग जो चाहते हैं कि इस देश में भाईचारा न हो, मोहब्बत न बढ़े, तरक्की न हो, उनके ऐसे मंसूबे पूरे नहीं होंगे। जो लोग इस देश में लाशों के ढेर पर खड़े होकर अपनी राजनीति करना चाहते हैं उनके मंसूबे कभी भी पूरे नहीं होंगे। जो लोग वोट की राजनीति करना चाहते हैं उनके मंसूबे किसी भी स्तर पर पूरे नहीं होंगे। ऐसे लोग जो अल्पसंख्यकों के सामने आर्टीफीशियल इश्यूज को खड़े करके उनको बहकाने का प्रयास कर रहे हैं, उनकी साजिश कभी पूरी नहीं होगी। आज तक उनको गलत इश्यूज बताकर ५० वर्ष तक इस देश में शासन किया गया और सैकुलर कहलाने वाले लोगों ने बताया कि इस देश में सैकुलरिज्म तभी रहेगा जब बाबरी मस्जिद रहेगी, जब सरस्वती वंदना का विरोध होगा तभी इस देश में सैकुलरिज्म रहेगा। इस प्रकार से अल्पसंख्यक लोगों को उनके ओरिजनल इश्यूज से दूर हटाने का काम इन लोगों ने किया। आज भारतीय जनता पार्टी ने बता दिया है कि अल्पसंख्यकों के असली इश्यूज मंदिर मस्जिद, सरस्वती वंदना नहीं हैं, ये तो आर्टीफीशियल इश्यूज हैं और असली इश्यूज उनकी रोजी-रोटी कमाने तथा शिक्षा ग्रहण करने के अधिकार हैं। अभी तक वे लोग गुमराह हो रहे थे और विगत वर्षों में इस देश में शासन करने वाले लोग उन्हें गुमराह करते रहे, लेकिन अब भारतीय जनता पार्टी ने बता दिया है कि वे गुमराह न हों। इसलिए उनको परेशानी हो रही है कि अब आर्टीफीशियल इश्यूज से उनकी दाल गलने वाली नहीं है।

महोदय, जहां तक काश्मीर का सवाल है मैं कहना चाहता हूं कि काश्मीर में पिछले कई सालों से गोलाबारी हो रही थी, काश्मीर में बम फट रहे थे, इबादतगाह फूंकी जा रही थीं। चरारे-शरीफ में आग लगा दी गई, रोजाना हमारे नौजवान जलाए जा रहे थे, हमारे लोगों को गोलियों से भूना जा रहा था, हमारी मां-बहनों को गोलियों से मारा जा रहा था, उनकी इज्जत लूटी जा रही थी, उनको जिन्दा जलाया जा रहा था, जगह-जगह आगजनी हो रही थी।

पिछले एक साल में कश्मीर में शांति और सुरक्षा का माहौल पैदा हुआ है। कश्मीर के चमन में फिर से फूल खिले हैं। कश्मीर के चमन में फिर से मोहब्बत का पैगाम लोगों के सामने आया है और कश्मीर में ऐसा माहौल पैदा हुआ है जिससे फख़्र के साथ कहा जा सकता है कि कश्मीर हिन्दुस्तान का हिस्सा है और कश्मीर के लोग भी हिन्दुस्तान के हैं। आज लोग ऐसा महसूस करने लगे हैं। आज कश्मीर में लोग आम सवालों को लेकर, आम मुद्दों को लेकर हड़ताल कर रहे हैं। वे यह अपनी रोजी रोटी के लिए कर रहे हैं न कि आतंकवाद के लिए। वहां पाकिस्तान का झंडा कहीं नहीं उठ रहा बल्कि वहां हिन्दुस्तान का झंडा लहरा रहा है। वहां हिन्दुस्तान के झंडे जलाए नहीं जा रहे हैं जबकि इससे पहले वहां हिन्दुस्तान के झंडे जलाए जा रहे थे और पाकिस्तान के झंडे लहराये जा रहे थे। हमने एक साल में हिन्दुस्तान के लोगों में, हिन्दुस्तान के हर हिस्से में, हर कोने के लोगों में यह विश्वास कायम करने में सफलता हासिल की है कि हम देश में हर वर्ग, हर कौम और हर व्यक्ति को बराबरी का अधिकार, बराबरी का हक देना चाहते हैं और बराबरी का एक अहसास दिलाना चाहते हैं।

इसके साथ ही कई ऐसे सवाल हैं जिन सवालों को लेकर आज देश में अलग-अलग तरह की बातें की जा रही हैं, अलग-अलग तरह के माहौल तैयार किये जा रहे हैं लेकिन मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि मुल्क के हालात किसी एक सियासी पार्टी के करने से बेहतर नहीं हो सकते। सियासी पार्टी अपनी मजबूत इच्छाशक्ति का प्रदर्शन कर सकती है, स्ट्रांग पोलिटिकल विल पावर का प्रदर्शन कर सकती है लेकिन उस स्ट्रांग पोलिटिकल विल पावर को मजबूती के साथ, ईमानदारी के साथ सारी की सारी राजनैतिक पार्टियों को राष्ट्र हित में आगे बढ़ाकर उसे पूरा करने की कोशिश करनी चाहिए। जब पोखरण टैस्ट हुआ तो वह किसी एक राजनैतिक पार्टी का टैस्ट नहीं था। जब गौरी मिसाइल का टैस्ट हुआ तो वहां किसी एक राजनैतिक पार्टी का टैस्ट नहीं हुआ। इससे पहले हिन्दुस्तान के मुसलमानों की तस्वीर कभी दाऊद इब्राहिम, कभी हाजी मस्तान की बनाकर दिखाई गई। हमने हिन्दुस्तान के मुसलमानों की तस्वीर एक महीने में अब्दुल कलाम जैसें साइंटिस्ट के रूप में दिखाई जिसने पोखरण टैस्ट किया। हमने उन लोगों के अंदर यह महसूस कराने की कोशिश की कि इस देश का हिन्दू जितना राष्ट्रवादी है, उतना ही मुसलमान भी राष्ट्रवादी है, उतना ही सिख भी राष्ट्रवादी है, उतना ही इसाई भी राष्ट्रवादी है। किसी की राष्ट्रवादिता पर कोई शक या शुबहा नहीं किया जा सकता। लेकिन जो लोग अपने को सेक्युलर कहते हैं, उन्होंने बार-बार यह दिखाने की कोशिश की कि हिन्दुस्तान के मुसलमान को अपनी राष्ट्रवादिता सिद्ध करनी होगी, हिन्दुस्तान के क्रिश्चियन्स को अपनी राष्ट्रवादिता सिद्ध करनी होगी, हिन्दुस्तान के सिखों को अपनी राष्ट्रवादिता सिद्ध करनी होगी - किस बात की राष्ट्रवादिता? क्यों आपने डराया, क्यों आपने धमकाया। सिर्फ इसलिए कि आप वोट के चौराहे पर खड़ा करके वोट की नीलामी और खरीद-फरोख्त कर सके लेकिन आज न वोट की नीलामी हो पायेगी और न वोट की खरीद-फरोख्त हो पायेगी। मैं इस सदन को विश्वास दिलाता हूं कि अभी चार साल का कार्यकाल पड़ा है और किसी तरह की कोई चिन्ता नहीं है।

अभी लालू जी कह रहे थे कि यह बड़ा साइंटिफिक है। हमारी उससे ज्यादा साइंटिफिक व्यवस्था है। साइंटिफिक व्यवस्था में किसी तरह की कोई परेशानी या गलतफहमी की आवश्यकता नहीं है। हम चार वर्षों में इस देश के लोगों में आत्मविश्वास पैदा करेंगे, इस देश को पूरी दुनिया के सामने तरक्कीयाफ्ता देश ही नहीं बल्कि डैवलप्ड कंट्री के रूप में पेश करेंगे। इस देश में एक ऐसा माहौल पैदा करेंगे जिस माहौल के चलते पूरी दुनिया के लोग यह महसूस कर सकें कि भारत ऐसा शक्तिशाली देश है जिस के सामने अगर कोई दोस्ती का हाथ बढ़ायेगा तो वह भी दोस्ती का हाथ बढ़ायेगा और अगर दुश्मनी का हाथ बढ़ायेगा तो उसका ज वाब उसे मिल सकता है। हम एक ऐसे देश के रूप में भारत को पेश करना चाहते हैं और एक ऐसे देश के रूप में पूरी दुनिया के सामने भारत की तस्वीर पेश करना चाहते हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में यह सरकार चल रही है। किसी ने भी आज तक उनके नेतृत्व पर अंगुली नहीं उठाई। हमारे किसी भी सहयोगी दल ने, किसी ने भी यह नहीं कहा कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में किसी भी प्रकार का शक है। यहां तक कि जयललिता जी, जिन्होंने समर्थन तथाकथित वापस ले लिया, उन्होंने भी आज तक नहीं कहा कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में कोई शक है। आज आपका कोई नेतृत्व तैयार नहीं है। आपका कौन नेता है, कोई नेता नहीं है, कोई नेतृत्व नहीं है लेकिन सरकार बनाने के लिए तैयारी चल रही है। पूरी तरह से न विदेशी न स्वदेशी कोई नेता आज किसी को मानने के लिए तैयार है। हम पूरी तरह से एक मत से, एक जुट से इस बात को मानते हैं कि पूरे देश के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी हैं, हमारे सहयोगी दलों और पार्टी के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी हैं इसमें कहीं पर किसी को कोई शक नहीं है।

कहीं पर किसी को कोई शक नहीं है। आज जिस नेतृत्व में कोई उंगली न उठाई जा रही हो, जिस व्यक्ति पर कोई उंगली न उठाई जा रही हो, उस व्यक्ति को हटाने की साजिश लगातार करना देश के साथ, समाज के साथ, सदन के साथ धोखा और विश्वासघात है, इस देश की करोड़ों जनता के साथ विश्वासघात है और ऐसा विश्वासघात निश्चित तौर से अगर आगे भी किया गया तो मैं यह स्पष्ट कहना चाहता हूं कि जनता ऐसे लोगों के साथ ऐसा विश्वासघात करेगी कि ये कभी इस सदन में विश्वास या अविश्वास प्रस्ताव लाने लायक नहीं रहेंगे। इसी के साथ मैं इस प्रस्ताव का पुरजोर समर्थन करता हूं और जिनके अंदर राष्ट्रवादी सोच है, जिनको देश के प्रति चिन्ता है, जो लोग इस बात को महसूस करते हैं कि इस देश की अस्मिता, एकता, राष्ट्रवाद, अखंडता अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में सुरक्षित है, उन्हें इस प्रस्ताव का समर्थन करना चाहिए। धन्यवाद, जय हिन्द।

(इति)

श्री प्रकाश विश्वनाथ परांजपे (ठाणे) : सभापति महोदय, बहुत बहस हो गई, अब वोटिंग करवा लीजिए।

... (व्यवधान)

सैकुलर, नान-सैकुलर, करप्शन, नान-करप्शन, इसके अलावा और कुछ क्या है।

... (व्यवधान)

इसके अलावा कोई मुद्दा ही नहीं है।

सभापति महोदय (श्री रघुवंश प्रसाद सिंह): आप आसन ग्रहण कीजिए।

श्री प्रकाश विश्वनाथ परांजपे (ठाणे) : साढ़े पांच घंटे हो गए हैं। डायरैक्ट वोटिंग ले लें। अभी हाउस में अटैंडैंस है, वोटिंग करवा लें। (व्यवधान) ...

सभापति महोदय : इनकी बात प्रोसीडिंग में नहीं जाएगी।

(व्यवधान)

... (कार्यवाही-वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।)

सभापति महोदय : आपका सुझाव अमान्य किया जाता है, कृपा करके आसन ग्रहण कीजिए।

1733 hours
SHRI S. SUDHAKAR REDDY (NALGONDA): Mr. Chairman, I rise, on behalf of the Communist Party of India, to oppose the Motion moved by the hon. Prime Minister today for confidence in his Government. The hon. Prime Minister moved another Motion of Confidence 13 months back in this House and at that time, we, from the Opposition, explained why the BJP Government cannot rule and what are our doubts and apprehensions. After 13 months, unfortunately all the apprehensions of the Opposition parties have become true.

Today, after 13 months of the misrule of the BJP Government, the people of this country are disenchanted. In 1998, a section of the people were having illusions about the BJP Government or, at least, in the able leadership of Shri Atal Bihari Vajpayee, as the Prime Minister of this country. After 13 months now, it is proved beyond any doubt that the BJP has only given an unstable, inefficient Government and a weak Prime Minister who could not deliver the goods which they promised before the elections and through the National Agenda.
We accuse the BJP Government of inefficiency and inability to control the prices. We accuse them of communalism. We believe that they do not have any right to continue in power morally and politically. They have lost majority in the Lok Sabha. In fact, the people in this country lost the confidence in them long back. And here in this House, today, only by discussing this Motion, we are formalising the loss of confidence of the nation in the BJP Government.
Thirteen months back, the BJP Government made several promises. Last month we heard that the BJP had gone round the country with one year's victory rule in this country. I heard that they gave three main points: they made an atom bomb; they settled the Cauvery dispute; and the bus diplomacy of Shri Atal Bihari Vajpayee in restoring good relations between India and Pakistan and now, of course, `Agni'.
I would like to ask whether the atom bomb has given more security to the nation or more danger to the nation. When there was a debate in this House on the question of having an atom bomb for India, this Government told us that it was for the security and for the defence of this country and against the onslaught of the foreign invasions and aggressions. But they provoked a neighbouring country, Pakistan, to manufacture atom bombs. They provoked them to manufacture missiles. Now, the threat to the security of the nation is more than what it was earlier. Today, the danger to this country is much more than it was before 1998. We are told that the atom bomb is the cheapest weapon which one can have. It is true that manufacturing an atom bomb may be cheap. But because of the atom bomb and its consequences in the last one year, Rs. 10,000 crore are spent extra for the defence of this country when 32 per cent of the population in this country is living below the poverty line. Thousands of villages do not have drinking water. Crores of acres of land do not have irrigation facilities. Millions of people do not have medical facilities. But the priority of the BJP Government is to satisfy their ego to manufacture an atom bomb.
Our hon. Minister, Shri L.K. Advani, was telling this morning that today everybody in the world is appreciating it. We heard only abuses and criticism from every quarter of this world asking why India has made an atom bomb. Everybody felt that it was not necessary for us to have an atom bomb today in this world of nuclear knowledge. It is not a very great achievement. We had this knowledge even earlier. We had kept the option open. But by manufacturing an atom bomb, today, we have brought the country to more serious threats from the security angle.
We accuse the BJP Government for its miserable failure in controlling the prices. The people of this country unequivocally gave their option that onions were more important than an atom bomb. There were elections in Madhya Pradesh, Delhi and Rajasthan. Out of these three States, two were ruled by the BJP Government. I would like to know who appreciated it outside the country or inside the country. Only the ego of the BJP is satisfied with it.
The prices of essential commodities, namely, foodgrains, edible oils, and vegetables have gone up and the life of the common people of this country has become miserable during the period of the BJP Government, and that was the result of defeat of the BJP which we have seen in some of the States. The BJP Government wants us to believe that in this one year, the inflation rate has come down. It is not true. The inflation not only increased, but the exchange rate of dollar and rupee has fallen. The real value of the rupee has fallen. This is the reality. On the economic front, on the agricultural sector, on the industrial sector, and on every other sector, the BJP Government has miserably failed. I would like to ask the Government what is the situation in the industrial sector. The Cement Corporation of India is closing factories after factories. In Andhra Pradesh, from the State where I come, Ramagundam Fertilizer Factory is closed just because the Government could not provide Rs. 30 crore. They have provided Rs. 40 crore to keep the factory intact. Now, the Government is promising another factory with Rs. 600 crore. The Indian Drugs and Pharmaceuticals Limited at Hyderabad is closed and the bulk drugs are being imported so that the fate of the IDPL is once for all closed.
Here in this Parliament, this Government had brought the Patents Bill. It also brought the Insurance Regulatory Authority Bill. In whose interest, they have been brought? By doing so, you are going to hand over the most important and vital financial sector to multinational corporations. This is to satisfy the masters in the United States of America, the imperialists, and the multinational corporations. Factories after factories, and industries

after industries in the public sector are being destroyed systematically. By means of privatisation, you are making millions of people unemployed. No new industry is coming up in this country.

As far as agricultural sector is concerned, in Andhra Pradesh, unfortunately, last year as also this year, there were more than 350 suicides by the farmers, particularly, the cotton farmers. The mills in Coimbatore and Ahmedabad are closed. The demand for cotton is reduced and a lot of cotton is being imported. There is no remunerative price for the peasants. The tall promises of the BJP Government, and the promises of the Prime Minister from the Red Fort on 15th August about Crop Insurance have not been implemented. It is a betrayal of the nation. It is most unfortunate that the agricultural sector in this country is getting destroyed. Millions of farmers are getting uprooted. They are going and working as labours in the towns. They are going for small work outside. They are leaving their lands. What is the priority of this Government? The priorities of this Government are bombs, missiles, and rockets, not drinking water, water for irrigation, crop insurance, and so on. This Government has miserably failed to control the attacks on minorities in this country. I accuse the BJP Government of unleashing terror, the psychological terror against the minorities in this country, particularly, by carrying on the Sangh Parivar's attacks on Christian minorities and missionaries. We have seen how a section of this Sangh Parivar even tried to describe the most inhuman rape in Madhya Pradesh on nuns as a backlash of Hinduism against the conversions. Can there be more shameful explanation than this? In Gujarat, in Orissa, we had seen how the Churches were bvurnt down, how the minority community were attacked. A Christian Missionary was burnt alive along with the children of six and eight years of age.

This is done in the name of defence of Hinduism. What is the danger that a six year old child going to create as a threat to Hinduism? When this inhuman thing has been criticised by everybody inside and outside the country, our hon. Prime Minister goes to Gujarat, goes round and gives a clean chit to the BJP Government there and says that we should go for a national debate. A national debate on what? On the cruelty, on the unleashing terror against the minorities or on the question of secularism, I would like to ask. No, the Prime Minister wants a national debate on the question of conversions. This is only to try to divert the attention of the nation, as if the conversions are the biggest danger for the country.

I challenge them. Let them come with the facts and figures, how these conversions which were a continuous process for the last several years have suddenly become a threat. The reason is not because of some foolish madman has done some attack somewhere on some minority individual, but the question is that the Sangha Parivar for the last several years systematically injected venom, poison against the minorities, of intolerance to other religions. That is the result of that and today they see that their Government has come and they can take vengeance against the minorities, against other religions. This is the most unfortunate situation.

I would like to say that thirteen months back, the promise which the BJP Government has given, of giving a stable Government, an able Prime Minister and a Government with a difference, a clean Government, it has failed in all these spheres. They failed miserably. Today, what we feel is that everyday continuance of this BJP Government in this country will go against the interest of the millions of people in this country. This Government should go.

I would like to refer to an important fact. Shri Vaiko was explaining that there was not a single accusation against the Vajpayee Government. I am saying that it is not me but Admiral Vishnu Bhagwat, who was the head of the Navy and was also the Chairman of the Joint Council of Chiefs of Staff of this country, who accused the Defence Minister that the continuance of him as a Defence Minister is a danger and threat to the security of this country.

It is a very serious allegation. Why this Government is not ready for a discussion on that issue? They say Defence affairs are very important, secret and very sacred. Yes, we do understand that. We are not discussing the strategy of the Indian Military. We are not discussing the capacities of the Indian Army. We are discussing about the scandals and the scams which have come on the Defence Minister of India.

During the World War, when Churchill was the Prime Minister of Great Britain, there was an accusation about a Defence scandal there and the British Parliament did discuss that. Churchill allowed it. They were not afraid of it. Why are they afraid of it here? We are saying that Defence deals and other things are not secret. They should be transparent. The scandals and the accusations against Shri George Fernandes, the Defence Minister, should be discussed here in the House. He cannot go free just because he is the Defence Minister and he cannot be above the law and above the discussion.

I would like to say that while in all the spheres the BJP Government failed, how is it that they can say that they would continue in power even after today's debate. Here, I would like to make an appeal. The BJP Government was again and again saying that there was a conspiracy from the Opposition. We were telling them for the last

thirteen months that if at all this BJP Government falls, it is because of the internal trouble from their own party. They are unable to make up relations among themselves. They are unable to keep their 19 political parties with them. It is because several individuals and the political parties one after the other started getting disenchanted with them, coming out and from them, because of this now today the danger to the BJP Government has come. So, who do you accuse that the Opposition parties are going in for some sort of a conspiracy? There is no necessity for the conspiracy. The BJP Government is falling today not because of the lack of number of Members of Parliament but because they ruled against the wishes of the people of this country. They lost the confidence of the people of this country. That is the reason why, the BJP Government is losing today.
I would like to appeal to some of the secular parties who still continue their support to the BJP Government inside the coalition to come out and save yourself from the sin. And even at least today it is not too late; let us all come out. The inevitable fall of the BJP Government will be celebrated by the people. There will be no tears in this country for the fall of the BJP Government.
Once again, I would like to say, on behalf of the CPI, that we oppose this Motion of Confidence.
Thank you.
(ends)

१७५२ बजे

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज): सभापति महोदय, आज सदन में प्रधान मंत्री जी द्वारा विश्वास मत हासिल करने हेतु प्रस्ताव मूव किया है, इससे देश की जनता के मन में बेचैनी फैली हुई है। देश की जनता यह जानना चाहती है कि आखिर इन तेरह महीने की अवधि में श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी की सरकार के नेतृत्व में जो केन्द्र में सरकार बनी है, उस सरकार ने ऐसा कौन सा कार्य किया है, जिसके चलते विपक्ष कोई-न-कोई बहाना बनाकर सरकार के ऊपर बार-बार हमला कर रहा है, ताकि इस सरकार को अपदस्थ किया जाए।

... (व्यवधान)

देश की जनता आज

TV

पर देश के सभी नेताओं के भाषणों को सुन रही है। हमने भी विपक्ष के नेता, श्री शरद पवार और लालू प्रसाद जी के भाषणों को सुना, लेकिन उन भाषणों में कहीं कोई ऐसी बात सामने नहीं आई, जिससे लगे कि सरकार के ऊपर आरोप लगाया गया है। देश की जनता के मन में जो बेचैनी है, उसका सदन के माध्यम से समाधान नहीं किया जा रहा है।

महोदय, हम बताना चाहते हैं कि यह विश्वास मत हासिल करने की नौबत जयललिता जी के द्वारा समर्थन वापिस लेने की वजह से आई है। मैं बड़े नेताओं पर कोई कमैंट नहीं करना चाहता हूं, लेकिन लगता है कि (व्यवधान) ... (कार्यवाही-वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।)

सभापति महोदय (श्री रघुवंश प्रसाद सिंह): यह बात प्रोसीडिंग्स में नहीं जाएगी। नियमसम्मत नहीं है।

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज): मैंने राष्ट्रपति जी पर कोई कमैंट नहीं किया है। सभापति महोदय : इसमें तर्क की कोई गुंजाइश नहीं है।

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज): सदन में वित्तीय बजट सामने हो और सरकार यह मानकर चलती हो कि हम बहुमत में हैं, तो बहुत से ऐसे मौके आते, जिसमें कि सरकार को अपना बहुमत साबित करने का अवसर भी मिलता, लेकिन इस प्रस्ताव में किसी दबाव में बहुमत साबित करने की बात है, मैं नहीं मानता हूं कि वह किसी ढंग से उचित है। आज विपक्ष के लोगों में बेचैनी है कि गठबन्धन दलों का केन्द्रीय सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय एजेंडा बना और उस राष्ट्रीय एजेंडे के माध्यम से सरकार ने एक नीति निर्धारण की।

गांव के गरीबों के उत्थान के लिए, सीमा की सुरक्षा के लिए नीति निर्धारण की। विदेश से मधुर संबंध बनाने के लिए नीति निर्धारण की और उस पर केन्द्र सरकार ने पहल करना भी शुरु कर दिया, जिसके कारण कांग्रेस के लोगों में सबसे ज्यादा बेचैनी बढ़ी। उसी बेचैनी का परिणाम हमारे गठबंधन की पूर्व की सहयोगी जयललिता जी का समर्थन वापसी भी है। समर्थन वापसी का जो कारण उनके दल के लीडर बोल रहे थे वह स्पष्ट रूप से नहीं बता रहे थे लेकिन हम यह बताना चाहते हैं कि भारतीय जनता पार्टी और गठबंधन की सरकार पर क्या आरोप है? यही आरोप है कि १३ महीनों के शासन में सबसे पहली और सबसे मजबूत उ पलब्धि, जो आजादी के बाद से कावेरी जल विवाद की समस्या इस देश में चल रही थी, कितने प्रधान मंत्री आए और गए लेकिन किसी ने इसके समाधान का

रास्ता नहीं ढूंढा। इस संबंध में उच्च न्यायालय ने भी समाधान का रास्ता नहीं निकाला। सर्वोच्च न्यायालय में भी वर्षों तक मामला लम्बित रहा लेकिन इसका कोई समाधान नहीं निकल पाया।

... (व्यवधान)

SHRI R. MUTHIAH (PERIYAKULAM): That is our observation but they have betrayed the people. (Interruptions)
SHRI MOHAN RAWALE (MUMBAI SOUTH-CENTRAL): But you must appreciate it. It is an achievement.
SHRI ANANT GANGARAM GEETE (RATNAGIRI): It is an achievement.
SHRI MOHAN RAWALE (MUMBAI SOUTH-CENTRAL): You had appreciated it.

... (व्यवधान)

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज): अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में केन्द्र में जो सरकार बनी उन्होंने इतने दिनों के विवाद को, अपने कुशल नेतृत्व का परिचय देते हुए समाधान करके देश की जनता को बता दिया कि हम में सरकार को चलाने की क्षमता है, विवाद को समाप्त करने की क्षमता है। हम यह जानना चाहते हैं कि क्या यही आरोप इस सरकार पर है? पोकरण में जो बम विस्फोट हुआ, उस समय भी विपक्ष के लोग बहुत हाय-तौबा मचा रहे थे, इसका क्या कारण था? यह विस्फोट पहली बार नहीं हुआ, इंदिरा जी के जमाने में भी हुआ था। प्रधानमंत्री जी ने अपनी इच्छाशक्ति का परिचय दिया और उन्होंने विश्व के बड़े-बड़े देशों को यह बताने का प्रयास किया कि हम किसी पर अंगुली नहीं उठाएंगे, लेकिन अगर किसी ने हमारे सीने पर हाथ लगाया तो हम चुप बैठने वाले नहीं हैं, हम उसका मुंह तोड़ जवाब देने का काम करेंगे। क्या यही आरोप सरकार पर है, प्रधानमंत्री जी पाकिस्तान बस पर चढ़ कर गए। उनके जाने से पहले लोगों के मन में तरह-तरह की शंका थी। लोग कह रहे थे कि यह केन्द्र सरकार का ड्रामा है लेकिन जिस ढंग से प्रधानमंत्री जी गए, जिस तरह पाकिस्तान में लोगों ने उनका स्वागत किया, जिस ढंग से आज हिन्दुस्तान के गावों के गरीब मुसलमानों के मन में एक विश्वास पैदा करने का काम अटल जी ने दिल्ली से पाकिस्तान में जाकर किया है, यह आजादी के बाद का एक उदाहरण है। उन्होंने देश के मुसलमानों के प्रति एक आत्मविश्वास जगाया है, पाकिस्तान के मुसलमानों के प्रति एक विश्वास पैदा किया है।

... (व्यवधान)

इस देश के मुसलमानों ने इस यात्रा का स्वागत किया है और पाकिस्तान के मुसलमानों ने भी स्वागत किया है, लेकिन जो पाकिस्तान के आतंकवादी और उन लोगों के एजेंट हैं, उनको इस देश में अच्छा नहीं लगता है।

सभापति महोदय (श्री रघुवंश प्रसाद सिंह) : अब आप कल बोलिए। अब सदन की कार्यवाही कल १६ अप्रैल ११ बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

६.०० म.प.

तत्पश्चात लोक सभा शुक्रवार १६ अप्रैल, १९९९/२६ चैत्र,१९२१(शक)

के ११.०० म.पू. तक के लिए स्थगित हुई।